

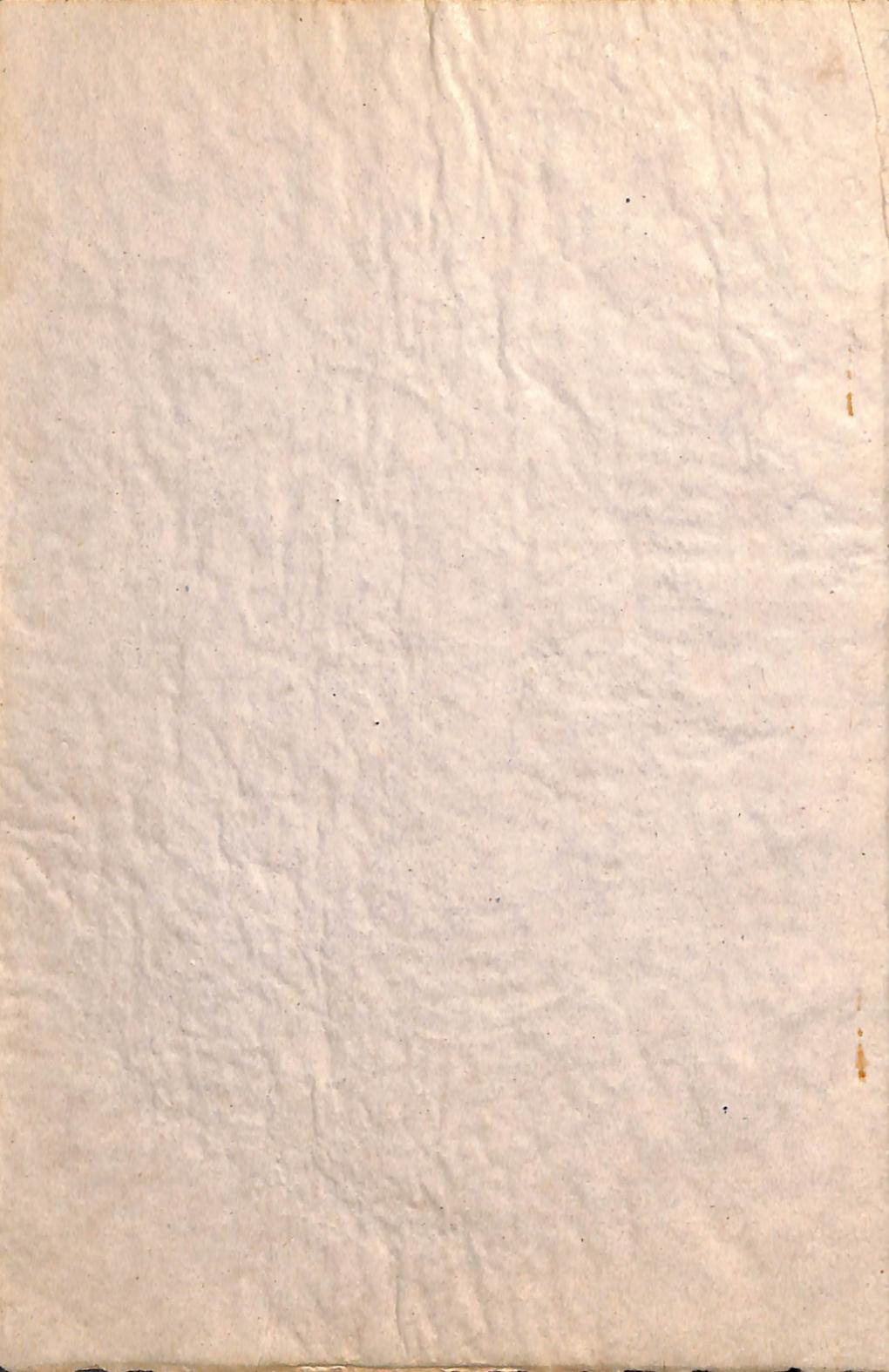
General Stores & Books
GUJRA MUNDI

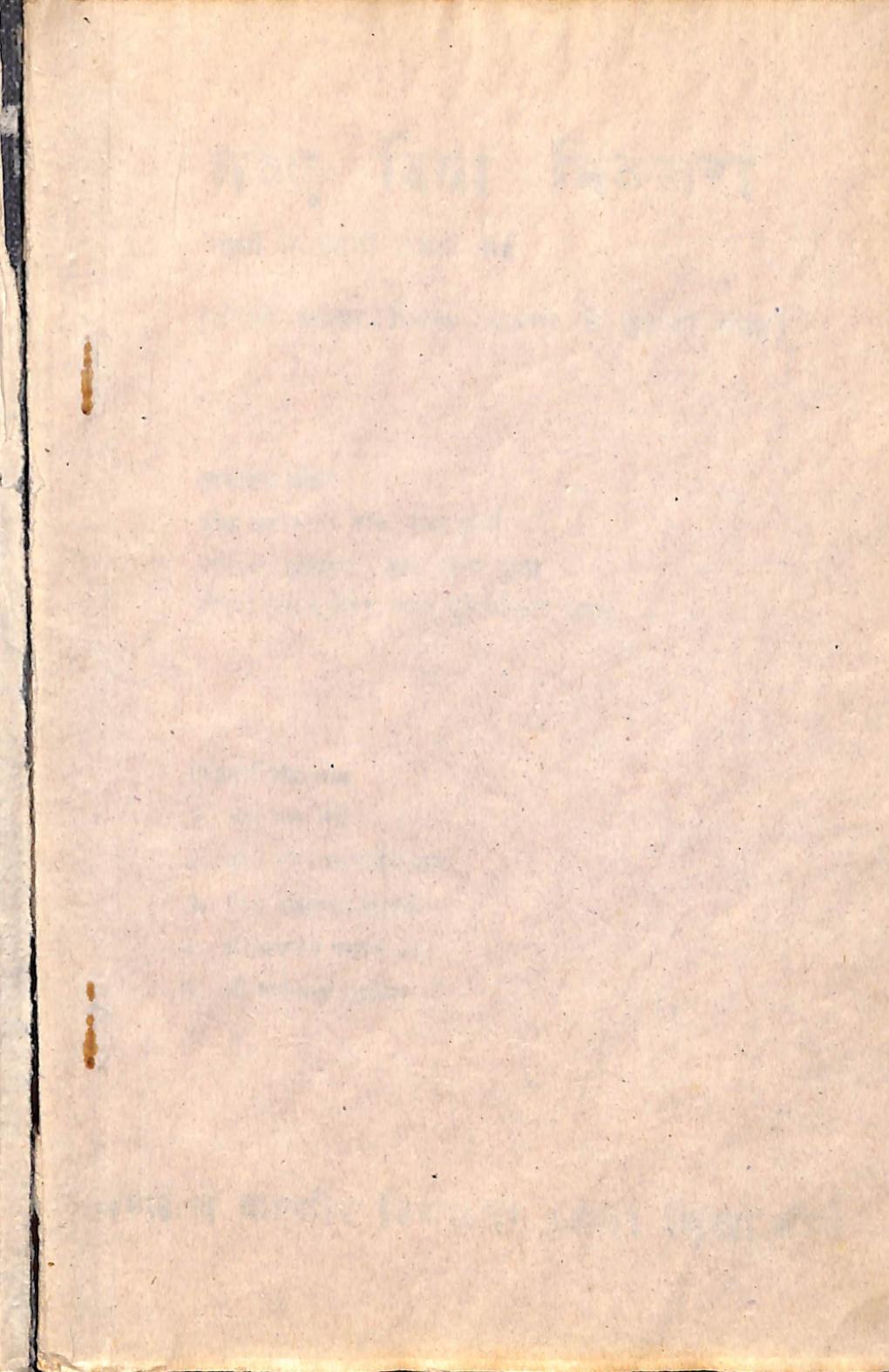
मरहए दियां मिञ्जरां

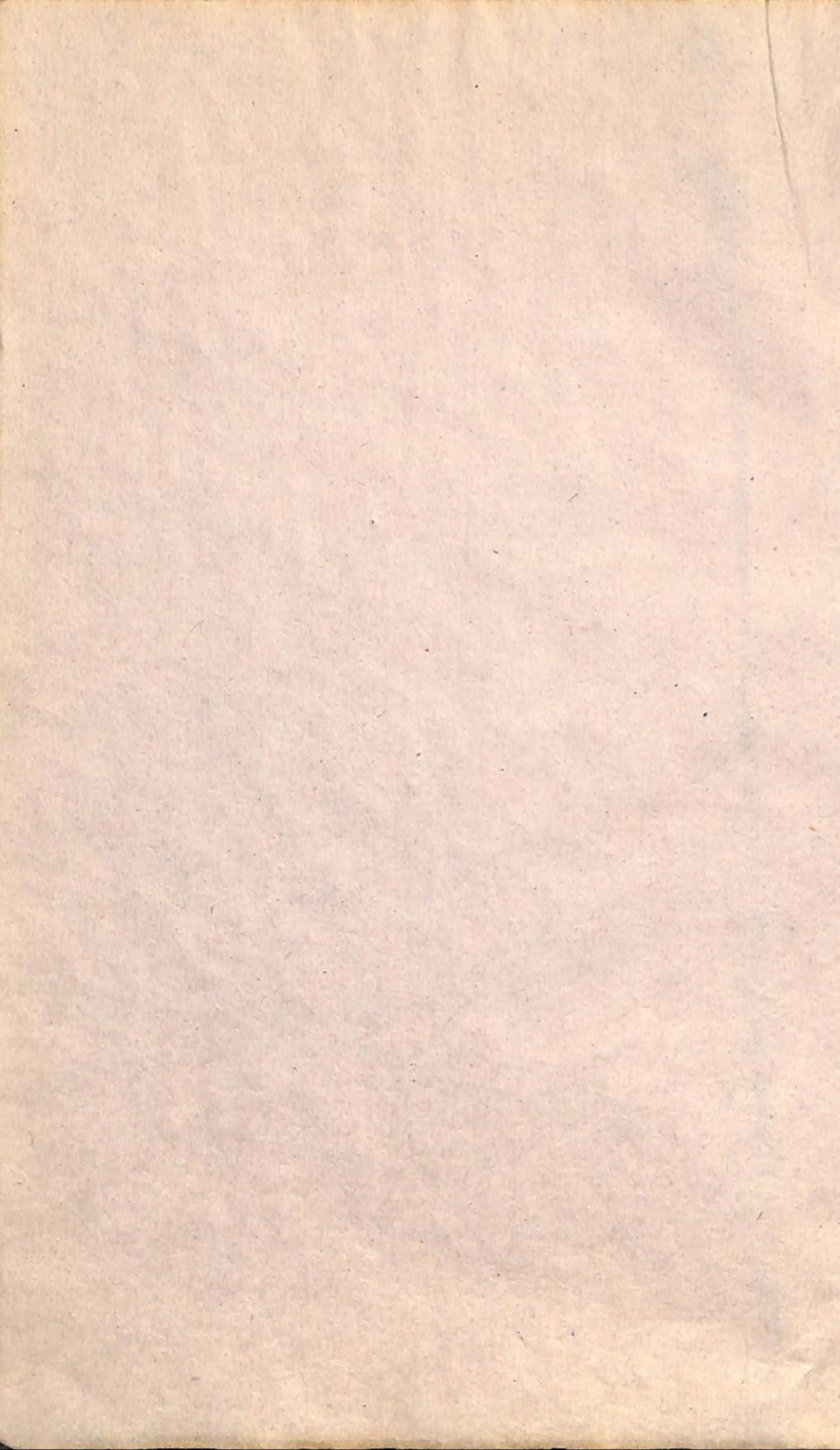
नोमी ते दसमीं जमातें लेर्द

General Stores & Books
GUJRA MUNDI

जम्मू ते कश्मीर रियासती स्कूली शिक्षा बोर्ड







मरुए दियां मिञ्जरां

नौमी ते दसमीं जमातें लई

(डोगरी-कवता-निबन्ध-कहानी ते एकांकी संग्रह)

सम्पादक मंडल

चीफ अडीटर :- डॉ० चम्पा शर्मा

असिस्टेंट अडीटर :- डॉ० वीणा गुप्ता

डोगरी रिसर्च सेंटर, जम्मू युनिवर्सिटी, जम्मू

ऐडिटोरियल बोर्ड

1. डॉ० वेद घई
2. प्रो० नोलाम्बर देव शर्मा
3. प्रो० रामनाथ शास्त्री
4. श्री बलदेव प्रसाद शर्मा
5. श्री धर्मचन्द्र प्रशान्त

मूँ ते कश्मीर रियासती स्कूली शिक्षा बोर्ड

नगरान

चेतन

जम्मू ते कश्मीर रियास्ती

स्कूली शिक्षा बोर्ड ।

पहला प्रकाशन सितम्बर 1985

2nd Edition 1989

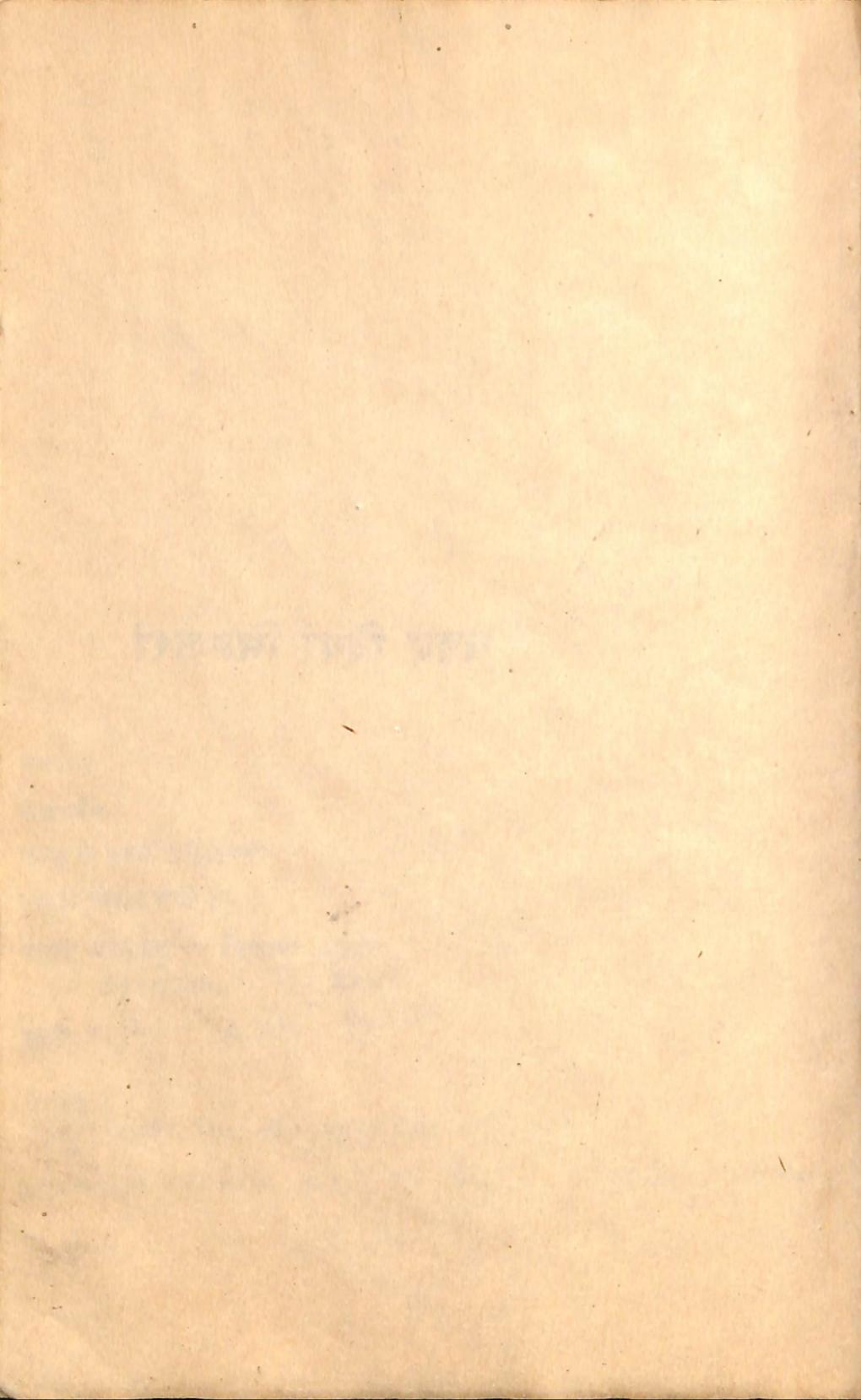
मुल्य 4.50 - 6,000

प्रकाशक

जम्मू ते कश्मीर रियास्ती दा स्कूली शिक्षा बोर्ड, जम्मू

Printed at "ESS ESS ESS OFFSET PRESS," Jammu.

मरहए दियां मिज्जरां



विद्यो-सूची

कवता भाग 'क'

| कवि | कविता | संखा |
|--------------------------|---|------|
| 1. पं० गंगा राम | कंडिया दा वस्सना | 5 |
| 2. रघुनाथ सिंह सम्याल | डुगर ते डोगरी | 7 |
| 3. पं० हरदत्त शर्मा | दालती दा धंदा | 9 |
| 4. किशन स्मैलपुरी | सुरग देस | 11 |
| 5. परमानन्द अलमस्त | परदेस | 13 |
| 6. पं० शम्भुनाथ शर्मा | आजू ऐ थोहँडी ते कम्म बत्हेरे | 15 |
| 7. रामलाल शर्मा | पहाड़े ते नदिएं दा देस | 17 |
| 8. रामनाथ शास्त्री | सन्नासर | 19 |
| 9. दीनू भाई "पन्त" | मेरे देसै दा शलैपा मेरी अक्खीं कन्ने दिक्ख | 22 |
| 10. यश शर्मा | संभ सबेरे इक्को चाह, | 24 |
| 11. केहरि सिंह मधुकर | प्रीत | 27 |
| 12. वेदपाल दीप | नमीं अजादिये | 29 |
| 13. सागर पालमपुरी | रुत फुल्लां री आई | 31 |
| 14. नर्सिंह देव जमवाल | भरम | 33 |
| 15. पद्मा सचदेव | मेरा मन्दा कियां बुझ्खो | 35 |
| 16. दुनी चन्द्र त्रिपाठी | बदली | 37 |
| 17. चर्ण सिंह | लामा-फेरे | 39 |

गद्य भाग 'ख'

[थ] निवन्ध

1. विश्वनाथ खजूरिया

गरसाल कोठी [बड़भाई]

43

| | | |
|--------------------|--|----|
| 2. डॉ० विजयपुरी | साढ़ा शरीर इक अजैबघर | 48 |
| 3. डॉ० बीणा गुप्ता | समाचार पत्र | 58 |
| | [एह भारती भाग ॥ थमा साभार लैते दे लेख समाचार पत्र दा डोगरी रूपान्तर ऐ] | |

[प] तंस्मरण

| | | |
|-----------------|-----------------|----|
| डॉ० चम्मा शर्मा | मैं तूं मैं तूं | 82 |
|-----------------|-----------------|----|

[स] बहानी

| | | |
|---------------------|----------------------|----|
| 1. बी० पी० साठे | मंगते दा घराट | 87 |
| 2. नरेन्द्र खजूरिया | की फुल्ल बनी गे डारे | 67 |

[र] एकाकी

| | | |
|--------------------|---------------|----|
| 1. जितेन्द्र शर्मा | अन्तिम इच्छेआ | 77 |
| 2. ओम गोस्वामी | घर घर | 84 |

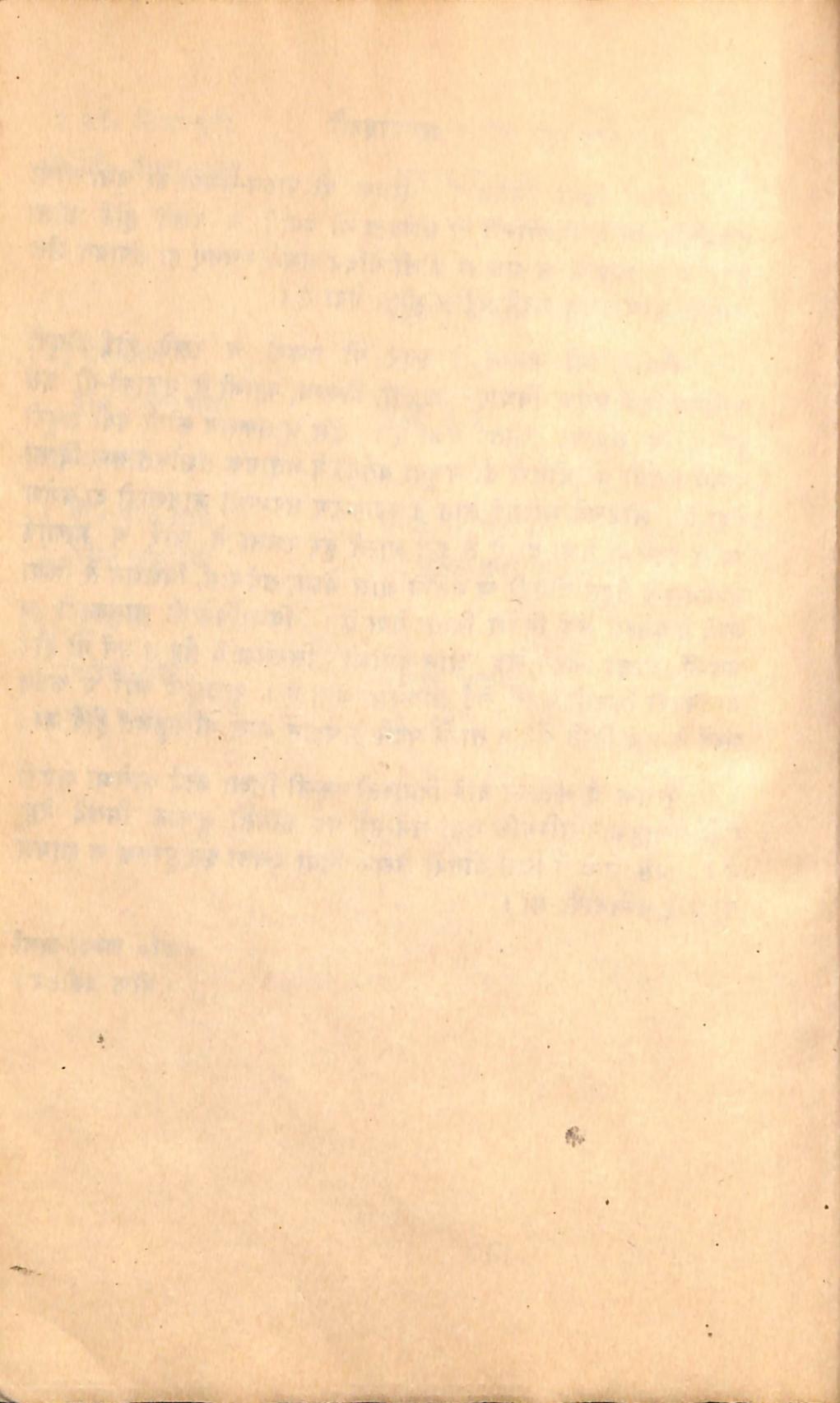
सम्पादकी

“महए दियां मित्रजरां” पुस्तक दी पाठ्य-समझी दा चुनां नीमी
दसमीं जमातें दे विद्यार्थियें दी योग्यता गी ध्यानै च रखदे होई कीता
गेदा ऐ। एह-दे च शामल कीती गेदियें सभनें रचनएं दा संपादन शील
चाल्लीं जांच-परख करने परन्त कीता गेदा ऐ।

नीमी-दसमीं जमातें दे स्तर गी नजरी च रखदे होई डोगरी
साहित्य दियें प्रयुक्त विधाएं—कवता, निबन्ध, कहानी ते एकांकी-गी इस
पुस्तक च संकलन कीता गेआ ऐ। इस च संकलन कीती गेदी सबूरी
पाठ्य-समझी गी डोगरी दी मजूदा वर्तनी दे भताबक संशोधत रूप दित्ता
गेदा ऐ। लोड़चदे भाशाई ज्ञान ते व्याकरण सरबन्धी जानकारी दा बशेश
ध्यान रखवेआ गेआ दा ऐ ते इस आस्तै हर रचना दे खीरै च भाशाई
अध्ययन दे तैहत-डोगरी च बर्तने आले संज्ञा, सर्वनाम, विशेषन ते किया
शब्दें दे भ्यास लेई निर्देश दित्ता गेदा ऐ। विद्यार्थियें दी जानकारी च
चतर्फी बाढ़ा करने लेई “ज्ञान-वधाओ” सिरलेख दे तैहत उनें गी होर
जानकारी किट्ठी करने लेई आक्षेआ गेदा ऐ। पुस्तक दे खीरै च कठन
शब्दें दे अर्थ दित्ते गेदे न तां जे पढ़ने ते पढ़ाने आले गी सहूलत होई जा।

पुस्तक दे संकलन बारै रियास्ती स्कूली शिक्षा बोर्ड आसेआ खडेरी
गेदी सलाहकार-सम्मिति थमां समें-समें पर कीमती सुभाव मिलदे रेह-
न। अस उन्दे ते जिनें डोगरी लेखके दियां रचना इस पुस्तक च शामल
न, उन्दे धन्नवादी आं।

- डॉ० चम्पा शमा
(चीफ अडीटर)



पं० गंगा राम

पं० गंगा राम हुन्दा जन्म तसील साम्बा दे गडवाल नां दे ग्रां च सन् 17⁰⁰ च होआ ते 1858च एह परलोक सधारी गे । गंगा राम होर संस्कृत दे विद्वान हे । एह कांगड़े दे राजदरबार च ते जम्मू दे महाराजा रणवीर सिंह हुन्दे दरबार च रेह । डोगरी च इन्दी इकके कवता “कंठिया दा वस्सना” मिलदी ऐ ।

कंठिया दा वस्सना

वाजरे दी राखी करी, डंगर डराई करी,
चिड़ियां उड़ाई करी, कियां कियां कत्तना ?
क्रोह, जाई पानी भरी, पत्थरे च पैर भन्नी,
ढकिया दा दुख भैने, कुसी जाई दस्सना ?
वच्छुएं वछरेटे गी, पानी पलेयाना रोज़,
अझी रातीं उट्ठी करी, चंकिया गी घस्सना ।
इकके गल्ल सच्चै दी, सै लाडिया गलाई दित्ती,
सबने थों कच्चा लोको, कंठिया दा वस्सना ।

प्रश्न-अभ्यास

1. कंठी कुस अलाके गी आखदे न ?
2. कंठी दे बसनीके दे कम्मकाज वारे पंज पंगतियां लिखो ।
3. इस कवता च कवि केह, आखना चाहन्दा ऐ ?

भाषा-अध्ययन

[क] खल्ल लिखे दे शब्दे दे अर्थ लिखो :—

डंगर, क्रोह, ढकिया, वछरेटे, घस्सना, गलाना, कच्चा, वस्सनां, राखी-
करना ।

[८] इन्दे च फर्क दस्तो ते वाक्ये च प्रयोग करो।

| | | | |
|--------|-------|-------|-------|
| बाजरा | जी | लाड़ी | कुड़ी |
| चिड़ी | कोयल | कच्चा | चंगा |
| कत्तना | पिजना | बच्छू | कट्टू |
| ठक्की | शिड़क | | |

मान-बहुआओ

1. कंडी (अ) लाके दे फल-मेवे दी फैहरिस्त बनाओ।
2. कंडी दा पंहला रूप कंसा हा ते हून कनेहा ए। इस बारे अपने अध्यापक कक्षा होर जानकारी हासल करो।

रघुनाथ सिंह सम्याल

ठा० रघुनाथ सिंह सम्याल हन्दा जन्म सन् १६४५ च कैहली भंडी, साम्बा च होआ। इन्दा इक कवता संग्रह, कवतां-रतन नां कल्ने मिलदा ए। इने “श्री-मद्भगवद गीता” दा डोगरी च पद्य-अनुवाद वी कीता दा ए। इन्दा बड़ा मशहूर ते भाव भरोचा गीत ए “डोगरा देस जगाई जायां”। एह बड़े खड़के आले व्यक्ति हे। १९६३ च इन्दा काल होई गेआ।

डुगर ते डोगरी

जम्मू, चम्बा, शिमला, भंडी, कुल्लू, कोट, कसोली,
मिट्टी-मिट्टी भती प्यारी इस डुगर दी बोली।
जिन्न बनाए षेर डोगरे, जिन्न बनाए वीर,
जिन्न मारियां तेगां-भाले, जिन्न चलाए तीर।
जिन्न लंगाइयां डूंगियां नदियां, जिन्न टपाए पीर,
जिन्न बजाए लहौर दमामे, जिन्न लेया कश्मीर।
ओ डुगर दी रानी भाशा, नेई कुसं दी गोल्ली,
मिट्टी-मिट्टी भती प्यारी, इस डुगर दी बोली।
जिसदी खातर लड़े सूरमें, गुगा कालीवीर,
वाजसिंह जरनैल हुश्यारा, जोरावर बजीर।
प्रेमपाल, राजिदर ऐमे सूरवीर रणधीर,
पिछ्छे पैर नि रख्वे, भाएं अग्मे गे शरीर।
हीरें-पन्ने कान भरी दी, कड्ढी सब करोली,
मिट्टी-मिट्टी भती प्यारी, इस डुगर दी बोली।
छूत-छात दा नां नि जित्थे, बन्ना बाड़ लकीर,
जिसदी गोदा सारे खेडन, पीन थने दा सीर।
हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, इसाई, गद्दी गुज्जर कोली।
मिट्टी-मिट्टी भती प्यारी इस डुगर दी बोली।

ਕੌਮੇਂ ਦਾ ਬਲ ਪੈਰਖ ਬੋਲੀ, ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਵਿਚ ਜਾਨ,
ਬੋਲੀ ਦੇ ਵਿਚ ਮਾਨ ਬੜਾਈ, ਬੋਲੀ ਦੇ ਵਿਚ ਸ਼ਾਨ,
ਬੋਲੀ ਗੇਈ ਤਾਂ ਮਿਟੇਧਾ ਭਲੇਧਾਂ, ਸ਼ਹਾਡਾ ਨਾਮ ਨਸ਼ਾਨ।
ਮਨ੍ਨੇ ਜਾਂ ਨੇਈ ਮਨ੍ਨੇ ਆਵੋ, ਗਲ ਸੁਨਾਨਾਂ ਖੋਲਹੀ।
ਮਿਟ੍ਟੀ-ਮਿਟ੍ਟੀ ਮਤੀ ਪਾਰੀ ਇਸ ਝੁਗਰ ਵੀ ਬੋਲੀ।

ਪ੍ਰਵਾਨ-ਅਧਿਆਸ

1. ਇਸ ਕਵਤਾ ਦੇ ਆਧਾਰ ਪਰ ਬੋਲੀ ਦੀ ਮੈਂਹਮਾ ਵਾਰੇ ਕਵਿ ਦੇ ਬਚਾਰ ਲਿਖੋ।
2. ਬੋਲੀ ਬੜਾ ਖਾਜਾਨਾ ਭਾਇਓ ਲਾਲ ਰਤਨ ਦੀ ਖਾਨ, ਕੌਮੇਂ ਦਾ ਬਲ ਪੈਰਖ, ਬੋਲੀ, ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਵਿਚ ਜਾਨ, ਇਨ੍ਹਾਂ ਪਾਂਤਿਥੇਂ ਦੀ ਗਲ ਕਰਦੇ-ਕਰਦੇ ਸਮਾਲ ਹੋਰੇ ਕੇਹੜੇ-ਕੇਹੜੇ ਬਹਾਦਰ ਸੂਰਮੇਂ ਦੇ ਨਾਏਂ ਦਾ ਜਿਕਰ ਕੀਤਾ ਦਾ ਏ?

ਆਕਾਸ਼-ਅਧਿਧਨ

[ਕ] ਇਨ੍ਹੋਂ ਸ਼ਬਦਾਂ ਦੇ ਅਰ्थ ਲਿਖੋ :—

ਤੇਗਾਂ-ਭਾਲੇ, ਵਸਾਮੇਂ, ਗੋਲੀ, ਸੂਰਵੀਰ, ਰਣਵੀਰ, ਥਰੀਰ, ਰਕ-ਫਕੀਰ, ਥਨੋਂ ਦਾ ਸੀਰ, ਖਾਜਾਨਾ, ਬੜਾਈ, ਨਾਮ-ਨਸ਼ਾਨ, ਖਾਨ, ਮਿਟਨਾ।

[ਖ] ਖਾਲੀ ਸਥਾਨ ਭਰੋ :—

ਜਿਨ ਬਜਾਏ ਲਹੌਰ.....ਜਿਨ ਲੇਖਾ ਕਸਮੀਰ।
ਜਿਸਦੀ ਗੋਦਾ ਸਾਰੇ.....ਪੀਨ ਥਨੋਂ ਦਾ ਸੀਰ।
ਬੋਲੀ ਬੜਾ.....ਭਾਇਧੀ.....ਰਤਨ ਦੀ ਖਾਨ।
ਬੋਲੀ ਦੇ ਵਿਚ.....ਬੋਲੀ ਦੇ ਵਿਚ.....।

ਖਾਨ-ਕਥਾਇਆਂ

ਅਪਨੇ ਅਧਿਆਪਕ ਛੁੱਦੇ ਕੋਲਾ ਝੁਗਰ ਚ ਬੋਲੀ ਜਾਨੇ ਆਲਿਧੇ ਝੂਝਾਏ ਬੋਲਿਧੇ ਵੇ
ਨਾਂ ਪੁੱਛਦੀ ਤੇ ਉਨ੍ਹਿਧਾਂ ਕਵਤਾਂ ਬੀ ਪਢੋ।

पं. हरदत्त शर्मा

पं० हरदत्त शर्मा हुन्दा जन्म मन् 1890 च पलीहङ्गा नां देशां च होआ ते
मन् 1956 च वम्बई च इन्दा काल होई गेआ। हरदत्त होर संस्कृत दे अध्यापक हे।
भजनें दियां इनें जेहँ डियां दो कतावां लिखी दियां न ओ न “डोगरी भजन माला”
(भाग 1 ते 2)। एह, कथावाचक हे ते कथा ते भजनें दे राहें समाज-सुधार दी गल्ल
बी आखली लंदे हे। उन्दियां मशहूर कवतां न—डोगरा देस, फैशन, वेकारी ते दालती
दा धंदा।

दालती दा धंदा

दालती च पुज्जा गै तां आइयै चमकी गे मिकी,
पलची गेआ आखचै, धमूडियें दा खख्वरा।
खीसे फरलाइयै सारे, पैसे ते कढाई लैते,
भिडियें घंडोलियें दा, बुशका सै वक्खरा।
पिछली तरीका जिसी, पंज दई गेआ सा अजज,
दूरा दा गै आले मारै, गल्ल सुन जक्करा।
मुनशी बकीले दा सै, जिदे गैहँ ने जोड़ै मूल-
पिच्छे गै लगा दा आया, पक्के डंगे तक्करा।

कुसै इक्क कुसै दो, कुसै धा कुसै भोह,
कुसै गन्ने कुसै रौ, कुसै गितै सन धोचदी।
इनें फरमासें फंगताल करी दित्ता मिगी,
ठागरें तोड़ी बी मेरी, सूक नेई सनोचदी।
कुन दिन होए, मिगी त्रप्पड़ त्रीड़दे गै,
गरीबें गितै अजज, सरकार बी नि सोचदी।
भुज्जी-भुज्जी सुडी गेआं, चिन्ता विच चुड़ी गेयां,
पापें वाली बेड़ी, अजें बी नि भ्रोचदी।

खसमें गी खाओ, जिमीं जंदी ऐ तां जाओ,
नै मता किश आओ, मिगी साग ढोडा लोड़दा।
निवक-शुकक ऐसा सब, गेआ पर कच्चे थाहर,
सारी गै उमर रेहा, पैसा-पैसा जोड़दा।

कुसੈ ਚੰਗੇ ਕਮ੍ਮ ਲਾਂਦਾ, ਤਾਮੀ ਚੰਗਾ ਫਲ ਪਾਂਦਾ,
ਰਫੂਜਿਯੋਂ ਗੀ ਦਿਨਦਾ, ਦਾਲਤੀ ਚ ਕੱਸੀ ਰੋਡਦਾ।
ਜੇਤ ਕੁਸੈ ਪੁਚਛਨਾ ਤਾਂ ਸਿਗੀ ਆਇਥੇ, ਪੁਚਛੀ ਲੈਓ,
ਦਾਲਤੀ ਦਾ ਧੰਦਾ ਖਲਲ, ਕਿਧਾਂ ਕਿਧਾਂ ਕੋਡਦਾ।

ਸ਼ਾਸ਼ਨ-ਵਾਚਿਆਤ

1. ਇਹ ਕਵਤਾ ਦਾ ਕੋਈ ਬਨਘ ਤੁਸੋਂਗੀ ਮਤਾ ਸ਼ੰਲ ਲਗਾ ਏ? ਤੇ ਕੀ ਲਗਾ ਏ?
2. ਕਵਿ ਜਿਸਲੈ ਦਾਲਤੀ ਚ ਪੁੱਜਾ ਤਾਂ ਉਸਦੀ ਕੇਹੁ ਹਾਲਤ ਹੋਈ?
ਲੋਚਿਧਿ ਗਲਨ ਸਪਿਟ ਕਰੋ।
3. ਇਹ ਕਵਤਾ ਚ ਕਵਿ ਨੇ ਕੁਨੋਂ ਕੁਨੋਂ ਨੋਕੋਂ ਬਾਰੇ ਕਿਥਾ ਆਖੇਦਾ ਏ?

ਭਾਸ਼ਾ-ਵਾਚਿਆਤ

- [ਕ] ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਦੇ ਮੁਹਾਬਰੋਂ ਦੇ ਅਥਾਂ ਦਸ਼ਾਂ ਤੇ ਜੀ ਉਨਦਾ ਪ੍ਰਯੋਗ ਵਾਕਿਆਂ ਚ ਕਰੋ :—
ਫਂਗਤਾਲ ਕਾਰੀ ਦੇਨਾ, ਸੁਡੀ ਜਾਨਾ, ਭੁਜਨਾ, ਕੱਚੇ ਧਾਹੁਰ ਜਾਨਾ, ਚੁਡੀ ਜਾਨਾ।
- [ਲ] ਇਨ੍ਹੇ ਚ ਕਹੁ ਦਸ਼ਾਂ :—

| | | | | | | |
|-------|---|---------|---|--------|---|---------|
| ਪਿਛਲੀ | — | ਅਗਲੀ | — | ਫਂਗਤਾਲ | — | ਮਾਲਾਮਾਲ |
| ਦਾਲਤ | — | ਕੋਤਵਾਲੀ | . | ਵੇਡੀ | — | ਗਿਕਾਰਾ |
| ਲਕਖਰਾ | — | ਆਲਡਾ | | ਮੁਨਸ਼ੀ | — | ਗਰਦੌਰ |
| ਪਾਪ | — | ਪੁਨ | | | | |

ਲਾਨ-ਵਾਚਾਕੀ

- [ਕ] ਇਸ ਕਵਤਾ ਦੇ ਆਧਾਰ ਪਰ “ਦਾਲਤੀ” ਦੇ ਲਲਖਨ ਦਸ਼ਾਂ। ਅਪਨੇ ਅਧਿਆਪਕ ਦੀ ਮਦਦ
ਕਨ੍ਹੇ ਦਾਲਤੀ ਬਾਰੇ, ਜਚੜੇ, ਵਕੀਨੇਂ ਦੇ ਕਮੰ ਵਾਰੰ ਹੋਰ ਜਾਨਕਾਰੀ ਕਿਟ੍ਟੀ ਕਰੋ।
- [ਲ] ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਦੇ ਸ਼ਬਦੋਂ ਦੇ ਸਾਮਨੇ ਉਨ੍ਹੇ ਵਿਪਰੀਤ ਸ਼ਬਦ ਦੇਓ, ਜਿਧਾਂ :—

| | | |
|--------|---|------|
| ਪਿਛਲੀ | = | ਅਗਲੀ |
| ਫਂਗਤਾਲ | = | |
| ਦੂਰ | = | |
| ਪਾਪ | = | |
| ਕੱਚਾ | = | |
| ਗਰੀਬ | = | |

ਕਿਵਨ ਸਮੈਲਪੁਰੀ

ਲਤਾ ਮਿਗੇਸ਼ਕਰ ਹੁਨਦੇ ਗਏ ਦੇ “ਭਲਾ ਸਪਾਇਆ ਡੋਗਰੇਧਾ” ਗੀਤ ਦੇ ਰਚਨਾਕਾਰ ਕਿਵਨ-ਸਮੈਲਪੁਰੀ ਹੁਨਦਾ ਜਨਮ ਸਨ् 1900 ਚ ਤਸੀਲ ਸਾਮਨਾ ਦੇ ਸਮੈਲਪੁਰ ਪ੍ਰਾਂ ਚ ਹੋਗਾ। ਬਚਪੁਨੇ ਥਮਾਂ ਗੇ ਇਨੌਂਗੀ ਸ਼ਾਯਰੀ ਕਰਨੇ ਦਾ ਸ਼ੌਕ ਹਾ। ਪੈਂਹਲੋਂ ਏਹੁ ਉਦੂ ਚ ਲਿਖਦੇ ਹੋ। ਗਲਿਬ, ਜ਼ੋਕ, ਮੀਰ, ਦਾਗ ਆਦਿ ਉਦੂ ਸ਼ਾਯਰੋਂ ਦਾ ਇਨ੍ਦੇ ਪਰ ਬਡਾ ਪ੍ਰਭਾਵ ਹਾ। ਇਨੌਂਗਾ ਇਨ੍ਦੀ ਉਦੂ ਦੀ ਕਤਾਬ “ਫਿਰਦੀਸ ਸੇ ਬਢਕਰ ਹੈ ਯਹ ਮੇਰਾ ਬਤਨ ਡੁਮਾਰ” ਪਰ ਰਿਧਾਸਤੀ ਅਕੰਡਮੀ ਥਮਾਂ ਤੇ “ਮੇਰਿਆਂ ਡੋਗਰੀ ਗਜ਼ਲਾਂ” ਪਰ ਕੇਨਦ੍ਰੀ ਸਾਹਿਤਿ ਅਕੰਡਮੀ ਪਾਸੇਥਾ ਨਾਮ ਬੀ ਘੋਗੇ ਦੇਨ। ਇਨੋਂ ਆਕਾਸ਼ਵਾਣੀ ਜਾਸੂ ਚ ਖਾਸਾ ਚਿਰ ਨੌਕਰੀ ਕੀਤੀ। 27 ਜਨਵਰੀ 1981 ਗੀ ਇਨ੍ਦਾ ਕਾਲ ਹੋਈ ਗੇਗਾ।

ਸੁਰਗ-ਵੇਸ

ਸੁਰਗੈ ਦੀ ਗਲਲ ਨਈ ਲਾ ਅਡੇਧਾ,
ਜਸ਼ ਅਪਨੇ ਦੇਸੈ ਦਾ ਗਾ ਅਡੇਧਾ।

ਏ ਦੇਸ ਫੁਲਿੰ ਦਾ ਖਾਰਾ ਈ, ਏ ਦੇਸ ਅਸੋ ਅਤਤ ਪਾਰਾ ਈ,
ਏ ਸ਼ਹਾਡੀ ਅਕਖੀ ਦਾ ਤਾਰਾ ਈ, ਏ ਟੈਲੋਕੀ ਥਮਾਂ ਨਿਆਰਾ ਈ,
ਤੂਂ ਏਦਾ ਮਾਨ ਬਧਾ ਅਡੇਧਾ, ਸੁਰਗੈ ਦੀ ਗਲਲ ਨਈ ਲਾ ਅਡੇਧਾ।
ਏ ਦੇਸ ਈ ਰਿਖਿਧੇ ਮੁਨਿਧੇ ਦਾ, ਏ ਦੇਸ ਈ ਜਾਨੀ ਗੁਨਿਧੇ ਦਾ,
ਏ ਦੇਸ ਇਕ ਤੀਰਥ ਈ, ਏ ਸ਼ਹਾਡੀ ਮੁਕਤੀ ਦਾ ਢਾਰਾ ਈ,
ਜੋਤ ਇਸਦੇ ਅਗੇ ਜਗਾ ਅਡੇਧਾ, ਸੁਰਗੈ ਦੀ ਗਲਲ ਨਈ ਲਾ ਅਡੇਧਾ।

ਏ ਬਾਜ਼ਿਹਿੰ ਦੀ ਧਰਤੀ ਐ, ਏ ਜੋਰਾਵਰੋਂ ਦੀ ਧਰਤੀ ਐ,
ਏ ਦੇਸ ਬੱਡੇ ਬਲਕਾਰੋਂ ਦਾ, ਜਰਨੈਲੋਂ ਦਾ ਸਰਦਾਰੋਂ ਦਾ,
ਇਸ ਦੇਸੈ ਦਾ ਜਸ਼ ਗਾ ਅਡੇਧਾ, ਸੁਰਗੈ ਦੀ ਗਲਲ ਨਈ ਲਾ ਅਡੇਧਾ।

ਕੁਤੈ ਤੁਜਭ ਤੇ ਨੀਰੁ ਬਗਦੇ ਨੀਂ, ਕੁਤੈ ਛੁਲਲ ਚਨਾਂ ਦੇ ਲਗਦੇ ਨੀਂ,
ਕੁਤੈ ਦੇਵਕ ਤੇ ਤੀ ਬਗਦੀ ਐ, ਅਭਜੀ ਤੇ ਰਾਬੀ ਬਗਦੀ ਐ,
ਗੀਤ ਇਸਦੇ ਰਜਿਓਂ ਗਾ ਅਡੇਧਾ, ਸੁਰਗੈ ਦੀ ਗਲਲ ਨਈ ਲਾ ਅਡੇਧਾ।

- कवि स्मैलपुरी होरें अपने देसं गी सुरग देस की करी आखे दा ऐ ?
- “सुरग देस” कवता दे अधार पर इस देसं दियां बशेशतां दस्सो ।
- इस कवता गी मूँह, जवानी चेतै करो ते जमाता च सनाओ ।

भाषा-व्याख्यान

- [क] हेठ लिखे दे शब्दे दे रलदे-मिलदे अर्थ-आले शब्द दस्सो :—
- सुरग, खारा, वैलोकी, बलकार, जानी, गुणी, तीरथ, जोत, मुक्ति, छल्ल ।
- [ख] इनें शब्दे गी हेठ दिन्ती दी व्याख्या लेई इक शब्द दे रूपै च लिखो :—
- न्यारा, सुरग, वैलोकी, जानी, गुणी, मुक्ति जियां—
- मरियै जित्यै जाने दी इच्छेया कीती जन्दी ऐ = सुरग
 - सबने थमां बक्खरा =
 - जेदे च सध्भै गुण मजूद होन =
 - जन्म मरण दे बन्धने शा छुटकारा =
 - जिसी हर चौजै दा ज्ञान होऐ =
 - त्रीं लोकें दा समूह =
- [ग] खाली स्थान भरो :—
- ए देस फुल्ले दा.....देस असें अत्त.....ई ।
 - जोत इसदे अगरे.....अडेआ सुरगे दी.....अडेआ ।
 - कुतै उज्झ ते.....बगदे नीं, कुतै छल्ल चनां दे.....नीं ।
 - गीत इसदेगा अडेआ,.....गल्ल नेई.....अडेआ ।

शाम-व्याख्या

व्याख्यापक दी मदद कन्नै समझो जे कश्मीर गी भारत दा सुरग की आखेवा जन्हा ऐ ।

परमानन्द 'अलमस्त'

परमानन्द 'अलमस्त' हुन्दा जन्म सन् 1901 च होआ। 'अलमस्त' होर जम्मू वे प्हाड़ी ग्राएं च कम्पोडरी दा कम्म करदे रेह, ते उनें ग्राएं दे कुदरती छत्तें कोला प्रभावत होइयै इनें बड़ियां शैल कवतां लिखियां। "सुरम निं जान हुन्दा पितल खड़काए हे" इन्दी बड़ी मशहूर ते समाज सुधारक कवता ऐ। 'अलमस्त' हुन्दा "ललारी" नां द गोत लतामंगेशकर हुड़ी बुआजै च रकाई होए दा ऐ। इन्दे दो कवता संग्रह, न "शुनक" ते "इक बूदैं गी तरसं पैछी।"

परदेस

कैसी चले परदेस ग्रो कैन्ता, कैसी चले परदेस ।
के वरती सिर औखीभारी, पुज्जी के मन ठेस ।
देस त्यागन देस द्रोही, चाकर, चोर, वचारे
चूग सम्बै तां पैछी नस्सन, जां जिन्दे रणखारे
हिरखा वद्दे हिरखी फिरदे, करी-करी जोगडे भेस ! कैता.....

परदेसें दे दुख के दस्सां, मन औन्दे नि गलोन्दे,
जो सुख अपने थाह, रें चन्ना, पर थाह, रें नेई अहोंदे,
सत्यर सुट्टी भुजां सौना, होन्दे सौ कलेश । कैता.....

जिनें नारें दे कैन्त बदेसें, औखा उन्दा जीना,
बाज प्राणें देह नकम्मी, बाज जला दे मीना,
लाने खाने ई मन नि करदा, खिल्लरे रौह, न्दे केस । कैता.....

बाह, रा थाह, रा दी चुपड़ी मन्दी, घरै दी चंगी कोरी ।
तंगी-तुरश्ची कट्टी लैगे देस नि जायो छोड़ी ॥
ओ अलमस्ता, अरज गुजारां कच्ची बजोगी ठेस ।

कैसी चले परदेस ग्रो कैन्ता, कैसी चले परदेस ।
के वरती सिर औखी भारी, पुज्जी के मन ठेस ॥

1. कवि नै इस कवता राहें परदेस जीवन दे केहँडे केहँडे दुख दस्से दे न ?
2. इनें पंगतियें दे अर्थ स्पष्ट करो :—
 जिनें नारें दे कैन्त बदेसे औखा उन्दा जीना,
 बाज प्राणे देह नकम्मी बाज जला दे मीना ।
 लाने खाने ई मन नि करदा खिलतरे रौहँन्दे केस ।
3. परदेस कुस गी आखदे न ते देस कुसगी आखदे न ?

भाषा-अध्ययन

- [क] हेठ लिखे दे शब्दें दे अर्थ दस्सो ते उन्दे वाक्य बनाओ :—
 परदेस, कैन्त, औखी-भारी, ठेस, त्यागना, देसद्रोही, चाकर, चोर, चूग, सम्ब
 पेंछी, रणसोर, सत्थर, भुँग कलेश, मीना, प्राण, तंगी-तुरशी, अरजां ।
- [ख] हेठ लिखे दे शब्दें दे विपरीतार्थी शब्द खल्ल दित्ती दी फरिस्ते चा ताफ
 उन्दे सामने लिखो :—
- | | |
|---------------|-----------|
| 1. देसद्रोही— | 5. चुपडी— |
| 2. हिरखी— | 6. मन्दी— |
| 3. भुञ्जे— | |
| 4. नकम्मी— | |
- दोखी, गास, देशभगत, कम्मी, चंगी, रुखी ।

ज्ञान-बधायो

1. स्थाडे भारत च किन्ने प्रदेश न ? इस बारे अध्यापक दी मदद कन्नै जानकारी हासल करो ।

शम्भू नाथ शर्मा

शम्भू नाथ शर्मा हुन्दा जन्म सन् 1905 च पलीहँडा नां दे ग्रां च होवा । एह इक सरोखड कवि होने दे कन्नै-कन्नै इक सफल नाटक अभिनेता वी हे । “भड़ास” नां दा इन्दा इक कवता संग्रहै, ऐ, जिस पर इने गी 1962 च जम्मू कश्मीर अकैडमी पासेगा नाम घोवा हा । इने डोगरी च रमायण वी लिखी दी ऐ ।

आजू ऐ थोहँडी ते कम्म बतहेरे

हुन हुन्दा अज्ज फी कल्ल फी अत्तरुं,
सुकदे नि जमदे दी अक्खीं दे अत्यरुं
मौत लेई पौंदी ऐ मारन फेरे । आजू ऐ थोहँडी……………!

बच्चे शा जागत फी जोग्रान फी बुड़ा,
चौ गेई बिच्च खा सौ सौ ठुड़ा,
इक इक ठेड़े च दुःख घनेरे । आजू ऐ थोहँडी……………!

जागतपुनी तगरा खेड़ा च जन्दी,
जोग्रानी च भुलदी ऐ मौजे दी अन्धी,
वढ़ेपे तलोफे चार चफेरे । आजू ऐ थोहँडी……………!

बचपन सोचदा ऐ आऊं करड़,
अगले ते पिच्छले दुखेंगी हरड़,
सब जस्स गाडन दुनिया च मेरे । आजू ऐ थोहँडी……………!

जन्दे जोग्रानी गी चिर नियों लगदा,
आजू दा दरया रुकदा नि बगदा,
चलदा गै रौहँदा सजां सवेरे । आजू ऐ थोहँडी……………!

वढ़ेपे दे औन्दे अकल जेल्लै औन्दी,
हथड़ होई जन्दा सत्ता नि रौहँदी,
लेई पौन्दे लब्भन कूच हुन्दे डेरे, आजू ऐ थोहँडी……………!

झरदा सफरे शा डरन लेई पौन्दा ।
जीन्दे गै डरे ने मरन लेई पौन्दा ॥
सोचदा चार दिन कैसे घनेरे । आजू ऐ थोहँडी……………!

पढ़े नि पढ़ाया, बन नि कमाया,
भला वी नि कीता न किज बनाया;
पाए, चवकस्ती न मौती नै घेरे। आजू ऐ थोहड़ी.....

अकल दे प्रभु कोई के किज करे,
कियां कीई जम्म, रवै ते मरै,
सुफल कियां बीतन ए चार दिन मेरे।
आजू ऐ थोहड़ी ते कम्म न बतहेरे ॥

प्रश्न-प्रस्ताव

1. कवि ने बढ़ाये दी कनेही तसबीर पेश कीती दी ऐ ?
2. इनें पंगतियें दा केह अर्थ ऐ :—
आजू दा दरया रुकदा मि बगदा,
चलदा गै रीह दा संबा सबेरे,
आजू ऐ थोहड़ी ते कम्म बतहेरे ।
3. कवि ने प्रभु कोला किस चीजा दी मंगा कीती दी ऐ ?

आशा-धृष्टियन

- [क] इनें शब्दें ते मुहावरे दे अर्थ लिखो :—
बत्तरू, घनेरे, डेरा कूच होना, दिन घसेरना, हृथड़ होई जाना, चवकस्ती,
तलोफना, अकल ।
- [ख] सल्ल दित्ते दे वाक्यें चा ठीक वाक्यें अग्गे नशानी [✓] लगाओ
1. बच्चे शा बुद्धा की जोआने ।
 2. जन्दे जोआनी गी चिर नियों लगदा ।
 3. चलदा नेई रीह दा संबा सबेरे ।
 4. हून हुन्दा बत्तरू की कलफी अज्ज ।
 5. अकल नेई दे प्रभु कोई के किज करै ।

आन-बणाई

अपने बजुगे कशा उन्दे अपने तजबै बारै जानकारी हासल करो ते सिक्खमत
ग्रहण करो ।

राम लाल शर्मा

राम लाल शर्मा हुन्दा जन्म सन् 1905 व मुहा स्त्रियों ना दे गां व होवा। एह डोगरी संस्था दे कार्यालय-मन्त्री न। इन्हे दी कबता संग्रह, जेहँदे छपी चुके दे न, बो न “इन्दर-बनव” ते “किरण”। इने किश यात्रा लेख वी लिखे दे न। नैह कला जंगलात चा रेंजर दे बौहँदे परा रटैर होने परंतु नै इने साहित्य लाभना च नै रकसी। एह इक मने दे गजल-गो शायर न।

पहाड़े ते नदिएं वा देस

मिगी फिकरें च डुब्बे दे,
 उन्हें गारें च सुब्बे दे,
 नभीं सोचें दी रीगें चा,
 इन्हें गासें दी पीगें चा,
 इन्हें नदिएं ते नालें दे,
 बझोए अर्थ आलें दे,
 जहूं ऐ नाग नदिएं दे,
 चलै करदे जो सदिएं दे,
 मिगी लब्बे नथोए दे,
 बनी भीलां डकोए दे,
 ते इस धरती दे सीने पर
 इन्हें रक्कड़ जमीने पर,
 बिछे दे जाल नैहँरें दे,
 सनोचे ताल लैहँरें दे ॥
 चबखैं फुल्ल फुलदे न,
 तां हासे भुआं डुलदे न,
 बदल हिरखैं ने हाम्बै दे,
 ए गोदै लेइयै साम्बै दे,
 ओ रीस नराली धारें दी,
 इन्हें बहारें ते छुहारें दी,

जां घरती पैर छहोंदा ऐ,
 निरा-मखमल वझोदा ऐ ।
 सुसा, गोंदे च ब्हाले दे,
 बड़े लाडे, ने पाले दे ।
 ओ दस्सो चीज केहड़ी ऐ,
 असें भाली नि जेड़ी ऐ ?
 फिरी बी थोड़ बाकी ऐ,
 बड़ी गै लोड़ बाकी ऐ,
 उन्हें बलवान बाहिएं दी,
 उन्हें अनथक्क राहिएं दी,
 बदी अग्गें जो हाम्बी लैन,
 इन्हें सुर्गें गी साम्बी लैन ।

प्रश्न-प्रध्यास

कवि नै डुगर भूभाग गी प्हाड़े ते नदिएं दा देस की आखेदा ऐ ?
 नैहरें दे जाल बिछे दे आली गल्लै गी बिन्द खोलियै समझाओ ।
 कुदरत हे शलैये वारे इस कविता दे अधार पर पंज सतरां लिखो ।

भाषा-प्रध्ययन

हेठ लिखे दे शब्दे दे अर्थ लिखो :—

रींगां, आले, बासोऐ, नाग, सदियां, अनथवक, हाम्बी लैना ।
 नयोए, दे, सीना, रक्कड़ रौस, धारां, लाड, भाखना,
 रींग, नाग, रक्कड़, लाड, आला, इनें शब्दे दे पर्याय खल्ल लिखे दे शब्दे चा
 तालो ते इन्वे सामने लिखो :—
 बीह—कतार, सण—कीड़ा, बंजर—खेड़ी, सद्द—बुवाज, हिरस—प्यार,
 जियां—घरती—भुञ्ज, घरती—जमीन, पृथवी ।

ज्ञान-बधाई

कश्मीर दियें नदिएं दे नां पुच्छो ते ओ कुत्थूं दा निकली दियां न इस बारे
 जानकारी हासल करो ।
 मारती नदिएं ते प्हाड़े दे नां पता करो ।

रामनाथ शास्त्री

श्री रामनाथ शास्त्री हुन्दा जन्म सन् 1914 च जम्मू च होआ । शास्त्री हु डोगरी संस्था दे संस्थापकें चा इक न । इनें केई कताबें दे सम्पादन ते अनुवाद कीते । 'सन्नासर' इन्दी इक शाहकार कवता ऐ । इन्दियां रचनां न 'धरती रिन' [कवता/ संग्रह], 'बदनामी दी छां' [कहानी संग्रह], 'भक्तियां किरण' [एकांकी संग्रह], 'तलखियां' [गजल संग्रह], इनें गी 'बदनामी दी छां' पर केन साहित्य अकेंडमी ते 'तलखियां' पर रियास्ती कल्चरल अकेंडमी पारस्पेरा (इ) अहोए दे न । शास्त्री होर अज्जकल जम्मू कश्मीर कल्चरल अकेंडमी च डिक्षा सैक्षण च मुक्त्व सम्पादक न ।

सन्नासर

सैहं मी दिया हीखी कच्छ जियां कोई खंधी जा,
गासा गी रोआंदा जियां तारा कोई लंधी जा,
चानचक्क आँगली गी कंडा जियां डंगी जा,
वासना दा लोरा जियां अकिखयें गी रंगी जा,
जन्न पवै पानिया च, वधै जियां ओदा घेरा,
इस्से चाल्ली सन्नासरा, चेत्ता मिगी आवै तेरा ॥

चाननी च धार संस्कारै दी ऐ हस्से दी,
क्हानी जोरावरें आली मन जिदै वस्से दी,
तेरा ओ गुहाड़ दिक्खी करी जड़ी नस्से दी,
रात, काले शीरे रुखें खल्ल जाइयै दस्से दी ।
अद्भुती रातीं गेहिया ने भाख लम्मी लाई ही,
वेदन ओदे मना आली कैसी करलाई ही ?

सबजें दी डब्बिया च मोती ऐ सम्हाले दा,
धारें दे शलैपे ने ऐ थाह् र जियां ताले दा ।
प्रीति दिया साधना ने दिया जियां बाले दा,
प्हाड़े दिया आत्मा ने गीत कोई पाले दा ।

बार द नकबल च सन्नासर बस्से इया—
 भीरें यमां दूर जियां फुल्ल कोई हस्सै दा ॥
 कोठे परा छिल्लुएं गी आले अजें भुल्ले नेईं,
 मींडियें दे सप्प लम्मे, काले अजें भुल्ले नेईं,
 मने विच अकिलयें दे जाले अजें भुल्ले नेईं,
 गीतें बहानै भेजे दे सम्हाले अजें भुल्ले नेईं,
 शैल रूप दिकसी माह नु फिरी कैसी जीदा ऐ ?
 जीन्दा, तढ़ै फट्टे दे लंगार सदा सीन्दा ऐ ॥
 दिव्व ऐ शलैपा तेरा, पस्सरें दा बास ऐ,
 सर कियां सुक्का तेरा, चित की दो आस । ऐ ?
 कोदा ऐ बजोग तुगी, हीखी की नरास ऐ ?
 आम्मी आं बजोगी, मेरी तेरी इकै रास ऐ ।
 पुछदियां चीड़ां चित्त सूकें ने थमोंदे नेईं ।
 कैदी ऐ शपैल तुगी, इयां मड़ा रोन्दे नेईं ॥

[सन्नासरे परता दित्ता—]

“साथिया, शलैपे दिकसी मन भरमायां नेईं,
 गल्ल मेरी बेदना दी भुल्लियै बी लायां नेईं ।
 वाऽ ए गरीविया दे मुडियै जगायां नेईं,
 मेरे चौन्नें बकसी दुक्ख भुक्खा दे न बस्सै दे ।
 गीतें बहानै जीने आली बत विन्द दस्सै दे,
 मने दे बोआल विन्द कड्डी-कड्डी हस्सै दे ॥
 दूरा दा गै घर मेरे सुंदर बझोंदे न,
 रात-दिन, इत्यें होर चाल्ली दे गै होंदे न ।
 मोती न ए लारे, जिदे हार ए परोंदे न,
 वाह रा हस्सी लैंदे दुख चित्त इंदा कोह न्दे न ।
 दुख्सें दी ए कहानी तुंदी समझा च औनी नेईं,
 बुनी जेल्लै तुसें रातीं नीन्दर फी पौनी नेईं ॥

प्रश्न-अन्ध्याय

सन्नासर दे शलैपे दा बर्णन करो ।
 इस कवता दा केह दा बन्व तुसेंगी सबनें का भता चंगा लगदा ऐ ते की
 लगदा ऐ ?

भावा-प्रश्नयन

[क] हेठ लिखे दे शब्दे दे अर्थ लिखो :—

बासना, जन्न, लोरा, गुहाड़, भाख, छिल्लू, दिव्ब-शलैपा, पस्सरें दा बास, रास, घाड़, बत्त।

[ख] खाली थाहरें च बोशाण मरो :—

1. रात.....शौरे रुखें खल जाइये दस्सै दी।

2.ऐ शलैपा तेरा पस्सरें दा बास ऐ।

3. सर कियां सुकका तेरा चित्त की.....ऐ।

4. दूरा दा गे घर मेरे.....बझोन्दे न।

5. मोती न ए.....जिन्दे हार ए परोन्दे न।

जान-बधायो

अपने अध्यापक कशा पुच्छो जे सन्नासर नां दा थाहर कुत्थै जेनई पौन्दा ऐ ?
जम्मू प्रान्त दे किश थाहरे दी जानकारी हासल करो।
जिन्दा शलैपा सन्नासर आला लेखा होऐ।

ਦੀਨੂ ਭਾਈ “ਪਨਤ”

ਸ਼੍ਰੀ ਦੀਨੂ ਭਾਈ ਪਨਤ ਹੁਨਦਾ ਜਨਮ ਸਨ 1917 ਚ ਪੰਥਲ ਨਾਂ ਦੇ ਧਾਂ ਚ ਹੋਆ
“ਬੰਹਰ ਪੰਹਲੋ ਪੰਹਲ” ਗੇ ਤੇ “ਗੁਜਰੀ” ਪਨਤ ਹੁਨਿਧਾਂ ਕਾਹਕਾਰ ਰਚਨਾਂ ਨ। ਏਹ ਵੀ
ਡੋਗਰੀ ਸੱਥਾ ਦੇ ਸੱਥਾਪਕੇ ਚਾ ਇਕ ਨ। ਇਨਦਿਆਂ ਰਚਨਾਂ “ਗੁਤਨੁ” [ਕਵਤਾ ਸੰਘੋ] [
ਮਗੂ ਦੀ ਢ਼ਵੀਲ] [ਲਮਮੀ ਕਵਤਾ] “ਬੀਰ ਗੁਲਾਬ” [ਲਖੁ ਖਣਡ ਕਾਵਿ] “ਦਾਦੀ ਤੇ ਮਾ”
[ਕਵਤਾ ਸੰਘੋ] “ਸਰਪਂਚ” [ਨਾਟਕ] ਡੋਗਰੀ ਪੁਸ਼ਟਕ ਭੰਡਾਰ ਦੇ ਅਨਮੋਲ ਰਤਨ ਨ।

ਮੇਰੇ ਦੇਸੈ ਦਾ ਸ਼ਲੈਪਾ ਮੇਰੀ ਪ੍ਰਲੁਣੀ ਕਨੇ ਵਿਲੁ

ਦੂਰੈ ਦੂਰੈ ਤਾਨੀ ਜਿਥੋਂ ਨਜਰੋਂ ਦੀ ਪੌਹੁਚ
ਖੁਲ੍ਹੇ ਖੁਲ੍ਹੇ ਪਾਡੇ-ਸੈਲ੍ਹੇ ਜਾਂਗਲੋਂ ਦੀ ਰੋਂਸ
ਧਨੇ ਧਨੇ ਬੂਟੇ ਪਰ ਪਸ਼ਖਰੂ ਵਸੋਨ
ਗਾਨ ਮਿਟ੍ਠੇ ਸੁਹਾਨੇ ਗੀਤ ਨਮੇਂ ਨਿਤ ਨਿਤ
ਮੇਰੇ ਦੇਸੈ ਦਾ ਸ਼ਲੈਪਾ.....!

ਧਿਰੀ ਧਿਰੀ ਧਾਰੋਂ ਦੇ ਕਂਗਾਰੇ ਪਰ ਛਾਏ
ਵਦਲ ਸਮੁਨਦਰੀ ਸਨੇਹ, ਲੇਈ ਆਏ
ਵਿਜਲੀ ਦੀ ਜੋਤੀ ਸੁਚੜੀ ਆਰਤੀ ਬਨਾਈ
ਪੂਜਾ ਕਰਿ ਭੁਕੀ ਭਕੀ ਬੈਠੇ ਪੈਰੋਂ ਵਿਚੜ
ਮੇਰੇ ਦੇਸੈ ਦਾ ਸ਼ਲੈਪਾ.....!

ਕੁਦੇ ਉਚਚੇ ਉਚਚੇ ਛੁੰਮ੍ਬ ਹਸਸੀ ਹਸਸੀ ਪੌਹੁਨ
ਕੁਦੇ ਨਿਕਕੇ ਨਿਕਕੇ ਨਾਡੂ ਨਸਸੀ ਨਸਸੀ ਬੌਹੁਨ
ਫਕਿਕਿਯੋਂ ਦੇ ਸਿਰੋਂ ਪਰ ਠਣਡੀ ਠਣਡੀ ਵਾ,
ਪੰਜ ਸਤ ਰਾਹੀਂ ਆਈ ਬੈਠੇ ਬੋਡੀ ਹਿਟਣ
ਮੇਰੇ ਦੇਸੈ ਦਾ ਸ਼ਲੈਪਾ.....!

ਓ...ਓ ! ਉਤ ਧਾਰਾ ਕੁਸੰ ਬੱਸਰੀ ਬਜਾਈ।
ਸਿਟਠੀ ਮਿਟਠੀ ਸੁਰਾ ਕਿਝ ਗਲਲ ਸਮਭਾਈ।

ताईं पारें नालै भालू चन्ने आली आई ।
पूड़े प्रेमे दी मसूरतां इन्दे समां सिक्ख ।
मेरे देसे दा शलैया !

जन्मे दी भूमि ऐ मेरी प्यारी मां,
कुत थूहें कल्ने न्हाडे लक्खां जस्स गां ?
आदरें दे भाव कियां अक्खरें गनां ?
कीदां तुक्की दस्सां केहु ऐ मेरे मने विच्च ?
मेरे देसे दा शलैया !

न्हाडे पत्ते-पत्ते विच्च बस्से मेरी जान ।
एदे कुल्ले-कुल्ले विच्च हस्से मेरा प्राण,
इन्में जन्मी बट्टें मेरी मुन्डा दी पछान,
भुक्खा मरी जां भावें मंग्गी लां भिक्ख
मेरे देसे दा शलैया !

प्रश्न-अध्याय

- इत कहता च दीनू भाई पन्त होरें देसे दा शलैया किस चाल्ली दा बखाने दा ?
- इनें पंगतियें दी व्यास्या करो :—

कुदे उच्चे उच्चे छुम्ब हस्सी-हस्सी पीन,
कुदे निकके-निकके नाडू नस्सी नस्सी बीहून ।
जन्मे दी भूमि ऐ मेरी प्यारी मां
कुस थैहे कल्ने न्हाडे लक्खां जस्स गां ।

- इने पंगतियें दी तुक भेलो :—

(i) बो.....बो.....कुत धारा कुसै बंसरी बजाई ।
मिट्ठी-मिट्ठी सुरा किश गल्ल.....॥
(ii) पूड़े प्रेमे दी मसूरतां इन्दे समां सिक्ख ।
मेरे देसा दा शलैया मेरी अक्खीं कल्ने॥

आत्मा-अध्ययन

- [क] हेठ लिखे दे शब्दें दे अर्थ दस्सो ते उन्दा वाक्यें च प्रयोग करो :—
तामी, रौस, बसोना, सुहाना, कंगार, छुम्ब, राही, हिट्ठ, सुरा, ताईं, चन्न,
मसूरतां, अक्खर, प्राण, जन्मी, मुन्डा दी ।

[४] हेठ लिकस्ती दियें सतरें च वशेशन शब्द भरो :—

1. दूरे दूरे ताती जित्यें.....दी पाँहू च ।
2. खुल्ले खुल्ले प्हाड़ें.....जंगलें दी रीस ।
3.बूटें पर पल्लरू बसोन ।
4. विजली दी जोती.....आरती बनाई ।
5. कुदे.....छुम्ब हस्सी हस्सी पीन ।

शान-वषाणौ

1. इुमार दे जलैपे बारै होर जानकारी किट्ठी करो ।
2. जन्म भूमि बारै लखोई दियां हिन्दी, उर्दू आदि भाषायें दियां कोई दो कवतां बी पढ़ो ते जन्म भूमि दी महता गी समझो ।

शान-वषाणौ

जन्म भूमि बारै लखोई दियां हिन्दी, उर्दू आदि भाषायें दियां कोई दो कवतां बी

पढ़ो ते जन्म भूमि दी महता गी समझो ।

जन्म भूमि बारै लखोई दियां हिन्दी, उर्दू आदि भाषायें दियां कोई दो कवतां बी

पढ़ो ते जन्म भूमि दी महता गी समझो ।

जन्म भूमि बारै लखोई दियां हिन्दी, उर्दू आदि भाषायें दियां कोई दो कवतां बी

पढ़ो ते जन्म भूमि दी महता गी समझो ।

जन्म भूमि बारै लखोई दियां हिन्दी, उर्दू आदि भाषायें दियां कोई दो कवतां बी

पढ़ो ते जन्म भूमि दी महता गी समझो ।

जन्म भूमि बारै लखोई दियां हिन्दी, उर्दू आदि भाषायें दियां कोई दो कवतां बी

पढ़ो ते जन्म भूमि दी महता गी समझो ।

जन्म भूमि बारै लखोई दियां हिन्दी, उर्दू आदि भाषायें दियां कोई दो कवतां बी

पढ़ो ते जन्म भूमि दी महता गी समझो ।

यश शर्मा

यश शर्मा हुन्दा जन्म सन् 1926 च श्रीनगर च होआ । पर इन्दा बचपन वसोहली च गै बीतेआ । यश शर्मा होर इक कुशल गीतकार न । इन्हे रेडियो ते स्टैज बास्तै नाटक वी लिखे देन । इन्हे डोगरी फिल्म “गल्लां होइयां बीतियां” दे गीत मधुकर हुन्दे कन्ने रलिये लिखे हे । अज्जकल यश शर्मा होर रेडियो करमीर जम्मू च अनाँसर दे ओह दे पर कम्म करा करदे न ।

संझ सवेरे इक्को चाह्

संझ सवेरे इक्को चाह्
मेरी कंदिया वी कोई बदल
ठंडे मिट्ठे नीर बराह् !

बूटा बूटा तरेहाए दा
पत्तर पत्तर कमलाए दा

जल थल कर, वर इन्ना वर तू
सव किश हरा भरा होई जा ! संझ.....

मेरे प्हाडे वी कोई सूरज,
खिड़-खिड़ हसदी धुप्प चढा,
कोई सीतो सीतै दी मारी
करै नि ठुर-ठुर कुतै बचारी,

मद्दी गुज्जर रस्सन-बस्सन,
चीड़ दा वन चंवर भुला ।

संझ सवेरे इक्को चाह्
मेरी धरती वी कोई लखभी
पक्के पैरे बस्सी जा !

मेरे मानु रिजकै मारे
घर छोड़ी नि जान बचारे,
दरद, बछोड़े, सोचां, झूरे ।
भुक्ख गरीबी मुक्की जा ।

संभ सबेरे इको चाह ।
 कोई कवि मेरी धरती गी
 गीते ने शंगारी जा,
 गीत तिले धारे ब्हारे दे
 तम परंत नवियें-नाले दे ।

सोहल उल्लेपे दे केलें इच
 अपने हत्थें कुल्ल तजा ।
 संभ सबेरे इको चाह,
 मेरी कंदिया भी कोई बदल
 रहे मिट्टे नीर बगाह ॥

प्रह्ल-प्रधान

इस कवता च कवि ने केहड़ी चाह, प्रगट कीती दी ऐ ?
 इस गीते गी मूह, जबानी चेता करो ते जमाते च समाजो ।
 कवता दे हाए ते त्रीए बन्ध दी व्याख्या करो ।
 साली जगहां भरो :—

मेरी कंदिया भी कोई बदल.....वराह ।
 मेरे बछोड़े सोचां झूरे.....मुक्की जा ।
 मेरे.....खिड़-खिड़ हसदी भुप्प चढा ।
 कोई.....मेरी धरती गी गीते ने.....जा ।

माला-प्रधान

इने घब्दे दे समानार्थी शब्द हेठ दिती गेदी करिस्त चा तालो ते इन्हे
 सामने लिखो :—

संभ—

सबेरा—

जलधल—

चबर—

[दुःख, बडला, पानी गं पानी, बजोग, भुज्ज, शाम, बौरी, रुट्टी ।]

धरती—

रिज्जक—

दरद—

बछोड़े—

माल-काली

इस कवि दे होर गीत बी पढो ते मुर लाइये गाने मिक्को ।

केहरि सिंह 'मधुकर'

केहरि सिंह मधुकर होਰ मन् 1929 ਚ ਗ੍ਰਾਮ ਗੁਢਾ ਸਨਾਥਿਆਂ, ਜ਼ਮ੍ਰੂ ਦੇ ਇਕ ਫੌਜੀ ਧਰਾਨੇ ਵਿੰਦੀ ਪੰਡਾ ਹੋਏ। ਮਧੁਕਰ ਹੋਰ ਪ੍ਰਕਤਿ ਦੇ ਚਤੇਰੇ ਨ। ਇਨ੍ਦੇ ਵੈਕਵਤਾ ਸ਼ਬਦਾਂ ਨ
“ਨਾਮਿਆਂ ਮਿਜ਼ਰਾ” “ਡੋਲਾ ਕੁਨਨ ਠਖੇਆ” ਤੇ “ਮੈਂ ਮੇਲੇ ਰਾ ਜਾਨੂ”। ਇਨ੍ਹਾਂ ਕਿਥੇ ਸ਼ਾਮੀਤ
ਝੱਪਕ ਕੀ ਲਿਖੇ ਦੇ ਨ। ਇਨ ਗੀਤ ਕੇਨਦ੍ਰੀ ਸਾਹਿਤਿਕ ਅਕਾਦਮੀ ਪਾਰਸੇਆ ਪੰਜ ਜ਼ਹਾਰੇ ਰੱਖੇ ਦਾ
(ਇ) ਨਾਮ ਬੀ ਪਛੋਏ ਦਾ ਏ। ਏਹ, ਅਜ਼ਜਕਲ ਗ੍ਰਾਮ ਵਡੀਂ ਵੱਡੀ ਰੌਹਨਾਂ ਨ ਤੇ ਕਾਵਿ ਸਾਧਨਾ
ਦੇ ਕਨੰ ਕਨੰ ਪੁਰਖੇਂ ਵੀ ਜ਼ਮੀਨ ਜਦਾਤ ਦੀ ਦਿਕਖਭਾਲ ਕਰ੍ਹੇ ਕਰਦੇ ਨ।

ਸ਼੍ਰੀਤ

ਡੂੰਗੀ ਡਵਰਾ ਜਨਨ ਪੇਈ
ਇਕ ਹੋਂਆ ਅਜ਼ਬ ਤਮਾਸਾ।
ਏ ਲੈਹੁੰਦੇ ਦੀ ਡਾਰ ਚਲੀ ਏ,
ਕੁਸ਼ ਛਲਿਧੇ ਦਿਧਾ ਆਸਾ

ਜਿਧਾਂ ਭਾਰ ਭਰੋਚੀ ਬੇਡੀ,
ਲੇਈ ਭਕੋਲੇ ਚਲਦੀ,
ਜਾਂ ਵਾਊ ਦੀ ਗੋਦਾ ਦੈ ਵਿਚ,
ਟਿਮ-ਟਿਮ ਵਤੀ ਵਲਦੀ;

ਜਾਂ ਕੋਈ ਹਾਲੀ, ਜੋਗ ਨਕਾਰੀ,
ਦਿਨ ਚੜ੍ਹੇਧਾ ਸੀਂ ਤੁਪਦਾ,
ਜਿਧਾਂ ਸੌਨਾ ਦੀ ਸੀਰਾ ਦਾ,
ਪਾਹੁੰ ਮੀਨੇ ਮੁਹ ਸੁਕਦਾ,

ਭੋਲੀ ਭਾਲੀ ਸ਼੍ਰੀਤ ਬਚਾਰੀ,
ਭਰਦੀ ਲਾਂਗੇ ਭੋਲੀ,
ਛੱਡੀ ਨਗੋਣੀ ਹਤਥੋਂ ਆਵੇ,
ਦਿਖਦੀ ਬੜ੍ਹ ਫਰੋਲੀ;

बत्यरुद्धे दे बन्दी-खानै,
तड़फै कैदी हासा,
ए लैहरें दी डार चली ऐ,
कुस छलिये दिया आसा ।

प्रश्न-अध्यात्म

- मषुकर नै इस कवता च कुस तमासे दी गत्त आखी दी ऐ ? स्पष्ट करेगो ।
- इनें पंगतियें गी स्पष्ट करो :—
जियां भार भरोची बेड़ी, लेई भकोले चलदी,
जां कोई हाली, जोग नकारी,
दिन चढ़ेगा सीं तुपदा ।

भाषा-अध्ययन

(क) शब्दार्थ लिखो :—

उवरा, डार, भकोले, हाली, जोग, सीं, सीर, तांग, नमोशी, छलिया ।

(ख) हेठ लिखे दे शब्दे च अर्थ भेद दस्तो ते उन्दा वाक्ये च प्रयोग करो :—

| | |
|-----------|--------|
| 1. डबर— | गत |
| 2. जन्न— | बट्टा |
| 3. डार— | इज्जड़ |
| 4. जोग— | पंजाली |
| 5. नमोशी— | बेचैनी |
| 6. छलिया— | फरेवी |

ज्ञान-व्याख्या

- अध्यापक कोला सहायता लेइये समझो जे हाली (करसान) किस चाल्लीं दांडे कल्नै कठन मेहनत करिये (अ) नाज पैदा करदा ऐ ।
- गलाह ते हाली दे कम्में बारै तफसीली जानकारी किट्ठी करो ।

ਦੇਵਤਾਤ ਰੀਵ

ਦੇਵਤਾਤ ਰੀਵ ਹੁਣਾ ਬਾਬੁ ਚੱਦ 1929 ਵੇ ਜਨਮ ਕਿਥੂ ਕਿਥੂ ਹੋਇਆ। 'ਰੀਵ' ਹੋਰੇ ਬਡਿਆਂ ਵਾਲੇ ਲੋਕਾਂ ਤੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਕੋਟਿ ਦਿਵਾਂ ਕਹਤਾ ਸਿਖੀ ਦਿਵਾਂ ਨ ਪਰ ਬਹੁਨ ਦੇ ਲੋਭ ਵੇ ਇਨ੍ਹਾਂ ਵਾਲਾ ਟਕੋਥਾ ਬਾਹੁੰ ਹੈ। 'ਰੀਵ' ਹੋਰੇ ਮੀ 'ਛੋਗਰੀ ਬਜਲੇਂ ਦਾ ਬਾਦਸ਼ਾਹ' ਮੀ ਬਾਖੇਕਾ ਬੰਦਾ ਹੈ। "ਕਤ ਤੇ ਬਾ ਬਨਯਾਰੇ ਲੋਕ" (ਗੁਰੂ ਸ਼ਾਂਹੀ) ਪਰ 'ਰੀਵ' ਹੋਰੇ ਮੀ ਜਨਮ੍ਹੂ ਕਲੀਰ ਫਲਕਰਤ ਬਹੀਠਾਂ ਵਾਲੇਕਾ 1969 ਵਰੇ ਦਾ ਪੁਰਤਕਾਰ ਮੀ ਮਿਲੇ ਦਾ ਹੈ। ਏਹੁੰਦਾ ਬੁਝਕੁਝ ਬਾਖੇਕੀ ਮੀ ਈਸਿਕ ਵਾਲਕਾ "ਕਲੀਰ ਟਾਇਅਵ" ਵੇ ਸਿਵਾਦਕ ਨ।

ਨਵੀਂ ਅਜਾਦਿਧੇ

ਨਵੀਂ ਅਜਾਦਿਧੇ ਸਾਡੇ ਵ ਆ,
ਦੇਸਾ ਗੀ ਸਮਝੀ ਲੈ ਬਪਨਾ ਮੈ ਚਰ।
ਅਨਿਵੰਤ ਬਰਖਾ, ਠੰਡਿਆਂ ਕਨਿਧਾਂ,
ਸੁਕੁਕੇ ਕਰੀਬੀ ਦੇ ਲੇਤਰੇ ਚਰ।
ਪੂਛੁੰ ਮਦਾਨੇਂ ਚ ਵਿਛੇ ਦਾ ਸੜਾ,
ਅਨਿਵੰਤ ਗਲਾ - ਬਕਰਿਧਾ ਚਰ।
ਕੇ ਹੋਥਾ ਜੇ ਚਿੰਦੇ ਦੇਸਾ ਗੀ ਪਰਤਿਧੇ,
ਅਸੋਈ ਪਨਾਮ, ਨਿੱ ਵਿਨਦ ਕੀ ਢਰ।

ਜਿਤੇਂ ਯਹਰਤ ਏ ਲੋਕੇਂ ਗੀ ਤੇਰੀ,
ਨਵੀਂ ਅਜਾਦਿਧੇ ਤੁਥੇ ਮੈ ਚਸ।
ਫਲਕਦੀ ਘੁਪਧਾ ਕੀ ਲੇਤਰੇ ਜਿਤੇਂ,
ਨਵੇਂ ਪਿਣਡੇ ਮਾਹੁੰਨੁ ਜੋਤਾ ਦਾ ਹਲ।
ਮਾਸਾ, ਨੈਂ ਛੋਨਦੀ ਮਸੀਨੇਂ ਚ ਜਿਤੇਂ,
ਮਾਹੁੰਨੁ ਕੀ ਬਨੇ ਦਾ ਲੋਹੇ ਦੀਕੁਲ।
ਤਾਖਿਧੇਂ ਮਾਫਿਧੇਂ ਮੈਹੁੰਤੇਂ ਗੀ ਛੋਡੀ,
ਮੁਡਾ ਪਰ ਵਿਛੇ ਦੇ ਲੇਤਰੇ ਢਸ।
ਤੁਨੇ ਨੇ ਯਹੇ ਦੇ ਦੇਵਤੇਈ ਛੋਡੀ,
ਮਿਟੀ, ਨੇ ਸਜੇ ਦੇ ਲੋਕੇਂ ਨੇ ਰਸ।

लोई हुन्दे कच्ची नीन्दरा उट्ठी,
निकले दे ; संजा ले परतिये आई।
साली बोजै हृत्य पाई ओ बोलेगा,
“गाहे पसीने दी इये कमाई !”

आरती करनेई दीये गी वाली,
बोली गरीबनी, “करमें दा फल”।
बड़ियें मैह फलें सज्जिये बौहिनियें,
सुन हाँ आनिये इन्दी बी गल्ले।
मैह लें च राती बी सूरज गै चमके,
तूं कच्चे कोठें दे दियें च चल।
जित्यें जरुरत ऐ लोकें गी तेरी,
नभीं अजादिये उत्यें गै चल।

प्रश्न-प्रब्लेम

- इस कवता दा नाव स्पष्ट करो।
- इस कवता दे पैह ले ते खीरले बन्ध दी व्याख्या करो।
- इस कवता च कवि केह आखना चाहन्दा ऐ ?

आवा-प्रब्लेम

- (क) इनें शब्दे दे अर्थ लिखो ते उनेंगी वाक्यें च बतो :—
कनियां, सब्जा, माड़ियां, सने दे, आरती, मैह फलां।
- (ख) इनें शब्द दे अर्थें च फक्त दस्सने निती वाक्य च प्रयोग करो :—
- | | |
|--------------|---------|
| 1. कवियां— | एन |
| 2. सब्जा— | सोका |
| 3. माड़ियां— | झुगियां |
| 4. आरती— | दरेआस |
| 5. अजादी— | गलामी |

प्राज-प्रब्लेम

- इस कवता दे लेखक दिवां होर कवतां बी पढो।
- इस कवता दा कोई होर मिरलेख सोचिये दस्सो।

सागर पालमपुरी

सन् 1929 च पालमपुर च पैदा होए दे सागर पालमपुरी दा बसली ना
मनोहर थार्मा दे ते “सागर पालमपुरी” इन्हा लिखते दा ना दे। एह, ढोगरी, पंजाबी,
हिन्दी, उर्दू, च लिखदे न पर इन्ही सास बन्तर ढोगरी भाषा दे प्हाड़ी रूप कन्है दे।
“प्हाड़े दी रानी” ते “फुल्लु रा सवेरा” इन्हियां प्रसिद्ध कवतां न। ढोगरी प्हाड़ी च
“पीड़ा” ना कन्है इन्हा कवता संझेह, छ्ये दा दे।

रुत फुल्लां री आई

अम्बडिए ! प्यूला चादू रंगाई दे,
रुत फल्लां री आई ।
धरत मड़ी मुसकाई ॥

तड़के मैं स्वेलियां ने बाँ जो चलियां,
ढोलख्ता गान्दिया जोडियां मिलियां,
रंग-बरंगियां म्यागा रे उगदे,
चिड़आं चुर-चुर लाई ।
ओ । रुत फुल्लां री आई ॥

अम्बडिए ! प्यूला चादू रंगाई दे ।
बदलां दे लिन्दडु धारां पर सजदे,
अडिजंग-अडिजंग टम्मक बजदे ।
मेलेभां रोनक लाई ।
ओ रुत फुल्लां री आई ।

अम्बडिए ! प्यूला चादू रंगाई दे ।
बणां बागां फुल्ल-बूटडु हसदे,
मिजो तां बैरियां रे चेते छसदे ।
प्रीतू रे जंगलै दिलडु गुजाचा ।
निन्द बक्स गुदाई
ओ । रुत फुल्लां री आई ।

अम्बडिए !

..... चारक रथाव दा करवेह की कीली ही हे ?

2. म्यागा उनदे ने चुरपुर कुन जान्दा हे ?
3. बरते हे लिएरदू कोई दुखाव कहदे न ?
4. जासी याहूर बरो :—

1. बम्बिए !चारक रंजाई हे !
2. बरता हेजारा बर सधदे !
3. बाजां बाजांहसदे !
4. श्रीतू रे जंबरीदुखावा !

चारक-कल्पना

- (क) इनें लघ्ये हे शब्द लिखो ते बाल्ये व शब्दोव करो :—

पूमा, चारक, कुस्तांरी, तड़के, ठोलहवा, लिएरदू, बहिराम, अम्बड़ी,
रिलदू, बूटदू ।

बाल-कल्पना

1. हिमाचल हे प्रतिष्ठ कविये दा परिके आप्त करो ते उम्हियां कषतां पढो ।
2. हिमाचल हे प्रमुख याहूरे हे नां जानो ते उन्ही फैहरिस्त बनावो ।

मराठीह देव “जम्बाळ”

मराठीह देव जम्बाळ हुन्हा जान्य सन् 1938 ये भसवाळ आं दे डां च लिहा ।
 प्रथा, अल्पलय वैह, इत्या गुलसं च इन्सरीकटर दे गीहो ए र जम्बा उरा उच्छी उ ।
 इनीला रुलो च — ‘कीरी कलित्यां रसो’ (करता लंडी), ‘गुण्डे लोरो’ (बद्दली
 लंडी), ‘जारवा गोच’ (करता, नाळू दे कराणी लंडी), ‘काळा ली ली लाली-
 लंडी’ (करता लंडी), ‘कोरव’ (बद्दला लंडी), ‘वंडलील’ (बद्दल) ‘जारवा च
 लेच’ (बद्दली लंडी), ‘काळी उरतो लक्ष्मे वाहुऽनु’ (उत्तमाळ), दे ‘लीलर’ (बद्दली
 लंडी) । लंडी दी लेजी वाहिन्य लंडीली पालेला नाळ विला लेला ऐ ।

जम्बाळ

हुन आलता काढे च कीरता नई ?
 हुन आलता गुलकेभा जोश अपना ?
 हुर याहे च दिक्की भसलोए वेडा,
 शो दे किरी उस्ती दा दोष अपना ।

वस खम्बन पुजारी आं लेखियें था,
 खुत्त सुखी मे लेने दा चा कोई नई,
 नन-जीजी बस्ताने अलदेलहे आं,
 खंडी लोखियें रुग्ने नरणाह कोई कई ।

लेंदेला खीम नई अयें भाला,
 उड्डारेका विल उस नार लाली ।
 लाली लेखियें लहा दे पैर लगने,
 लाला लाली वैह इा उस हार लाली ।

अयें डीडो, जोरावरै दियें क्षी,
 साहे काला वैह खला खोडेला नई ।
 साही नाहियें क्षी दा खूब उरी,
 नाला लाहे मे उमे खोडेला कई ।

साढ़े जीन्दे ए गल्त नइ होई सकदी ।
कैसी भूठे फरेबे च फसे दे ओ,
कदं मुण्डी ए नीमी नइ होई सकदी ।

बच्चा-बच्चा आजादी दी कदर जाने,
राखी देसे दी करना वी जानने आं ।
गैं पापी नि कुसे दी पौग इत्यै,
चंगे माड़े गी खूब पन्छानने आं ।

प्रश्न-छव्यास

1. इस कवता दा भाव अपने शब्दे च लिखो ।
2. इने प्रगतियें ही व्याख्या करो :—
अस अमन पुजारी आं सदियें था,
खुत्त कुसे, नै लैने दा चा कोई नइ ।
मन-मोजी भस्ताने अलबेलड़े आं,
बैरी दोखियें कल्ने नरवाह कोई नइ ।
3. कवि ने इस कवता दा सिरलेख “भरम” की रक्खेआ दा ए ?

आशा-छव्ययन

- (क) इने शब्द दे अर्थ लिखो ते उन्हा वाक्ये च प्रयोग करो :—
बीरता, भनखोए, अमन, खुत्त, अलबेलड़े, बैरी, दोखी, नरवाह, बैगेरता,
दङ्गारेआ, दागी, फरेब, गैं ।
- (ख) पढ़ो ते मझभो
- | | |
|--------------|-----------------|
| बीरता—कायरता | दोखी—मंदोखी |
| अमन—जुद्द | बङ्गारना—सोआरना |
| बैरी—मितर | हार - जित्त |
- (ग) हेठ लिखे दे शब्दे दे विपरीतार्थी शब्द खल्ल दित्तो दी फैहरिस्ता चा चुनिये
लिखो ।
बीरता, अमन, बैरी, दोखी, बङ्गारना, हार ।
जित्त, जुद्द, कायरता, मन्दोखी, मितर, सुआरना ।

आन-बधायी

1. आजादी बारे ते अजादी आस्तै बलिदान देने आले बोरे बारे जानकारी
हासल करो । बोरे दियां तसबीरां किटिथ्यां करो ।

पद्मा सचदेव

श्रीमती पद्मा सचदेव हुन्दा जन्म 1940 ई० च जम्मू दे प्रसिद्ध तीर्थ स्थान पुरमण्डल च होया । इन्दे दौं कवता संग्रह् छपी चुके दे न - पैहला "मेरी कवता मेरे गीत" ऐ जेदे पर इने गी केन्द्री साहित्य अकैडमी दा पुरस्कार घोए दा ऐ । इन्हा दूबा कवता संग्रह् ऐ "तबी ते चन्हा" । पद्मा होर अज्जकल बाकाशवाणी बम्बई दे विविध भारती स्टेशन च अनौसर न ।

मेरा मन्दा कियां बुजभो

छलैया मेरे देसै दा तुसें दिक्खाआ नेईं सुनेआ,
मेरा मंदा कियां बुजभो, मेरी हीखी कियां जानो ।

पुरे दी वा तुसें नेईं लोरियां गांदी कुतै दिक्खी,
बेड़दी किगरे नें, कीकली पांदी कुतै दिक्खी,
तुसें नेईं सौन म्हीने च धनीए दे बदल दिक्खे,
तुसें नेईं नित्यरें दे सर ते न्हाते दे कमल दिक्खे,
तुसें नेईं दिक्खियां चम्बे दियां कलियां धरोइए,
तुसें नेईं नोतिए दी वासना लैती खड़ोइए,
चमेली दा अमर हासा तुसें दिक्खेआ नेईं सुनेआ,
मेरा मंदा कियां बुजभो, मेरी हीखी कियां जानो ।

तुसें नेईं टिब्बुऐ पर लेटिए गासै नें, गल्ल कीती,
तुसें नेईं चाननी, चन्ने दे उस हासे नें गल्ल कीती,
जो उतरै ठंडिया बरफे दे हास्से चा चनारें चा
चन्हां दी तेज-दौड़ै च, बितस्ता दे कनारें च
डले दी चाननी च, हिलदे छौरें दी छामा च,
मझाटे खेतरें दे नचदै गोरी दी बाह्मां च,
मरीदा चान्दिए दा छनकदा दिक्खेआ नेईं सुनेआ,
मेरा मंदा कियां बुजभो मेरी हीखी कियां जानो ।

बड़े हिरवे में "बोली" बालवे गिल्लु नेहं विल्ले,
 मेरी अकली मैं बारा हावदे छिल्लु नेहं विल्ले,
 कहें पीता नेहं बाड़े दा छम्मा लाइहै जानी,
 तुसें प्हाड़े दे हीके दी कहें दी चीड़ नेहं जानी,
 तुसें नेहं छिल्लाडू तुम्हे कुसे कुसे दी इन्तजारी च,
 तुसें नेहं ओसियां पाइयां परीसी च पतारी च,
 शूं कदी चीड़ कुदरे गिन्तरी पेदी नेहं विल्ली ।
 ऐरा मंदा किया दुर्जको, मेरी हीसी किया जानो ।

प्रश्न-प्रत्यक्ष

1. जन्मे देह के जन्मे बारे पथा तबदेव होरे किस बासी के द्वारा प्रपट कीते हैं ?
2. कौन कहता दा बार जन्मे कहें च लियो ।
3. कौन कहता दा केहडा बन्द तुसेंगी जता जसिए जाना है के की करी जाना जसिए जाना है ?

प्रश्न-प्रत्यक्ष

- (१) हठ लिये दे कर्वे दे कर्वे लियो :—

चीरां, बंदा, पुरीरी, लोरिया, खिलारे, गिरवरेहे, तर, बरोइरे, बालना, टिल्लू,
 और, बरीसा, बोलो, गिल्लु, हावदा, छम्मा, हीमे, छिल्लाडू, इन्तजारी,
 जीसिया, परोसी ।

- (२) आसी जगहें च लिया बन्द भरो :—

1. बरीसा मेरे देसें दा तुसें नेहं कुमेजा ।
2. तुसें नेहं विल्ले दे सर ते भाते दे कमल ।
3. औरी दी चालनी च औरे दी छाँवां च ।
4. बड़े हिरवे के लोलो गिल्लु नेहं विल्ले ।
5. तुसें नेहं जीसिया परोसी च पतारी च ।

प्रश्न-प्रत्यक्ष

१. हृष्ण देह दे ते कम्बोर दे जानेर दार्द जानकारी हासल करो ।

तुनी चन्द्र त्रिपाठी

तुनी चन्द्र त्रिपाठी होर तसील राम नगर दे थां घोरड़ी दे रौहू ने आले न ।
सन् 1944 च इन्दा जन्म होवा हा । इन्दी रचना धारां ते फुहारां “दा प्रकाशन
1974 च होवा हा । एहू नजमें दे कन्नै-कन्नै गजलां बी लिखदे न । नाटके च अभिनेता
बनने दी बी इनें यी खासी रुचि ऐ ।

बदली

ए बदली लट आप-मुहारी,
साढ़े पासै बरदी की नीं !

सागर दी तूं बेटी मोइए,
चाल तेरी मस्तानी ऐ ।
आऊं तरेहाया सेतर अड़िये,
कोल तेरे अत्त पानी ऐ ।

जंगल, जाड़े, धारें बरनी,
जित्यै हुन्दी लोड़ नेई ।
उनें सरें गी भरनी जाइयै,
जिनें गी हुन्दी थोड़ नेई ।

बिन सोचे बिन समझे मोइए,
प्हाड़ गलै कं लानी ऐ ।
छन्दे मिनते नीमी होई होई,
अपना आप लुटानी ऐ ।

जिनें बचैरें गोद पसारी
गोद तूं उन्दी भरदी की नीं ।
ए बदली लट आप-मुहारी ।
साढ़े पासै बरदी की नीं ।

चढ़ी चली तूं ब्हाऊ दे डोलै,
विन्द तेरे मन क्यास नेहं।
उनें बगीचे मोती डोलें,
जिनें च रोहन्दी वास नेहं।

ए उन्दे कुस करने तेरे,
कुस ने गोद बछानी ऐ !
मेरे भा दा अमृत जेका,
उन्दे भा दा पानी ऐ !

कैसी कदर गुआनीं अपनीं,
गल्ल कुस दी मनदी की नीं।
ए बदली लट आप मुहारी,
साढ़े पासे बरदी की नीं।

प्रश्न-प्रब्ल्यास

1. कवि ने बदली गी कुस दी बेटी आखेदा ऐ ?
2. बदली कन्ने किस चाल्ली दी शकैत कीती गेदी ऐ ?
3. कवि ने बदली कन्ने अपना किस चाल्ली दा नाता जोड़े दा ऐ ?

पाठ्य-प्रब्ल्यास

(क) हेठ लिखे दे मुहावरे दे अर्थ लिखो :—

नीभे होना, अपना-आप लटाना, मोती डोलना, गोद बछानी, कदर-गुआनी।

(ख) समानार्थी शब्द लिखो :— जियां : गास = अम्बर, समान,

1. सागर =
2. प्हाड़ =
3. क्यास =
4. बगीचा =
5. कदर =

प्रश्न-प्रधानो

1. अपने अध्यापक हुन्दे बड़ा पुच्छो जे बदल कियां बनदे न ते कियां बरदे न।
2. सौन म्हीने बदले गी ब्हाऊ दे डोलै चढे दे दिकिखाए इस कविता गी धोखो।

चरण सिंह

कवि चरण सिंह हुन्दा जन्म सन् 1941 च तसील साम्बा दे ग्रां बगूना च होआ हा। इक गैं कवता संग्रह “जोत” छपेगा दा हा जिसलै 28 बरे दी उमरी च इन्दा काल होई गेआ। रियास्ती कल्चरल अकैडमी पासेओं “जोत” कवता संग्रह, गी 1966 बरे च नाम दित्ता गेआ हा। इने प्रयोगवादी कवतां लिखियै डोगरी कवता क्षेत्र गी नमी शैली दित्ती।

लामा-फेरे

शुभ-लगनीं इस घडिया गोरी,
कैं होई दिलगीर ??
एह बेला एह घड़ी भागली,
खुशियें भरी चगर।
बाबल हस्सी भाग सराहदा,
नेह उस दे घर नहेर !!

पर तेंरो देह घुटी घुटी की
मसुआं सुरती साम्बे ?
गैं झक्कै की साह, साह, काह, ला
पैर पछेड़ा हाम्ब ??

सूहे चूडे वांहें कलीरे,
छनकन रुनभुन रुनभुन।
फेरे परती सोढ गुआचै
तां ए बल्लै झुनकुन !!

जौल प्याजी धरमी वन्धन,
कैं समझे जंजीर ?
शुभ लगनीं इस घडिया गोरी
कैं होइये दिलगीर ??

एह ओ बेला जिसदी आसा,
दिन वचन दे रेहडे ।
ए ओ घड़ियां जिन्दे चाएं,
खेड़ भलोके खेड़डे ॥

जोबन आया सौ डर जागे,
छाये चार-चफेरे ।
जागो-मीटे रातां गेइयां, दिन
सोचें दे धेरे ॥

चंचल नैन झकी गे आपूं,
लाजे बेड़ी पाई ।
पर आसां अत्त चंचल होइया,
होर बनी गेई फाई ॥

केई बारी मन चानन होआ,
ते भी न्हेरमन्हेरे ।
केई बारीं सुखने दी बेदी,
लैते लामा - फेरे ॥

केई बारी ए धूड़-मतूढी,
मन बस्सी तस्वीर ।
शुभ लगनीं इस घड़िया गोरी,
कै होइयै दिलगीर ??

के होया जे ए मूरत नीं ओ,
सुखने दी मूरत, ?
के होया जे अज्ज मनां गी,
ए जचदी नीं सूरत ??

के होया आसें दी दुनियां,
रेई गेई बनी-बनाई ?
मीत मना दे कुसी मिले न
ए जग होन्दी आई ??

नां रोयां नीं इसलै गोरी,
जे बावल दी धी।
जो होआ सो होआ मोइये
सबर कटोरे पी ॥

बावल धरमी धरम, कमाया
तुम्मी फरज निवाह।
मन मन्दर गी लम्बां लाइये
झूठे भाग सराह ॥

संयोग बड़े बलवान मिथी लै;
अग्नौं रेई तकदीर।
शुभ लगनी इस घड़िया गोरी,
कैं होइयै दिलगीर ! ?

प्रश्न-प्रम्यास

1. इस कवता दा मिरलेख “लामाकेरे” की रक्खेआ गेदा ए ?
2. इस कवता दी गोरी किस कारणा शुभ घड़िया च दिलगीर होई गेदी ए ?
3. जौल कुमी गलांदे न ? उसदा रंग कनेहा होंदा ए ?
4. साली स्थान भरो :—

 1. सूहे चूडे बाहें कलीरे रूनभुन-रूनभुन ।
 2. जौल धरमी बन्धन के समझे ।
 3. केई बारी सुखने दी लैते ।
 4. जो होआ सो होआ मोइये कटोरे पी ।
 5. संयोग बड़े मिथी लै अग्नौं रेई ।

आशा-प्रध्ययन

(क) इनें शब्दे दे अर्थ लिखो :—

दिलगीर, भागली, चंगेर, मराहना, देह, सुरती, भक्कना, हाम्बना, प्याजी,
बन्धन, भलोके, नाज, फाई, घूड़-मत्हूडी, जचना, मबर, फर्ज, लम्बा लाना,
बलवान, तकदीर ।

(८) साली जगहें च सर्वनाम शब्द भरो ।—

1. शुभलगनी.....घडिया गोरी ।
कै होई दिलगीर ?
2. पर.....देह घुटी घुटी की ?
3.बेला जिसदी आसा दिन बचपन दे बीते ।
4. भीत मना दे.....मिले न ?
5. जो होआ.....होआ मोइये सबर कटोरे पी ।

शान्त-बधायो

1. अपने अध्यापक दी सहायता कल्ने डोगरे-व्याह् वारे जानकारी हासल
2. मुङे ते कुड़ी दे व्याह् पर गाए जाने आले डोगरी गीत सुनो ते सिक्ख

विश्वनाथ खजूरिया [25 नवम्बर 1906]

श्री विश्वनाथ खजूरिया, प्रो० रामनाथ शास्त्री ते नरेन्द्र खजूरिया हुन्दे बड़-भाई न। डोगरी दे गद्य लेखकें च इन्दा प्रमुख थाहूर ऐ। इन्दी पैहली गच्छ-रचना “बछूत” नां दा, एकांकी ऐ जिसदी रचना सन् 1935 ध होई दी ऐ। “सप्तक” ते “दुयार दा जीवन दर्शन” इन्दे दीं निबन्ध संग्रह, छपी चुके दे न। “नीलकंठ” [एकांकी संग्रह] पर इनेंगी रियासती कल्वारल अकैडमी थमां 1981 बरे दा पैहुला नाम ध्योआ दा ऐ। इनें हिन्दी, पंजाबी, उर्दू बगैरा दिएं रचनाएं दे डोगरी च मुन्दर अनुवाद बी कीते दे न, जिन्दे च बतौ दे दावेदार, इक चादर मैली जानेई, तीला कमल, सांस्कृतिक संस्मरण, ते “उमराओ जान” प्रमुख न। अज्जकल एहु आत्मकथा लिखा करदे न।

गरसाल कोठी [बड़ भाई]

.....गरसाल कोठे बांगर गै केइयें लोके गी अपनी पुरानी ते गरसाल विचार-धारा गी थुम्मनी देई खडेरी रखने लेई केई उट्ट-नट्ट करने पाँदे न की जे उंदा भलोका पुराना समां हून परतोई नेई सकदा, ते नमें जमाने कन्ने ओ मेल खाई नेई सकदे। इस लेई जिदगानी दियां कौडियां गोलियां ओह-ढालदे गे जंदे न। बिच्चा ओ भाएं सुरसरी खादे बरगें बांगर, खोखले होन, पर पुरानी खानदानी दे टस्के नेई छोड़दे जियां कागज भाएं जली जा, पर उस उपर छपोए, जां लखोए दे अक्खर नेई जलदे। [रस्सी जलने वाला खोअन बी इत्यें पूछ उतरदा ऐ।]

इस चाल्ली दे जिदादिल लोके दी सम्हाल जुगती कन्ने साम्भी रख्खी लोड़चदी ऐ।

स्हाडे बड़भाई होर बी [परमात्मा ने उनेई सुरण-बासा दित्ता दा होना ऐ] इस्सै चाल्लीं दे ज्यूडे हे।

हर मनुकसै, दा उसदी जरम-रासै अनसार, कोई नां रखेआ गै जंदा ऐ। कुसै दा नां “यथा गुण तथा नाम” पाँदा होग। इसदा स्हाडे पल्लै

कोई प्रमाण नेई । आम तौर दिक्खने च इयै आया ऐ, जे जोस्ती होंद
गिनतरी मतावक जरम-रास कन्ने मेल खंदे अक्खरें दी नीह, उपर न
खड़ेरेया जंदा ऐ । मन्नी लौ “ज” ते “न” दे अबवरें कन्ने जुड़दा न
रखोंदा ऐ-जगन्नाथ “जां जगत नरैण” नां रखने के गी इस गल्ला द
जिम्मा नेई जे जगन्नाथ ने बड़े होइयै सच्चें गे “जगत” उपर राज करन
ऐ, जां दिनें दर-दर भिक्ख मंगनी ते रात फुटपाथे जां कुसे हट्टी दे थड़े पर
कट्टनी ऐ ।

बड़भाई होंदे असल नां दा असें ई पता नेई । सब स्यानें व्याणे उनेई
बड़भाई गलांदे हे । अंदाजा ए ए जे, बड़भाई दी अल्ल पैह् लपुज जनानके
मैजरखाने च पैई होनी ऐ की जे जनानियां अपने खसमै कशा निककी उमरी
दे परसानू गी “भाऊ जी” ते बड़ी बरेसे आले गी “बड़े भाई जी जां” “बड़े-
भाई जी” गलांदियां न ते अग्गे चलियै ओह् बच्चें, जनानिएं ते परसानुप
दे सांझे बड़भाई बनी गे । भाएं इयां समझो जे ओ नां “नगर शामलाट”
बनी गेआ ।

इक वारी पसेरी-पसारिये असें उंदा असल नां पुच्छेआ, तां पैह् लें
ओ अक्खीं मीटियै चुप रेह् ते फी अक्खीं खोलियै ते ठंडी-लम्बी सूक्ष्म
सुट्टियै बोले : “अपना नां । पुत्तर जी । ओह् ते अस, अपनी सुरगवासन
घरैआलीं दे फुल्लें साथें गंगा जो इच प्रवाही आए दे आं” ते फी ऊपरले तौर
पर मुस्कराइयै गलान लगे “असल नां तो परमात्मा दा है बेटे !
वाकी सब रख्खं-रखाए दा सौदा है; जो है सो” ते इसदी दलील ए दित्ती
जे कोई छें औंगलीं वाला होआ तां खोआन लगी पेंग्रा “छांगा राम” ते
वसोए आले ध्याड़े जरम ले, तां उसदां नां पैई जंदा ऐ “बसाखी शाह्”
जां बसाखा सिंह। “इक मोकला गड़ाका-मारेआ ते फी गलाया : “इसकरी
हमारे को इस बड़भाई नां उपर कोई उजर नेई !” असें वी इस वारै मती
परचौल नेई पाई बो ए खतोला ते बनेआ गै रेहा, तो उने लाड़ी दे “फुल्ले”
साथे अपना नां किस चाल्ली प्रवाहेआ होग ते फी इन्ना भारा दुख-कसाला
कियां ढाली लेआ होग । आखदेन हलाहल विख पी जाने करी शिवें दा
कैठ नीला-सरबल होई गेआ हा ते उंदा नां गे “नीलकैठ पैई गेआ हा,
पर बड़भाई होंदी नोहारी पर इस वजोगै दा कोई लस्स, कोई नशान नेहा
लभदा । उंदी बोली गंगा-जमनी ही । डोगरी कन्ने ओह् विदरावनी शब्द
वी उड़सी चलदे हे । विच विच ओह्-नजरपटू आंगर, “जो है सो” वी

बत्थी करी लंदे हे । ते कदें मौजै इच आइयै फौहँड मारदे, तोहे हीरन का
कैठा पहिराए देंगे ।”

इस बारे उंदे लंगोटिए यार-फिसरे बड़कुलिए ने दस्सेजा हा, जे घर
जोआनी च स्त्री-वजोग लगने करी ओ घर छोड़ियै इक रास-मंडली कन्ने
जाई रले हे ते खासा चिर मथरा-विदरावन विचें लज्जल होई घर,
परतोए हे । अदूँ कशा उंदी बोली उपर एकड़ा रंग चढ़ो दा हा ।

उनेई ऐसी खो ही जे अपनी गैहँली च गैं टकांदे नै ओ खड़ा
लगी पौदे हे । किश लोकें दा रुधाल हा, जे मता कौड़ा ते बलखी तमाकू
ते सुल्फा पीने करी उनेई खंग होंदी ही । पर सदरो मरासन इसदा किश
होर गै लाना लांदी ही ते इक रोज उस मीरजादियै गलाई गै छोड़ेजा हा,
“बड़भाई जी, बड़ी खचरी खंग छिड़ी ऐ ..दिक्केओ कुते.....”

गल्ल मुककने कशा पैहँलें गैं बड़भाई होर सदरो दी मशकरी समझी
गे ते उसदे कच्छ आइयै बल्लें जनेई बोले : “तेरा नां बी सदरो ऐ ते तूं हैं
बी” “सद्दर” पर इत्यें ऐसी कोई गल्ल नेई है, जो है सो ।”

अपनी हानी दी जनानिएं कन्ने उंदा हासा मखौल चलदा गै रोहँदा
हा । आखदे न इक बारी उनें इक पन्छानूँ विषवा गी बुळसोहागन होने
दी सीस हसदे-हसदे देई छोड़ी । जनानी ने अपने पैरें दा पणोह, लोली ते
उंदे पिच्छे लगी, तां दंद रीकियै ते कन्नें हत्थ लाइय, बोले : “डोडी दी
ताई, भलेखा लग्गी गेजा ..अगडाई ऐसी गलती नेई करऊ” । इयां गै
इक होर जनानी ने, खट - मिट्ठे रोहै कन्नें उनेई तर्क कराई ही : “हून
बुड़ी वरेसा टंडरन लगा ए, लक्कड़ा । इन्ही लग्गा ही तां पैहँलें मरना हा
नां । उसलै गेआ हैं, सिर सा आह, पाइये ..”

बड़भाई होंदा होलिया लगभग इस चाल्ली दा हा :

कह-बुल उंदा किश गोंडा ते इक लत्तै च थोड़ा लडा हा । रंग लारा
उगघड़ेदा; चेहरा चधेर आला लेखा छैन धरे भरे दा, ते नक्क छैन ढालव
हा । मुच्छां उंदियां, मैंही दे बैरेसिडे, आला लेखा, औंठें दे पूरें पर बाइं
कूँद जन मारदियां हियां । उपरली दंदराल दे सामने वाले दीं जां शाय
चौं दंदें गी सुन्ने दियां रेखां लग्गी दियां हियां, बेड़ियां हसदे होई मत

ਕਾਰਾ-ਜਨ ਮਾਰਦਿਆਂ ਹਿਧਾਂ। ਨਕਕੇ ਦੀ ਨੁਤਰੀ ਹਿਟਠੈ ਦੇ ਉਂਦੀ ਮੁਚਲੇ ਦੇ ਵਾਲ, ਪਲੈ ਪਲੈ ਨਸਵਾਰੀ ਦਾ ਸੁਡਕਾ ਲਾਨੇ ਕਰੀ ਪੀਲਤਨੀ ਪਰ ਨਸਵਾਰੀ ਫਿਰੀ ਗੇਦੇ ਹੋ, ਜੇਹੇ ਮਿਗੀ ਵਿਦ ਨੇਹੇ ਭਾਂਦੇ। ਮੁਚਲੇ ਦੇ ਵਾਕੀ ਵਾਲ ਗਰੜ-ਮਰਡੇ ਫਿਰੀ ਆਏ ਦੇ ਹੇ ਤੇ ਉਦਿਆਂ ਵਿਲਿਯਾਂ ਵਿਲਿਯਾਂ ਅਕਵੀਂ ਦਿਕਖੀ ਸੁਨ ਨੇਹਾ ਰਖਦਾ।

ਵਡਭਾਈ ਹੁੰਦੀ ਸ਼ਹਾਡੇ ਪਰ ਵਡੀ ਕਿਰਪਾ ਹੀ, ਕੀ ਜੇ ਧਾਡੀ ਚ ਚਾਰ ਪੱਜ ਵਾਰੀ ਤਮਾਕੂ ਦੀ ਚਿਲਮੈ ਲੈਈ ਅਸ ਗੋਹੁਟੇ ਦੀ ਅਸਾ ਅਪਨੇ ਬਰਾ ਆਨੀ ਦਿਵੇ ਹੈ ਤੇ ਵਾਜਾਰੇ ਦਾ ਸੀਵਾ ਵੀ ਆਨੀ ਦਿਵੇ ਹੈ। ਬਦਲੇ ਚ ਓਹੁ ਅਸੇਂਗੀ ਕੁਜੇ ਦੀ ਮਿਸਰੀ-ਬਦਾਮ ਜਾਂ ਹੋਰੇਂਕੋਈ ਵਸਤ ਦੇਈ ਛੋਡ੍ਹਦੇ ਹੈਂ। ਕਦੇਂ ਗੜਕਾ ਮਾਰਿਧੈ ਅਸੇਂਈ “ਮਸੋਲੇ ਦਾ ਫੰਗ” ਦੇਨੇ ਦਾ ਬੁਤਾ ਵੀ ਦਿਵੇ ਹੈ। ਪੁਚ਼ਨੇ ਪਰ ਤੁਨੋਂ ਦਸੇਆ ਹਾ ਜੇ ਮਸੋਲੇ ਦਾ ਫੰਗ ਜਿਸ ਕਚਚ ਹੋਏ ਓ ਸਾਰੇਂਗੀ ਦਿਕਖੀ ਸਕਦਾ ਹੈ, ਪਰ ਆਪੂਂ ਗੀ ਨਜ਼ਰੀ ਨੇਈ ਔਂਦਾ ਤੇ ਉਸਦੀ ਹਰ ਕਾਮਨਾ ਪੂਰੀ ਹੋਈ ਜਨਦੀ ਹੈ।”

ਅਸ ਮੁਟਠੀ ਵਡਿੜੀ ਚਤੇਦੇ ਜੇ ਕਦੇਂ ਓ ਫੰਗ ਅਸੇਂਈ ਹੋਈ ਜਾ ਤਾਂ ਕੈਸੀ ਮੌਜ ਬਜੇਂਦੇ। ਅਲਫਲੰਲਾ ਦੀ ਕਹਾਨਿਏਂ ਆਲਾ ਲੇਖਾ ਸ਼ਹਾਡਿਆਂ ਵੀ ਕਹਾਨਿਆਂ ਵਨੀ ਜਾਨ ਤੇ ਅਸੇਂਈ ਕਿਸੇ ਚੀਜ਼ ਦੀ ਲੋਡ-ਥੀਡ ਨੇਈ ਰਵੈ। ਪਰ ਅਫਸੋਸ, ਜੇ ਨਾਂ ਕਦੇਂ ਵਡਭਾਈ ਹੋਵੇ ਹਤਥ ਮਸੋਲਾ ਆਯਾ ਤੇ ਨਾਂ ਗੈ ਅਸੇਂਈ ਝੀਦਾ ਫਗ ਗੈ ਘੋਆ।

ਤੇ ਕਦੇਂ ਉਂਦੀ ਬਚਕੀਵਾ ਦ੍ਰੂੰ ਭੇਟਾ ਵਾਗਾਂ ਮੋਹਦੀ ਤੇ ਇਕ ਵਾਂਹ, ਪਰੇਡੀ ਚੁਕਿਕੀ ਏਕ ਹੀਰੇ ਸਟਲਾ ਮਾਰਦੇ :

“ਬੈਟੇ ! ਤੀਹੇ ਹੀਰਨ ਕਾ ਕਣਾ ਪਰਿਹਾਏ ਦੇਗੇ।

ਤੇ ਏਕਡਾ ਲਾਚਾ-ਲਚਾ ਵੀ ਗੇਡਾ ਜੰਦਾ ਜੰਦਾ, ਆਖਰ “ਦਾਖਲ ਦਪਤਰ”, ਹੋਈ ਜੰਦਾ।

ਸਾਥ-ਸੰਤੇ ਦੀ ਸੰਗਤੀ ਕਰੀ, ਜਾਂ ਖਵਰੈ ਛੱਡ-ਮਚਡੇ ਹੋਨੇ ਕਰੀ ਆਹੁ “ਸ਼ਵਧ ਪਾਕੀ” ਹੋਈ ਗੇਦੇ ਹੈ। ਕੁਸੈ ਦੇ ਹਤਥੋਂ ਦੀ ਵਨੀ ਦੀ ਕਚਚੀ ਰਸੀ ਨੇਹੇ ਖਦੇ, ਹਾਂ ਤਸਮੇਈ, ਮਾਲਪੂੜੀ, ਪੂਰਿਆਂ ਜਾਂ ਫੂਏ ਪਕਵਾਨੇ ਦੇ ਵਾਰੈ ਚ ਏਕਡਾ ਨਿਜਮ ਛਿਲਲਾ ਪੇਈ ਜੰਦਾ ਹਾ।

ਉਂਦੀ ਸਾਰੀ ਧਾਡੀ ਦੀ ਕਾਰ-ਕਿਰਤ ਇਸ ਚਾਲੀ ਵੀ ਹੀ : ਪਿਛਲੇ ਪੈਹੁਚਟਿਠੀ ਤੇ ਹਤਥ-ਮੁਹੁ ਧੋਇਥੈ ਤੇਰਾਂ ਚੂਟਿਆਂ ਬੇਹਾ ਪਾਨੀ ਪੀਂਦੇ ਹੈ—ਕਿਥਾ ਜਾਤੇ ਰਸਤੇ ਤੇ ਕਿਥਾ ਨਾਸੋਂ ਰਸਤੈ। ਫੀ ਤਮਾਕੂ ਦੀ ਚਿਲਮ ਸੀਕਦੇ ਹੈਂ ਤੇ ਫੀ ਸਤਾਰ ਲੇਇਥੈ ਗਾਨ ਲਗਦੇ :

“ਖੇਡਨ ਦੇ ਦਿਨ ਚਾਰ ਨਿ ਮਾਏ

ਉਂਦੀ ਵਰੇਸ ਭਾਏਂ ਫਲੀ ਚੁਕੀ ਦੀ ਹੀ, ਪਰ ਰੇਹਾਈ ਉਂਦੀ ਥੈਲ ਤਜ਼ੀਵੀ
ਕੇਂਠ ਸਰੀਲਾ ਹਾ। ਉਂਦਾ ਗੀਤ ਸੁਨਿਧੀ ਛੱਡ ਗੋ ਯਾਂਡ ਤਠੀ ਖੜੋਂਦਾ ਹਾ। ਪ੍ਰਯ^ੴ
ਪਾਠ ਇਚ ਓਹੁ, ਤੈ-ਚਾਰ ਘਡਿਆਂ ਜ਼ਰੂਰ ਲਾਂਦੇ ਹੋ। ਜਪਗੁਥਲੀ ਚ ਹਤਥ ਪਾਇਧੀ ਤ
ਮਨਕੇ ਫੇਰਦੇ ਤੇ ਆਏ ਗੇ ਕਨ੍ਤੇ ਗਲਲ-ਕਤਥ ਬੀ ਕਹਦੇ ਜਾਂਦੇ ਹੋ। ਇਕ-ਅਥ ਵਾ
ਪ੍ਰਯਾ ਦਾ ਤਟਿਧੀ ਨਿਧੇ ਆਲੀ ਪਤੀਲੀ-ਗੀ ਰੇਡਾ ਬੀ, ਦੇਈ ਲੈਂਦੇ ਹੋ।

ਦਪੈਹੁ ਰੀਂ ਉਂਦੀ ਬੈਠਕਾ ਚੌਪਈ ਜਾਂ ਸ਼ਤਰੰਜੇ ਦੀ ਚੌਕੜੀ ਭਖਦੀ ਹੀ
ਖੇਡੈ ਕਥਾ ਮਤੀ ਸਜੇਦਾਰ ਹਾਂਦੀ ਹੀ ਖਡਾਰਿਏਂ ਦੀ ਟਿਕਚਰ ਵਾਜੀ। ਸ਼ਤਰੰ
ਦੇ ਹੋਰ ਬੀ ਖਡਾਰੀ ਹੈ ਪਰ ਜੋ ਰਸ ਵਡਭਾਈ ਤੇ ਫਿਸਰੇ ਵਡਕੁਲਿਏਂ ਦੀ ਖੇਡੈ
ਔਂਦਾ ਹਾ, ਓਹੁ, ਹੋਰ ਕੁਤੈ ਨੇਹਾ ਔਂਦਾ।

ਇਕ ਦਿਨ ਵਡਕੁਲਿਏਂ ਨੇ ਵਡਭਾਈ ਦੇ ਪਾਦਸ਼ਾਹ, ਗੀ “ਬੋਡੇ” ਦੀ ਥੈ
ਦਿਤੀ ਤੇ ਲਾਮੀ ਰੇਹਾ ਲਾਇਧੈ ਗਾਨ ਲਗਾ :

“ਪਿਛੋਂ ਸੈਖ ਅਗਗੀ ਢੀਲ, ਲਾਡਾ ਮਂਗਦਾ ਤਮੋਲ…… ਸ਼ੈਹ, ਵਿਚ ਵ
ਭਾਈ ਹੋਰੋਂ ਥੋਹੁੜਾ ਚਿਰ ਸੋਚੇਆ ਤੇ ਕੀ ਵਡਕੁਲਿਏਂ ਦੇ “ਪਾਦਸ਼ਾਹ” ਗੀ ਜਵਾ
ਥੈਹ, ਦੇਇਧੈਹੋਰਤਚਚਾ ਗਡਾਕਾ ਮਾਰਿਧੈ ਬੋਲੇ :

“ਲਾਡਾ ਮਂਗਦਾ ਤਮੋਲ…… ਵਚਛੀ ਖੁੰਡਿਆ ਦਾ ਖੋਲ……” ਅਪ
ਖੋਤੀ [ਸ਼ਤਰੰਜੀ “ਬੋਡਾ”] ਪਿਛੋਂ ਕਰ ਫਿਸਰੇਆ……”। ਏਕਡੀ ਗਲਲ
ਵਡਕੁਲਿਏਂ ਦੀ ਨਕਲ ਕਰਦੇ ਹੋਈ ਨਕਕੈ ਚ ਗਲਾਈ ਹੀ।

ਇਸ ਬੈਠਕਾ ਚ ਨਮੀ ਪੁਰਾਨੀ ਗਲਲੋਂ ਵੀ ਫਰੋਲਾ-ਫਰੋਲੀ ਬੀ ਹਾਂਦੀ ਹੈ
ਕਿਥਾ ਲੋਕ ਪੁਰਾਨੀ ਗਲਲੇ ਗੀ ਚੇਤੈ ਕਰਿਧੈ ਭੂਰਦੇ ਹੈ……” ਓ ਪੁਰਾਨਿਆਂ ਖੁਰਾ
…… ਓ ਸਿਰੀ ਪੁਲਾ, ਤੇਲਿਏ ਮਾਹ, ਤਿਲ-ਵਾਂਡ-ਖਸਖਾਸ ਤੇ ਮੇਥਰੇ ਅ
ਲੁਗਡੇ…… ਕੁਤਥੋਂ, ਤੇ ਓਕਡੇ ਖਲੇਇਏ ਵੀ ਨੇਈ ਰੇਹੇ ਜੇਹੁੜੇ ਕਢਾਈ ਕਢਾਈ ਤਸਾਂ
ਇਕ ਬੈਸਕੈ ਪਰ ਬੈਠੇ ਦੇ, ਗਰੜ-ਗਰੜ ਕਰਦੇ ਢਾਲੀ ਜਾਂਦੇ ਹੈ ਤੇ ਭਠੀਰੇ ਸੈ ਕਕਖਰੇ
ਦੂਆ ਬੋਹਾਸਰਦਾ। “ਓ ਪੁਰਾਨਾ ਲਾਵਾ, ਪੁਰਾਨਿਆਂ ਬੀਕਾਂ ਨੇਈ ਰੇਝਧੀਆਂ, ਵਡਭ
ਜੀ ! ਕੋਈ ਪਰਹੇਜ ਨੇਈ ਕੀਈ……” ਜਿਸ ਚਾਲੀ ਕੁਸੈ ਕੁਟੇ ਪਰ ਬੈਠੇ
ਪਕਖਲੁ ਚੁੰਜੇ-ਚੁੰਜੇ ਅਪਨੇ ਫਗ ਫਰੋਲਦੇ ਨ, ਇਧਾਂ ਗੈ ਵਾਰੀ ਵਾਰੀ ਸਵ ਅਗ
ਦੁਖਡਾ, ਅਪਨਾ ਖੂਰਾ ਫਰੋਲ ਨ ਲਗਦੇ : ਇਕ ਗਲਾਟਾ : ਜਮਾਨੇ ਗੀ ਅਸਗ ਲਗੀ
ਏ। ਵਡਭਾਈ। ਅਜ਼ਜੈ ਕਲੈ ਦੇ ਜਾਗਤ ਸਿਰੇ ਪਰ “ਪਾਨ” ਜਾ ਅਥਾ ਨੇਈ ਕਢਾਂ

ਸਮੈ-ਲਾਵੇ ਵੀਦੇ ਰਖਦੇ ਨ। ਦਾਢੀ-ਮੁੜਾਂ ਇਸ ਚਾਲਲੀ ਸਾਫ਼ ਕਰਾਨ ਲਗੇ ਨ,
ਆਖਚੰ ਭਵਰ ਕਰਾਈ ਦੀ ਹੋਏ।”

ਤ੍ਰੂਪਾ : ਸ਼ਹਾਡੇ ਗੋਗ੍ਰਾਂਡ, ਭਡਕਾਲੇ ਕੁਕੜ ਰਕਖੀ ਲੇ ਨ। ਕਿਨਾ ਨਥੇ ਏ
ਭਾਊਪਾ।

ਵਡਭਾਈ : ਰਖੀ ਲੇ ਨ ਤਾਂ ਕੇਹੁ ਹੋਈ ਗੇਅਗਾ। ਸਥਾਨੇ ਵੀ ਸਿਕਲ ਨੇਹੁੰ ਸੁਨੀ ਵੀ
ਤੋਹੁ ਘਰਾਂ :

“ਕਬੀਰਾ ਤੇਰੀ ਭੋਂਧਡੀ ਗਲ ਕਟਿਧਨ ਕੇ ਪਾਸ।

ਕਰਨ ਗੇ ਸੋ ਭਰਨ ਗੇ, ਤੁਂ ਕਧੋ ਮੈਥਾ ਉਦਾਸ ॥”

ਤ੍ਰੂਪਾ : ਓਾ ਤੇ ਠੀਕ ਏ ਵਡਭਾਈ : ਵ ਮਿਗੀ ਕਸਾਲਾ ਏ ਏ, ਜੇ ਕੁਕੜ ਸ਼ਹਾਡੇ
ਵੇਹੁੜੇ ਆਈ ਵਿਟ੍ਠ ਕਰਦੇ ਨ ਤੇ ਵਿਟ੍ਠੂ ਉਪਰ ਪੈਰ ਰਖੋਈ ਜਾ ਤਾਂ ਸੱਤ
ਕੁਲੀ ਨਰਕ ਜੰਦਿਆਂ ਨ।

ਚਿਧਾ : ਸ਼ਹਾਡਾ ਜਾਗਤ ਜਾਤ-ਕੁਜਾਤ ਨੇਹੁੰ ਦਿਖਦਾ। ਹਰ ਕੁਸੈ ਕਨੇ ਵੇਹਿਚੇ
ਖਾਈ ਪੀ ਲੈਂਦਾ ਏ। ਉਸਦੇ ਹਤਥੀ ਕਲ-ਕਲੋਤਰ ਅਸੋਈ ਪਿਣਡ-ਪਾਨੀ
ਕਿਧਾਂ ਪੁਜਗ।

ਵ ਇਸੰਚਾਲਲੀ ਕੁਸੈ ਗੀ ਏਹਭੂਰਾ ਖਾ ਕਰਦਾ ਹਾ ਜੇ ਰੰਗੇਜੀ ਪਛਿਥੈ ਉਸਦੇ
ਜਾਗਤ ਚੀਡੇ ਹੋਈ ਜਾਨਾ ਏ ਤੇ ਅਪਨੀ ਗਲੀ ਗੀ ਧੁਮਮਨਾ ਦੇਨੇ ਲੇਈ ਓਹਾਂਗਲਾਂਦਾ
ਨੁਮੇ ਸੁਨੇ ਦਾ ਨੇਹੁੰ ਵਡਭਾਈ ਜੀ ਅਖੇ :

ਆਵ ਆਵ ਕਰ ਮੋਆ ਵਚਚਾ-ਫਾਰਸਿਏ ਘਰ ਗਾਲੇ।” ਤੇ ਕੁਸੈਗੀ ਇਸੰ
ਗਲਲਾ ਦਾ ਚੌਡਾ ਖਾ ਕਰਦਾ ਹਾ ਜੇ ਜਨਾਨਿਏ ਇਚ ਓਹਾਂਗਲਾ ਸਤਰ ਪਦਾ ਨੇ
ਰੇਹਦਾ

ਵਡਭਾਈ ਹੋਰ ਸਾਡਿਆਂ ਗਲਲਾਂ ਸੁਨਦੇ ਤੇ ਅਕਖੀਂ ਮੀਟਿਥੈ ਕੁਸੈ ਢੂੰਗੀ ਸੋਚੰ
ਚ ਪੇਈ ਜਂਦੇ। ਉਂਦੇ ਮਨੇ ਚ ਕਿਨੀ ਖੀਦਲ ਮਚੀ ਦੀ ਹੌਂਦੀ ਹੀ, ਉਸਦਾ ਲਾਨਾ
ਇਸੰਗਲਲਾ ਥਮਾਂ ਨਗੀਂ ਸਕਦਾ ਏ ਜੇ, ਥੋੜੇ ਚਿਰੋਂ ਉਂਦੇ ਓਠ ਓਪਰੇ ਜਨੇਹੁੰਦੇ
ਕਨੇ ਫਰਕਨ ਲਗਦੇ ਤੇ ਸਜ਼ੈ ਹਤਥੈ ਦਿਆਂ ਔਂਗਲੀਂ ਇਸ ਚਾਲਲੀ “ਤੁਸ-ਤੁਸ”
ਕਰਨ ਲਗਦਿਆਂ, ਆਖਚੰ ਕੋਈ ਮਦਾਰੀ ਅਪਨੇ ਥੈਲੇ ਵਿਚਚਾ ਢਾਕੇ ਬਂਗਾਲੈ ਤਾ
ਚੁਰਲ ਤੁਧਾ ਕਰਦਾ ਹੋਏ। ਤੇ ਫੀ ਅਪਨੀ ਮੀਟੀ ਵੀ ਅਕਖੀਂ ਖੋਲਦੇ, ਤੇ ਲਮ਼ਾ
ਠੰਡਾ ਸਾਹੁ ਭਰਿਥੈ ਗਲਾਂਦੇ :

सज्जनो ! तुसाडा दुख कसाला औं समझा करना । अपने थाह् र
तुस वी ठी कला करदे ओ, पर इस इच मरोड़ी ए ए जे तुस इस केड़े समें
दा रौं नेईं दिक्खा करदे-नमें जमाने दी नाड़ नेईं पछाना करदे । मेरी गल्ला
दा रोह्, नेईं बुज्झेओ । हून स्हाडा ओ भला भलोका समां लंधी चुका
दा ए । स्हाडी पुरानी विचार धारा, ओह् पुरानी राह्, रीत पुरानी कोठी
आला लेखा गरसाल होई चुकी दी ए । इसदे बाँते शह् तीरें गी पुरानी
सोचें दी सुस्सरी विच्चों-विच्च खोखला करी गेदी ए । इस दियां कंधां
कुतेआ लक्षियां, कुब्बियां होई चुकी दियां न । इस गरसाल कोठी ने
ढौना-गैं-ढौना ए ।"

तुसाडा भलोका समा हून परतियै नेईं औना । तुस जिन्ने मरजी
भूरो, रोबो रड़ाओ" आक्खनै गी ओह्, एकडियां गल्लां आक्खी ते छीड़दे,
पर उंदे भेती जानदे हे जे उनेंगी वी अपने भलोके समें, अपनी पुरानी
विचारधारा कन्ने बड़ा मोह् हा । पर उंदे च बाढ़ा ए हा, जे ओह्, नमी
विचारधारा कन्ने समझौता करियै दिन काटी करना मुनासब समझदे हे ।

अज्ज अस समझने आं जे बड़भाई होर नमे ते पुराने समे दे दमेली
पर खड़ोते दे हे, जिस चाल्ली रातीं दे न्हेरे ते कलदारा बेले दी लोई
मझैटे भुसमुसा होंदा ए ।

बड़भाई होर जीवन दी कौड़तनै गी गुड़ च गलेफियै ढालदे जा करदे
हे । संझा बेले औ केसरी "विजया" केसर, वदाम, चारमगजें आली भंग
[घोटियै पींदे ते उपरा दौं चार "दम" लांदे ते फी गाने दी मैह्-फल
भखदी । इस मैह्-फल च उंदे केई साथी होंदे हे भंडो मरासी, दित्तो दुसाली
ते जग्गो भीर । दित्तो दरबारी गवैया हा । बड़भाई होर हर साज बजाई
जानदे हे, पर सितार बजाने च उस्ताद मन्ने जंदे हे । ए सब किश उनें
रासधारिण कन्ने रोहिये सिक्खेआ हा ।] भंडेखां दे तान-तोड़े पर खुल
होईयै ओ वाह्, परेडी लोआरियै गलांदे : "वाह, नेईं रीसां मीर जादेआ
तोहे हीरन का कैंठा पहिराए देंगे ।"

इस गै ओ होली दा तेहार बड़ी रीझे कन्ने मनांदे हे । बड़ी होली
आले ओ अपनी मित्तर-मंडली गी केसरी विजया पल्यांदे ते "जाह्-
खेलत हारी" गांदे गांदे, पछकारियां भरी भरी रंग सुटदे ते सू-

अलते दा टिक्का उंदे मत्थै लांदे । नमीं, पुरानी भाविएं दे घर जाई हो
खेड़े हे ।

रातों उंदी बैठका “होरी कजरी दी मजलस लगदी । बड़कुलिए
इक दीं होर सास मित्तरें दी जोरदार करमैश कदें कदें ओह नर्तक आ
इक पुशाक लाइयै कत्थक नाच करदे हे । ढलदी वरेमै दे उस कलाकार
पैरें दी थिरकन ते अंग-अंग दी लोच दिकिखयै शनाशमंद लोक वी फड़व
उठदे हे ।

ठौकरें दे बरतै उपर उनेई गुड़डे चढ़ाने, पेचे लड़ाने ते गुड़डे लुट्ठ
दी बड़ी शौंक ही । म्हीना भर पैहलें ओ पतंगां, ते गुड़डे बनान ते मां
लान लगी पौंदे । आपूं पेचे लड़ाने परंत ओ गुड़डे लुट्ठन लगदे । इस ते
उनें एक लम्मे टम्मनै कन्ने फिलियां बन्नीह, दियां हाँदियां हिआं । कटो
दे गुड़डे गी ओ इस टम्मनै कन्ने अडम्बी लैंदे हे । इकबारी इस्से चाल
गुड़ा लुट्टे लुट्टे ओह, कोठे परा बटोई पे हे ते अपनी लत्त भन्नी बैठे हे ।

कोई जागत छैल पेचा लडांदा तां, बड़भाई होर अपने कोठे परा
बाहीं लोआरियै जोरें गलांदे : जीते रौह, सूरमे ! तोहे हीरन का कं
पहिराए देंगे ।”

ओ कदें कदें संस्कृत दा बड़ा मजेदार अर्थ [जाँ अनर्थ] करदे हे
इक बारीं चौकड़ी च बैठे दे उनें “सर्वे भद्राणि पश्यन्तु……” दा अ
दीजा हा ……सब लोक भद्रां करान, पञ्च कुसं गी, नेई लबगे ……
सुनियं पन्त मंडली हस्सी हस्सी दोहरी होन लगी ही । इस्से मेल त
इक होर गल्ल ऐ । पक्के डंगे च तमाकू दी बड़ी मणहूर हट्टी ही । हट्ट
वाला बड़ा खुश रैहना हा । उसने अपने स्पैशल कौड़े तमाकू दा वपारी
रखे दा हा ……वशीकरण तमाकू । बड़भाई होर उसगी बछो-यन्ना
तमाकू आखदे होंदे हे ते इस नां दी सफाई ओ इस-चाल्ली दिदे हे :

“ए बछो-वन्नह, तमाकू म्हातड़ मलंग गी सीकी सकदे न, जिदे ढ
अंदर हून फकोने लेई किश वाकी नेई रेहदा । होंर कोई इसगी द्वित्तक
कशा पैहले वच्छी सरहे नै वन्नीह, लै । [मरदें होई मनसने लेई] ।

इन्ने मन-मौजी होंदे होई वी, बड़भाई होर कदें कदें एकड़ा ज्ञान वं

वखानदे जे ए संसार नाशवान है। जेहँडा घड़ोआ उस इक रोज भज्जना
ऐ.....इक रोज उनें अपने मितर गी गलाया हा :

“भाई बड़कुलिया ! मेरे आली कोठी वी गरसाल होई चुकी दी
ऐ। हून इसदा हारान्यारा करने दा समां आई गेआ ऐ.....”

ते इक रोज बड़भाई होर कुम्भ शनान करन चली गे। पर गे ऐसे
जे उनें मुड़ियै परतोने दा नां नैई लेआ। शुरू शुरू च उंदे जोटीदारें चेतेग्रा,
जे कुसै कणीवाले महात्मा दे चरण पकड़ी ले होने न उनें। हून कोई सिढ़ी
करियै गै परतोडन ते स्हाड़ा ए ल्याल हा जे ममोला वंच्छी तुपदे-तुपदे,
खशी भाएं हिमालय उप्पर जाई चढ़े होन। हून उनें ममोला लेइयै गै औना
ऐ। पर गेदे सबैहँ र मता गै चिर होई गेआ ते नां गै ओपरतोए ते नां गै
उंदा कोई सुखसांद गै आया तां “अदम पते च, लोकें बड़भाई गी सुरा-
वासिएं आले खाते इच सुट्टी छोड़ेआ !

सै, ए हा उस आदमी दा जीवन-चित्तर, जेडा टिचकरबाज नम्बर
इक ते उच्चे दर्जे दा कलाकार हा। जिसने अपनी गंडी दा कदे कुसैई पैहा
डब्बल नेहा दित्ता। पर हर कुसै गी हीरें दा कैंठा पोआने कशा घट्ट
फौहँड़ नेहा मारदा। जिसदे हासेन्गड़ाके सुनियै, इयां वझोंदा हा जे ओ
परमेश्वर दी जान्नी आए दा ऐ। पर जिसदे कालजे गी स्त्री बजोरे ने
अंदरो अंदरी छाननी करी छोड़े दा हा ते अपना नां, लाड़ी दे फुल्लें सार्थे
गंगा जी इच प्रवाही आए दा हा। जिसनें अपनी इक गैं पुराने अकीदें,
पुरानी रैहँत बैहँत इच ते अगला पैर नमीं चेतना, नमी लोई पासै बधाए
दा हा। ए उऐ आदमी हा, जिसने पुरानी रैहँत-बैहँत कन्ने ममता रखदे
होई बी नमी राज-रसम कन्ने समझौता कीता हा जिसदे असल नां दा उमर
भर कुसैगी पता गै नैई हा लगा ते निकके-बड़डे, जनानिएं-मर्दे, व्याणे
स्थाने दा बड़भाई गै खोआंदा रेहा।

प्रश्न-छव्याल

1. गरसाल कोठी बारै अपने बचार स्पष्ट करो।

2. बड़भाई हुन्दा रेखाचित्तर अपने शब्दे च लिखो।

3. हेठ लिखे दे प्रश्ने दे उत्तर लिखो :—

[अ] बड़भाई होर अपने नां बारै केह, आखदे दे ?

[३] भलोके समें दे लोक कुक्कड़ पालने दे वरोधी की हे ?

[४] [भूरी सिंह गी अपने जागतै बारे केह खड़ा हा ?

[५] बड़भाई होरे भूरदे लोकेंगी केह सिक्ख मत दित्ती ही ?

[६] बड़भाई होर नमी परानी विचारधारा बछकार दमेल जन कियां खड़ोते दे हे ?

४. इने पर मुख्तसर जनेह नोट लिखो :—

ममोसे दा कंग, हीरण का कंठा, जपगुथनी, बड़भाई दी शतरंजै त्री वाजी,
बड़भाई दी पतंगबाजी ।

५. बड़भाई बाला सेखा कोई होर तुमें कुदरे दिक्खे दा होए तां उस बारे पन्द्रों
वाक्य लिखो ।

६. इने शब्दों ते वाक्यांशों दा प्रयोग करियै उदा भाव स्पष्ट करो ।

मशकरी, गरड़-मरड़े खट्टमिट्ठे, मुलका, बच्छावन्हह, तमाकू, दमेल,
बदमपते, सटल्ला, केसरी विजया, आब, मजलस लगना, अडुम्ही लेना,
हलाहल, नीलासरबल, सूरमा ।

१. इस सेवे च बरतोए दे संज्ञा शब्द हेठ दित्ती दियें खाली जगहें च भरो :

१. सब जयणे सेवाने उनेंगी.....गलांदे हे ।

२. बड़भाई हुन्दी साडे पर बड़ी.....ही ।

३. बदले च ओह असेंगी.....देई छोड़दे हे ।

४. नां कदें बड़भाई हुन्दे हृथ.....आया ते नां गो असेंगी ओदा...
प्होआ ।

५. बड़भाई होर नमें ते पराने समें दे.....पर खड़ोते दे हे ।

विजयपुरी [सन् 1952—]

डॉ० विजय पुरी होर जम्मू दे रौहने आले न। इनें पन्त नगर युनिवर्सिटी थमां वैटनरी डाक्टरी वी शिक्षा ते ट्रैनिंग ग्रैहण कीती 1966 बरे च इनें जम्मू च इक बालसंघ दी स्थापना कीती जेहङ्गा इक प्रभावशाली संघ हा ते चार-पञ्ज बरें तगर कार्यशील रेहा। इस्सै सिलसिले च इनें बच्चें लेई इक पत्रिका “पनीरी” दे इक अंक दा सम्पादन बी कीता। शीराजा डोगरी च इन्दियां ‘किश कवता’ ते लेख बी छपे दे न।

साढ़ा शरीर-इक अजैबघर

जिस चाल्ली अजैबघरा च अजीब चीजें दा संग्रह होंदा ऐ, उस्सै आंगर साढ़े शरीरे च बी केई करिश्मे भरोचियां बन्न-सवन्नियां चीजां बरीकों ते कारीगिरी कन्ने बनाने आले ने सजाई दियां न। इन्दी भलक मातर दिक्खियै तुसेंगी चवात लगे बगैर नि रौहण।

साढ़ा शरीर इक कारखाने आंगर ऐ। जियां कारखाने गी हिदायतां देने आला इक प्रशासन केन्द्र होंदा ऐ उस्सै चाल्ली साढ़े शरीरे गी बी मौके-मौके उपर नर्देश देने आला अंग “दमाक” ऐ। इस्सै दे तैहत पूरा शरीर कम्म करदा ऐ।

शरीरे पर कुदरत ने बड़ी बरीकी ते समझदारी कन्ने इक कोट कीता दा ऐ। ए कोट शरीरे दा ओह अंग ऐ जेहङ्गा वाकी सारे अंगें शा तेजी कन्ने बधदा ऐ पर की बी उन्ने दा उन्ना गै रौहन्दा ऐ। ए अंग ऐ चमड़ी। साढ़ी चमड़ी दा कम्म छड़ा शरीरे दे मासे दी रखवाली करना गै नेई ऐ वल्के इसदे उपर बड़ा बड़ी जुम्मेदारी ऐ। चमड़ी दी तैई च केई निवकी-निकियां गिलियां चुप-चपीते खूने दी सफाई करन लगी दियां रौहदियां न। परसा खूने दी मैल होंदी ऐ ते इब्बी चमड़ी राहें गै बाहर निकलदा ऐ।

चमड़ी राहें गै असैगी पता लगदा ऐ जे अज्ज ठंड ऐं जां गर्मी।
कोई तुसेंगी चुब्भ करा तां उसदी पीड़ दा स्नेहा चमड़ी गै दमाके गी भेजदी
ऐ। नैह् ते वाल वी चमड़ी च किश खास गिलिट्यें राहें पैदा होंदे न, जेहंडे
मनुखी शरीरै दी रखेआ लेई बड़े जरूरी अंग न।

जिस चाल्ली इट्टें दी कन्ध बनदी ऐ ते कन्धें दा मकान बनदा ऐ,
इसै चाल्ली साढ़े शरीरै दे अंग वी निक्की-निक्की अरबें कोशिकाएं दे
किट्ठै कन्नै बने दे न।

चमड़ी दे किश कम्म होर वी हैन। ऐ इक चाल्ली दा तेल वी पैदा
करदी ऐ। सदियें च जदूं परसा नेई ग्रौंदा तदूं वी बनैन इक थिन्दै कन्नै
मैली होई जन्दी ऐ। इत्थुआं पता चलदा ऐ जे चमड़ी तेल नां दी चकनाहट
पैदा करदी ऐ। जिल्द शा, हर पल बेजान कोशिकां, जेडियां सारें दी जिन्दू
दी उप्परली तैह, बनान्दियां न, झडियां रौह दियां न। इस तेले कन्नै रलिये
ऐ जिल्दै दियें म्होरिये गी बन्द करी ओडियां न। स्याने लोक न्हैनें दी
मलाह, इसै करिये दिन्दे न जे इनें बेमतलब कोशिकाएं कन्नै म्होरिये गी
बन्द होने शा बचाया जा।

चमड़ी दी इक खूबी तरल पदार्थे गी जज्व करने दी वी ऐ। चमड़ी
गी नेलै दी मालश करने कन्नै एह, चमकीली, लचकीली ते नरम होई जन्दी
ऐ। इत्थुआं स्पश्ट ऐ जे एह, तेल अपने अन्दर जज्व करी लैंदी ऐ।

जिल्दै दे हेठ लहुए दी खासी चिकदार होंदी ऐ। इथ्यें खून बड़ी
बरीक नालिएं गहें पुजदा ऐ। इनें नालियें दा जाल बड़ा गै म्हीन होंदा ऐ।
इयां गै साढ़ी चमड़ी हेठ मास वी होंदा ऐ, जेहंडा हहुयें उप्पर बड़े स्हावै-
कतावै कन्नै बनकोए दा होंदा ऐ। ए सारा मास गिनी भिथी दियें
मासपेशियें दा बने दा होंदा ऐ। मुट्टे जां पतले सबनें मानुएं दा शरीर
लगभग छे सौ दो मासपेशिएं कन्नै बने दा होंदा ऐ। इनें मासपेशियें च इक
खास किस्मा दी खंड जिसी “गुलूकोस” आखदे न, कुदरत ने साम्बिये रखवी
दी होंदी ऐ ते इसैं खंड दी बक्ति कन्नै मासपेशियां कम्म करदियां न। जिन्ना मता
इनेंगी प्रोटीन नां दे पदार्थ दियां बनी दियां होंदियां न। जिन्ना मता

साढ़े शरीरै दा इक हिल्लने-भुल्लने आला ढांचा ऐ, जेदे च लम्घी-

छुट्टी, तुरड़ी-मुरड़ी के इयें चाल्लीं दियें हड्डियें दी कुल गिनतरी दो सौ छे [206] ऐ। दिक्खने गी हड्डी वशकक सस्त चीज ऐ पर एब्बी जीदी कोशिकाएं दी गै बनी दी होंदी ऐ। करीम रोल (Cream Roll) अन्दर जियां नरम पदार्थ भरोए दा होंदा ऐ उयां गै हड्डियें दे विच्च अस्थि-मज्जा नां दा चीकना जनेहा पदार्थ होंदा ऐ। शरीरै दी रखेआ गितै अस्थि मज्जा दा चेचा कम्म करने आलियें कोशिकाएं दा जन्म होंदा ऐ। जोड़ियां सूनै दे जरिये सारै फैली जन्दियां न। कुदरते ने इसै चीकने पदार्थ च लोड़ै बेल्वे जरूरत पूरी करने ताँई साम्बिए खून स्टोर कीते दा होंदा ऐ।

दन्द वी हड्डियें दी गै इक किस्म न। इन्दे च फर्क एह् ऐ जे ए भज्जी जान तां जुड़ी निं सकदे। शरीरै दा सारें शा सस्त पदार्थ होंदा ऐ “एनेमल”। ए कुदरते ने दन्दे पर चाढ़े दा ऐ। दन्दे परा इक वारी एनेमल भुरी जां भज्जी जा तां पूरी जिन्दगी ओ फी निं बनी सकदा।

जेल्वे अस टैलीफून राहें कोई गल्ल करने आं तां ओह्, गल्ल विजली दियें लैहरें च वदलोई जन्दी ऐ ते जेल्वे ओ लैहरां दूए टैलीफूने च पुजादिया न तां उनेंगी की अवाजै च वदली दित्ता जन्दा ऐ। उयां गै साढे दमाकै ने पूरे शरीरै कन्नै इये-जनेह् करोड़े टैलीफूने राहें प्रपना सरवन्ध जोड़े दा ऐ। साढे शरीरै च वी विजली हर बेल्वे खिट्टां मारदी रौह् दी ऐ। जेल्वे कोई चीज अस सुनने आं तां ओ दमाकै तगर पुजने शा पैह् ने विजली दियें तरंगे च उलीफून अंगर तब्दील होइयै अपना रूप वदलदी ऐ। दमाकै इने तरंगे राहें गै बुझदा ऐ जे असेंगी केह् सनोचा दा ऐ।

दमाकै दियां दो बन्डां न-सज्जी बंड ते खब्बी बंड। अक्सर आदमी दे दमाकै दी खब्बी बंड सज्जी बंडे कोला तगड़ी होंदी ऐ। इसै करी साढे सज्जे अंग खब्बे अंगे शा शेहार होंदे न। जिसदे दमाकै दी सज्जी बंड तेज होऐ उस माहूनु दे खब्बे अंग तेज होंदे न।

दमाकै च केई चालियें दे दूह् ग होंदे न। आखदे न जिसदे दमाकै दे ए दूह् ग मते गैह् रे होन, ओ जन्मे शा गै तेज ते बुद्धिमान होन्दा ऐ।

अविखयां साढे शरीरै नमुल्ला कैमरा न। इन्दे च आतशी शीशा वी होंदा ऐ। उयै शीशा जिसी धुपा रविखयै कागजै उपर सूरजै दी लो सूट्टो तां कागज सड़ी जन्दा ऐ। अविखयें च अत्थरूं वी होंदे न जेह् डे हर

बल्ले थोड़ी मात्रा च पैदा होंदे रहेंदे न ते इनेंगी सेड़ी रखदे न । अत्यरं
अक्खीं दे आने दी धूड़ ते मैल साफ करदे न अत्थरुं नि होन तां अक्खीं पर
चप्पा-चप्पा धटा जम्मी जा ।

शरीरै च “कन्ने” दा कम्म बी बड़ा जरूरी ऐ । ए सुनने दे लावा
मनुक्खी शरीर च संतुलन बी बनाई रखदे न । शरीरै च संतुलन गी बनाई
रखने आस्ते साढ़े कन्ने च इक लैबल ऐ । केई वारी गोल चक्कर मते
वारी कट्टो ते सिर धुमकी जन्दा ऐ । इससे लैबल दे अन्दर मजूद तरल
पदार्थ दे चक्कर कट्टने करी इयां बझोदा ऐ ।

नक्क बी शरीरै दा जरूरी अंग ऐ । इसदा कम छड़ा खश्बो ते वदबो
दा सिवना गै नेई इसदे होर बी मते हारे कम्म न । साह गी साफ करना
ते इसी दना सेक पजाना ते ऐ गै, पर इसदे कन्ने कन्ने रुट्टी पचाने च बी
इसदा हृथ ऐ । खाने आली चीजें दी सगन्ध जेल्ले नक्के च पुजदी ऐ उसले
दमाक मेह दे गी तेआर होने दा स्नेहा भेजदा ऐ । भेदा तेआर नेई होऐ तां
अस वगैर मर्जीं जो बी खाचै उसदा पूरा फायदा शरीरै गी नेई पुजदा ।

शरीरै च इन्ना किश हरानगी भरोचा ऐ जे इसदा अध्ययन करने
गी पूरी जिदगी कोई लगा रखै तां बी थोहड़ा ऐ । असें चमड़ी, मासपेशिएं,
दमाक, कन्ने ते नक्के दियें गै किश खबियें वारै चर्चा कीती ऐ । अजें
जीहव, स्पर्श, लहु, लसीका, किश गिलियां, रुट्टी पचाने आले ते साह,
लैने आले तन्तु, लहु साफ करने आली मशीनरी आदि वारै किश बी
जानकारी नेई देई सके जिन्दे वारे तुसेंगी जानकारी होई ऐ उन्दे राहें तुस
इस शरीरै दी कारीगिरी ते करामाते दा अन्दाजा लाई गै सकदे ओ ।

प्रश्न-शम्यास

1. लेखक ने शरीर गी इक अजैवघर की आखे दा ऐ ?
2. चमड़ी शरीरै दे केहडे-केहडे कम्म औन्दी ऐ ?
3. शरीरै च मासपेशियें ते हड्डियें दी गिनतरी किन्नी होंदी ऐ ?
4. नक्क, कन्न ते अक्खियें दे कम्में दा व्यौरा देओ ।
5. दमाक दियां किन्नियां बडां न ? इन्दा शरीरै दे अंगे कन्ने केह सरबन्ध
होन्दा ऐ ?

अपने अध्यापक कशा शरीरे दे वाकी हिस्से बारे जानकारी हासल करो ।

[क] हेठ लिखे दे वाक्यें चा ठीक वाक्यें पर नशानी [√] लाओ ।

1. साढ़ा शरीर इक कारखाने आंगर ऐ ।
2. स्थाने लोक न्हीने दी सलाह् नेई दिन्दे ।
3. जिल्दै दे हेठ लहुए दी खासी मिकदार होंदी ऐ ।
4. मुट्टे जां पतले सबने मानुएं दा शरीर अनगिनत मासपेशिएं दा बने दा होंदा ऐ ।
5. मासपेशियां खंडू दियां बनी दियां होंदियां न ।

[ख] इनें पंगतिएं गी समझिए हेठ लखोए दे शारीरक अंगे ते तस्वें पर मुख्तसर नोट लिखो :—

1. खूनै दी नालियें दा जाल बड़ा गै मर्हीन होंदा ऐ ।
 2. ए सारा शरीर गिनी मिथी दी मास पेशिएं दा बने दा होंदा ऐ ।
 3. मासपेशिएं चा गुलूकोस नां दी खण्ड निकलदी ऐ ।
 4. मांश पेशियां प्रोटीन नां दे पदार्थ दियां बनी दियां होंदियां न ।
 5. दमाकै दियां दो बंडा न-सज्जी बंड ते खब्बी बंड ।
- खूनै दियां नालियां, मासपेशियां, गुलूकोस, प्रोटीन, दमाकै दियां बंडां ।

बीणा गुप्ता [अक्टूबर 1950—]

डॉ० बीणा गुप्ता होर जम्मू युनिवर्सिटी दे डोगरी रिसर्च सेटर च लैंबवरर न। इने 'डोगरी वाक्य विन्यास' पर शोध प्रबन्ध लिखियै पी० एच० डी० दी डियी प्राप्त कीती दी ऐ। इन्दे भागा-विज्ञान, लोक-साहित्य, डोगरी-साहित्य, आलोचना पर कई लेख प्रमुख पत्रकाएं च छपे दे न। डोगरी सिक्खने आले आस्तै इने "हिन्दी डोगरी वातलिप मंदशिका" "नां" दी इक पोथी लिखी दी ऐ जिसी डोगरी गिर्च मेटा नै प्रकाशन कीते दा ऐ।

समाचार-पत्र (अखबार)

अज्जै दी नभीं खबर केहे, ऐ।

ए सोआल इक दूए गी मिलने पर उने, दिने दी पुच्छेगा जन्दाहा नहूँ अज्जै आला लेखा अखबारां नेई हियां होंदियां। भला सोचो नै सेई, उने दिने खबरा कियां हासल होंदिया होइन। अहूँ आम तौरा पर गत्रुएं राहें गै इक थाह्‌रा दियां खबरां दूए थाह्‌र पुजदियां हियां। जेकर कुतै खास घटना होई जंदी तां ओदी खबर खास दूते राहें लोके तगर पजाई जन्दी ही। राजे-महाराजे दे अपने दूत होंदे हे। एहूँ लोक दौड़दे-दौड़दे इक दूए गी खबरां देई दिदे हे। सोहु गी घुंघरू बनियै जेल्लै कोई दूत रीड़दा औंदा तां ओह्‌दे लेई रस्ता छोड़ी ओड़दे हे। जेकर खबर तोंति गै जानी होऐ तां थोड़े दा इस्तेमाल वी कीता जन्दा हा।

पर अज्ज नेहीं हालत नेई। संसारे दे कुसे वी हिस्से च कोई घटना गोंदी ऐ तां उस्से दिन लोके गी ओह्‌दा पता लग्गी जन्दा ऐ।

देस-वदेस दियें खबरें ते घटनाएं दी जानकारी हासल करने दे केई गाधन न : जियां, अखबारां, रेडियो, टेलीविजन, टेलीफोन ते तार। एहूँ गीक ऐ जे टेलीविजन च खबरें दे कन्नै-कन्नै अस घटनायें गी बी परतखब दक्खी सकने आं, पर किन्ने लोक न जिन्दे कश टेलीविजन-सेट न। इब्बी गीक ऐ जे रेडियो यमां असेंगी वडियां तौले खबरां श्होई जन्दियां न, पर इर इक कश रेडियो-सेट वी नेई होंदा। टेलीफोन ते तार राहें छडियां मुहृतसर खबरा गे श्होई सकदियां न। उन्दे यमां खबरें दा पूरा ब्यौरा हासल करना

बड़ा मैंह गा पौदा ऐ । पर अखबारां थोड़े हारे देसें कन्नै गै असेंगी घर बैठे
गै देस-बदेस दी जरुरी घटनाएं दी जानकारी बेइयै साढ़ा खतोला शान्त
करी सकदियां न ।

तुसें दिक्खेआ होग जे अखबारें च देस-बदेसा दियां ताजा खबरां
मिलदियां न । एहूं दे लावा इन्दे च खेड-समाचारें लेई बक्खरा सफा होंदा
ऐ । इक सफे उप्पर बजारा दे भाहूं ते होर दूर्ध्यां गल्ला छपी दियां होंदियां
न । इक सफे उप्पर सम्पादकी ते दूए लेख छपे दे होंदे न । बडला हुन्दे गै
अस बेचैनी कन्नै अखबारा दी निहालप करन लगी पौने आं । अखबार औने
पर इयां बझोंदा ऐ अश्के वाकी दुनिया कन्नै साढ़ा सरबन्ध जुड़ी गेआ
होऐ ।

तुसें कदें सोचेआ ऐ जे अखबारां कियां तेआर कीतियां जन्दियां न ?
छपदियां कियां न ते साढ़े कश कियां पुजदियां न ? आओ दिखचै अखबारें
दे दफ्तरै च केहूं होंदा ऐ ?

अखबारें दे हर दफ्तरै च दौं विभाग होंदे न : इक सम्पादकी विभाग
ते दूआ प्रैस विभाग जां छापाखाना । सम्पादकी विभाग इस दफ्तरै दा
मुख्यं विभाग होंदा ऐ । इथें तुसेंगी काफी लोक अपने-अपने मेजे पर बैठे
दे कम्म करदे लभडन । इन्दे च जेहूं डा प्रमुख व्यक्ति होंदा ऐ उसी सम्पादक
आखदे न । इन्दे कश मुलख भरा दे वक्ख-वक्ख हिसें थमां खबरां ते दूए
लेख औंदे रौहूं दे न । एहूं खबरां ते लेखावडी तुरन्त अखबारै दे दफ्तर
मेजे जन्दे न तां जे उनेंगी तौले शा तौले अखबारें च छापेआ जाई सके ।

खबरां संवाददाता ते रपोर्टरें ते खबर-एजेंसियें राहें हासल होंदियां
न । संवाददाता ते रपोर्टर मुलखा दे सबने हिस्से च फैले रौहूं दे न ते जियां
गै कुतैं कोई घटना घटदी ऐ, ओहूं तुरत उस थाहूं रा पर पुज्जी जन्दे न ।
ओहूं उत्थूं दी घटना दी ठीक-ठीक जानकारी करियै अपनी अखबारा दे
दफ्तर भेजी दिन्दे न । घटना सरबन्धी खबरा गी बद्दोबद्द असरदार बनाने
लेई लोक उनें घटनाएं दे फोटू बी लेई लैंदे न ।

घटना सरबन्धी खबरां ते फोटू बगैरा भेजने लेई जेहूं डे साधन बरते
जंदे न, ओहूं न …… टैलीप्रिटर, तार, टैलीफोन बगैरा । इन्दी मदद कन्नै
खबरां बड़ियां गै तौले इक थाहूं रा थमां दूए थाहूं र भेजियां जाई सकदियां
न । एहूं दे लेई टेलस्टाट दा इस्तेमाल बी होन लगा ऐ खबरे गी भेजने दे
साधने च एहूं इक होर नमीं म्हत्त्व आली गै ऐ । एदे राहें लदरां होर बी

तौले भेजियां जाई सकदियां न। इस चाल्ली हासल खबरें गी सम्पादकी विभाग च भेजी दिता जन्दा ऐ। सम्पादकी विभाग आले इनेंगी सं कनै बनाई सोआरिए प्रैस च भेजी दिन्दे न।

जियाँ गे सम्पादकी विभाग च खबरां औंदिया न, प्रैस आले उनेंगी कम्पोज करिए छापने दी तेआरी च लग्नी जन्दे न। अखबारें दे दफ्तरा दी जेह डी सारें शा बड़ी खूबी ऐ ओ ऐ समें दा ध्यान रखना। जेकर कुते वी कुसै कम्मा गी करने च चिर होई जन्दा ऐ तां समझी लौ जे अखबार दे हर दफ्तरा दे बाहर कारां तेआर खड़ोती दियां होंदियां न जेहड़ियां अखबारें गी लेइये उनेंगी दूए शैहरें, रेलवे स्टेशनें, डाकखानें ते अखबारां बेचने आले कश पजादियां न।

एह अखबारां बड़ला होने तगर सबनें दे घरें पुज्जी जन्दियां न। अखबारां पजाने च रेलें ते कारें दी गे नेई ब्हाई जहाजें दी मदद बी लैती जन्दी ऐ। रातीं जेल्लै सब सुत्ते दे होंदे न तां अखबारें दी दुनिया जागी दी होंदी ऐ। किन्ना बचित्तर ऐ एह सब किश।

[राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान ते प्रशिक्षण परिषद् द्वारा प्रकाशित “भारती” भाग ॥] च छ्ये दे समाचार पत्र नां दे लेख दा अनुवाद साभार कीता गेआ ऐ।]

प्रश्न-अध्याय

1. जदू अखबारां नेई हियां होंदियां अदू इक थाहरें दियां खबरां दुए थाहरे कियां पजाइयां जन्दियां हियां ?
2. हन देस-बदेस दिएं घटनाएं दी जानकारी हासल करने दे केहड़े-2 साधन न
3. अखबारां कियां त्यार होंदियां ते छपदियां न ?
4. अखबारें च किस-किस चाल्ली दी समझी होन्दी ऐ ?
5. अखबार दे केह, लाभ न ?
6. हेठ लिखें दे शब्दें दा वाक्यें च प्रयोग करो :—
परतख, खतोला, निहालप, खबर-एजेंसी, संवाददाता, सम्पादक, ते टैक्सी प्रिंटर।
7. खल्ल दिते दे शब्दें दे वचन बदलो :—
राजा, घोड़ा, खबर, अखबार, घटना, छापखाना, अजेंसी, हिस्सा, डाकखाना, रेल।

बम्पा शर्मा [जून 194 —]

ठॉ० बम्पा शर्मा होर जम्मू यूनिवर्सिटी दे डोगरी रिसर्च सेंटर च डायरेक्टर न। इन्दिया चार कताबां—“डोगरी काव्य चर्चा”, “इक भांक”, “दुगर धरती” [कवता संग्रह] ते “दुगर दा लोक जीवन” डोगरी-साहित्य दे प्रभुत्व प्रकाशन न। इन्दे डोगरी लोक-साहित्य, भाषा-विज्ञान ते डोगरी-साहित्य-आलोचना पर कई लेख, प्रभुत्व पत्रिकाएं च छपे दे न। अज्जकल एह डोगरी रिसर्च सेंटर विएं शोषण-योजनाएं पर कम्म करा करदिया न।

मै-तू-मै-तू [संस्मरण]

इक जुग हा, जत्तू मनुकख जंगलें जाडे ते पशुएँ-पशेहुएँ च रोहदा हा। जानवरें साई कच्चा भास ते कन्दभूल-जेकिश लभदा हा, खाइये गुजर करी लैदा हा। उसले उसी पशुएँ-जनोरें शा डर बी नेहं सा लगदा। ए समा मनुकख जाति दे इतिहास च आदि जुग जां पत्थर जुग दे नां कनै प्रसिद्ध ऐ।

खुशपा पत्थर जुग च माह-नू पशुएँ दियां बोलिया बोली-समझी लैदा होऐ। इस कथन दे संकेत लोक-कथ्ये च पशु-पशेहु पातरें दे बातलायें शा अहोदे न। लोक कथ्ये च येर मती भुक्ख लग्गने पर भास दुहारा बी मंगी लैदा दस्से दा ऐ। इक डोगरी लोक कथ्ये च ब्राह्मण ते येर इक दुए कनै दिला दियां गल्लां करदे ते हसदे लेडे बखाने गे दे न। गिदड ओजरी गी रज्ज लाने दी गल्ल करदा ऐ। सप्प कुसे राजकमारै गीं आखदा ऐ जे ओ उसी कैद थमां मुक्त कराई दे ऐ तां जेकिश ओ चाह-ग सप्प उसी देई देग। चिडी जने-खने राह-राह-न्दु अगं फरयाद करदी ऐ जे ओ उसी जट्टै दी पाई दी फाई चा छडकाई देए। ओदे व्याणे टाह-ली पर बैठे दे वितो ताज्जे होने न। बरदे बदले च इक का चिडी दी बिनत करदा ऐ जे उसदा लूनै दा घर घुली गेदा ऐ इस करिये चिडी उसगी अपने कक्खे दे आलडे च विन्द क् वाह-नै गी थाह-र देई देए। इक दूजो बादुर अम्ब देहयै फुलका ते फुलका देहयै केहं चोजां ठगदा रेहा।

पर जिया-जियां मनुकस सम्यता दे रंगे च रंगोदा गेआ, पशु-जगत्
उन्ने उसदे सरबन्ध दूर होंदे गे । जंगलें शा दूर वस्तियां बनदियां गेइयां ।
उन्हें दे सरबन्ध खिनें च थोड़े त्रुट्टी जन्दे न ! माहूनु ने नगरे शैहूरें च
ती गी, मैहू, धोड़ा, कुत्ता, बक्करी, बिल्ली, तोता मैना, तित्तर, कबूतर,
बकोर आदि रखली ले । किश स्वार्थं मूजब ते किश शौक मूजब । अज्ज
प्रीं वी स्थिति नेई रही । शैहूरें च रौहूने आले व्याणे जागतें गी केइयें
पशुएं-पखेरुएं दे नां वी नेई भासे ।

इस च वी बिन्द शक नेई जे बच्चे दी पशुएं पखेरुएं च बड़ी दिलचस्पी
होंदी ऐ । उनेगी जो नन्द बक्करी, बिल्ली, कुत्ते, गवें-मेइयें दी बोल्ली दी
नकल करने च प्राप्त होन्दा ऐ, उन्ना मजा खवरे रस-मलाई, चाकलेट,
टाफियां, खट्टा-मिठा च ते जां फी अम्ब पापड़ खाने पर वी नेई ओंदा ।
पशुएं दियें केइयें बोलियें वारे ओ मनमाने अर्थ लान्दे रौहूदे न ।

इस बारे आऊं अपने बचपुने दी गल्ल सनानियां जिसी में अज्जै
तकर वी नेई भुल्ली सकी । गर्मियें दियां छुट्टियां हियां । आऊं अपने
ननिहाल गेदी ही । गां थाहूर हा । तदुं ग्राएं च नलके नेई हे लगे दे होंदे ।
लोक पीने आस्तै खुएं दा पानी लेई औंदे हे, पर टल्ले धोने आस्तै छप्पड़े-
तलाइयें उपर जाना पांदा हा । इक रोज सबबन आऊं वी अपनी मासी
कन्ने छप्पड़े पर टल्ले धोन उठी गेई उत्थें के दिक्खेआ जे सैल्ले-सैल्ले, पीले-
पीले डिडूयें दी मैहू, फल भखी दी ही । पैहूले इक मोहू तवर डिडूं किश
बोलदा हा ते पिच्छुआं किश डिडूं परता दिन्दे हे । फी किश होर डिडूं
होर किश बोलदे हे ।

आऊं बड़े व्याने कन्ने सुनदी रेही ओ आखेदे हे

“कुन कुन कुन कुन ।

तू तू तू तू ।

मै मै मै मै ।”

मै उन्दे बोलें दा इक बचितर गै कयाफा लाया । मैं समझेआ की जै
बरसाती रहते दा सरबन्ध इन्दर राजै कन्ने जोड़ेआ गेदा ऐ, इसकरी डिडूयें
भाने इन्दर राजें दा व्याहू, जुड़ी गेदा होंदा ऐ । ओ अपने नमें-नमें, सैल्ले-
सैल्ले ते पीले पीले टल्ले दिक्खियै पसोई-पसोई पांदे न ते व्याहू, जाने

दियां तथारियां करन लगी पांदे न। मिगी बक्कोआ, जियां इक मोहतबर
डिडूँ पुच्छा दा होऐ :—

“कुन कुन कुन कुन?” अबकै आखै दा होऐ :—

“इन्दर राजे दे व्याहू, कुन कुन जाना

कुन कुन कुन कुन ?

किश डिडूँ परता देऐ दे हे—“तू तू तू तू !”

किश गला दे हे—“मैं मैं मैं मैं !”

अजज वी जदूं कदें बरसांती डिडूँ लभदे न तां अपने मनै च
डिडूयें दी भाशा दी मैहू रम होने आली गल्लै पर हासा उठी ओंदा ऐ, ते
फी डिडूँ उल्लरी-उल्लरी इयां बोलदें सेहू होन लगी पांदे न……

“मैं तू मैं तू मैं तू मैं तू”

प्रहन से भाष्यात्म

1. पत्थर जुगं दा दूबा नां केहू ऐ ते इसी पत्थर दा जुग की आखेआ गेदा ऐ ?
2. पत्थर जुगं च लोक अपना गजारा कियां करदे हे ?
3. बरसांती रस्तं गी डिडूयें दी रस्त की आखदे न ?
4. हेठ लिखे दे बाक्यें चा ठीक बाक्य दे सामने ✓ लाबो ते गल्त दे सामने ✗ लाबो ।

[अ] बरसांती डिडू नेहू बोलदे ।

[ब] बरसांती गी कोयलें दी रस्त आखदे न ।

[स] बरसांती गुह्यी-गुह्ये दी पींग लभदी ऐ ।

[र] सोहे चाहू पीने गी मन आखदा ऐ ।

[ष] बरसांती लस्सी पीने गी जी करदा ऐ ।

[क] बरसांती हर याहू र संल्ला संल्ला नजरी ओंदा ऐ ।

भाषा-व्याख्या

- [क] संल्ल दिते दे शब्दें ते महावरें गी बाक्यें च प्रयोग करियै स्पष्ट करो :—

फरेयाद करना, वित्तो ताना, सबज्जन, मोहत्वर, छपड़ ते गुजर ।

[४] हेठ लिखे दे शब्दे दे लिंग बदलो : —

बाह्यन, शेर, सर्प, गिरड़, बान्दर, कबूतरी, कुत्ता, चोड़ा, भैना,
गौ, दक्करी ।

आन-बधाओ

1. अपने अध्यापक कोना मदद लेइये वरसांती दे कीड़े-मकोड़े, पक्षरें, घरतमाता,
जुगनुएं, सर्प, विसकले, भंडारनें, ते बिल्लुए बारे जानकारी हासल करो ।
2. वरसांती दे भोसमा च केह-डे-केह-टे तेहार ओंदे न ?

विद्यालय ने बोला

ब्रगवत् प्रसाद साठे [1910-1973]

श्री भगवत् प्रसाद साठे होर डोगरी दें पैहले, कहानीकार होए न “पैहला कुल” इन्वा पैहला कहानी संप्रेह, ऐ, जिसदियां कत्यां सादगी ते भाषा दी द्रिष्टी कन्ने लोक-कत्यें दे नेढ़े वभोंदियां न। इन्दा दूआ कहानी संप्रेह, “खाली गोद” ऐ। इन्दे गव दी डोगरी ठेठ डोगरी ऐ जेवे च डोगरी-मुहावरे ते खोआन इयां रलें दे होंदे न जियां पापडे च काले मर्वे।

मंगते दा घराट

दीं मने दी बोरी डल्ला च लाइयै, मंगता तमाक् पीन गै लगा हा जे घराट बंद होई गेआ। वै जलो इत लगै लैखड़ी। आखिये जले पक्के दा उठेपा ते कूहले गी दिक्खन लगा। कुत्थूं बुट्ठी होग। करदा-करदा कूहला दै कंडें-कंडें चलन लगा। बरसांती दी रोहड़े दै पानिये कन्ने बरे च दो म्हीने भर चलने ग्राला मंगते दा घराट, ते ओ वी कदें कदें कसाइयें दे जागत बनकरियां चारदे-चारदे कूहल छोड़िये मंगते शा गालीं लंदे हे।

चोइयै दे विच्चा दा जित्थूं कूहल डक्की दी ही उत्थूं दा गै कुसे ओ जन्न चुक्की लेती दी ही ते पानी खल-खल करदा कूहल छोड़ियै की चोइया च वगा करदा हा। जन्न-तुप्पने शा पैहले मंगता तांई-तोआई दिक्खन लगा तां उपरले पासे खड़ोता दा महम्मू लब्भा। “वै तो की लाई ऐ मेरी जिद खान ओए महम्मू आ!” महम्मू बरंकड़ी दे कुल चूपी जा ते सुद्टी जा, जियां उसने मंगतेर्ह दिक्खेआ गै नेई होऐ। ओ जिसलै मंगता विद सोहगा होआ तां महम्मू दी मंगते पासे ताड़ी लगी नेई। नेई ताया, मैं नि चुक्केआ बट्टा।

“तोह, नेई, तां तेरे बब्बे चुक्केआ। तरटून् नि होऐ तां। सुनां इत्मदीनेई तां तेरा पिंजरतरोड़ा ओह,!” बट्टा बनकाइयै मंगता की घराट पासे चलेआ तां महम्मू वी नोहाड़े पिञ्चें-पिञ्चें आया। मंगते नर-गेला लैता ते गुड़-गुड़ करन लगा। महम्मू ने बरंकड़ी दियां त्रै चार दालियां

मंगते दे अगें सुट्टियां लै ताया फुल्ल चूप । जा, आया बड़ा फुल्ल चपोरी
आला । भर दपैहरी ताएगी दुःख देइये तुगी सर्व ते नि आई होग । डमें थी
कुड़ी ते भ्राऊ कन्ने चाह गियां । बुड़-बुड़ करदा मंगता गुड़-गुड़ करदा रैहा ।
महम्मू चूप हा । थोड़े चिरे बोलेग्रा, “ताया” तू इन्ना बुड़ा होई गेबां ते
कुसं दिन जे टिगट कटाई ओड़े तां घराट कुन चलाग । इये गल्ल थी जिस
उपर मंगते दी अखरीं च कदं-कदं अत्थरुं उठी अौंदे हे । सच पुज्जो तां
ओढ़ा होर कोई बी नेहं हा ।

महम्मू उटिठये जान लगा तां मंगते उसी रोकेशा—“लड़ो ओए
महम्मू, मड़ा जाना गै ।

ताया बकरियां कुर्त ल्हा च फसी जाड़न, उनेई दिक्कतां इस्तें तेरे श
बैठे दे केह, लाह, ऐ । मरी जागा तां घराट कुसै भीरै गै सांभना ऐ ।

“की बै भीरै दे मैं कोईटके देने न के । ऐड़ा कोई इस बरेसा भेरे
कम्म आग उऐ साम्भग एह, मेरा घराट ।

महम्मू मंगतेर्ई छकांदा हा बो भौके बेल्लै कम्म बी उऐ बीदा हा ।
महम्मू गी होर किश नेहीं, बो चलदे घराटे दी छेहा नींदर बड़ी शैल औंदी
ही । जिना चिर घराट चलै महम्मू दे डेरे घराट गै रौह, न । इल्मदीन इस्तं
गल्ला उसी आसदा हा “ताया मरी जाग तां सौन देग तुगी कोई दूधा
उत्थे” । भोला महम्मू अपने मनै च समझदा हा जे ताया मरी जाग तां
घराट उस्तं दा होई जाना ऐ ।

इकदिन मंगता बलगन लगा ते बलगदा-बलगदा उंधन बी लगी
पेआ पर महम्मू नेहीं प्राया । सूरज डुड्खे दे बी दो घड़ियां होई गेदिया
हियां । मंगते घराटे दे भित्त मारे ते महम्मू बी मुरत संन चली पेआ ।
न्हेरा ते ताप मंगतेर्ई ठोकरां करान लगे बो मंगते हार नेहं मनूनी ।

दिने दी गल्ल होई मुक्की दी ही बो मंगते गी नेहं हा पता । साधु
शाह, दी हृषी गुल्लू भीरै इल्मदीने गी बोल्ली मारी महम्मू गी सोआसनां
एं ताए कच्छ, घराट साम्भने दी नीत ऐ गे रक्खी दी ?

इल्मदीने गी बी तरारा आई गेआ-अज्जै गेडा नेहं गै जान देंग । खाने
जोगी स्हाँड़े बी वत्तेरी ऐ । इस शा बढ़ के होंदा । गुल्लू मंगते दा नेड़ोग्रा
हा । गल्ल होई मुक्की इल्मदीने ते महम्मू दे भा दी, बो मंगते दे भा दी
नेहं । महम्मू रोई रींगिये पलेस्टे मारे करदा हा तां मंगता किल्लदा-किल्लदा

ਪ੍ਰਾਈ ਪੁੱਛਿਆ। ਉਸਨੇ ਮਹਮਦੀ ਗੀ ਕੁਆਲੇਆ, ਇਲਮਦੀਨੀ ਗੀ ਪੁੱਛੇਆ, ਗਲੀ ਕਹਿਣਾ, ਠੰਡਾ ਹੋਆ, ਜੋਂ-ਜੋਂ ਗਲਲਾ ਵੀ ਕੀਤਿਆਂ, ਰੋਏਆ ਵੀ, ਰੀਲਾ ਪੇਆ, ਗੋਬਾਂਡਿਯੇਂ ਵੀ ਸੁਨੇਆ, ਕੋ ਇਲਮਦੀਨੀ ਮਹਮਦੀ ਗੀ ਓਂਦੇ ਕਨੇ ਨੇਵੀ ਗੇ ਭੇਜੇਆ।

ਦੂਜੇ ਦਿਨ ਵੱਡੇ ਪੇਹੁੰਚ ਰੀਲਾ ਪੇਈ ਗੇਆ ਮਾਂਗਤਾ ਘਰਾਟੇ ਦੇ ਅੰਦਰ ਮੌਏ ਵਾਪੇਦਾ ਹੈ। ਰਾਤਿਆਂ ਓਂ ਇਲਮਦੀਨੀ ਦੇ ਘਰ ਗਲੀਂ ਕੱਢੇ ਕਰਦਾ ਹਾ। ਉਸੇ ਪਰਾ ਤੁਨੇ ਮਾਂਗਤੇਵੀ ਸਾਰੇਬਾ ਤੇ ਚੁਪਚਾਪ ਘਰਾਟ ਸੁਣ੍ਹੀ ਆਏ। ਲੋਕੋਂ ਵੀ ਜੀਹੁਕਾ ਉਪਰ ਇਧੇ ਚਕੇਦਾ ਹਾ। ਤੇ ਇਸ ਗਲਲਾ ਗੀ ਮਤਾ ਗੁਲ੍ਹੂ ਬਨਾ ਕਰਦਾ ਹਾ।

ਪੁਲਸ ਆਈ ਤੇ ਉਸਨੇ ਇਲਮਦੀਨ ਤੇ ਮਹਮਦੀ ਦੌਨੇ ਗੀ ਹਤਥਕਡੀ ਲਾਈ ਲੇਈ ਤੇ ਫੀ ਲਗੇ ਤਲਾਸੀ ਲੈਨ। ਮਾਂਗਤੇ ਦੀ ਵਾਸਕਾਟ ਕਿਲਿਆ ਟੰਗੀਓਈ ਦੀ ਹੀ। ਉਸ ਬਿਚ ਤੈਹੁੰਕੀਤਾ ਦਾ ਇਕ ਕਾਗਦ ਥਾ। ਸਾਰਾ ਜਟ ਤੈਹੁੰਕੀਤਾ ਖੋਲੀ ਤੇ ਪਕੇਬਾ। ਕੀ ਅਪਨੇ ਕਨੇ ਦੇ ਸਾਥਿਂ ਸਪਾਇਥਾ ਗੀ ਵੀ ਪਢਾਯਾ। ਸਾਰੇ ਅਪਨੇ ਅਪਨੇ ਸਿਰ ਲਹਾਏ ਤੁਨੇ ਕਾਗਦ ਇਲਮਦੀਨੀ ਦੇ ਹਤਥਕਡਿਆਂ ਸ਼ਾਮਲ ਕੀਤੇ ਚੁਪਚਾਪ ਉਤਸੁਕਾਂ ਤੱਠੀ ਗੇ।

ਭਾਸ਼ਾ-ਅਧਿਧਰਾਸ

1. ਕਹਾਨੀ ਪੜ੍ਹੇ ਦੇ ਬਾਦ ਮਾਂਗਤੇ ਦੇ ਚਰਿਕੀ ਬਾਰੇ ਦਸ ਪੰਕਿਨਾਂ ਲਿਖੋ।
2. ਪੁਲਸਾ ਨੇ ਇਲਮਦੀਨ ਤੇ ਮਹਮਦੀ ਗੀ ਹਤਥਕਡੀ ਸਾਈਂ ਸ਼ੋਨੀ ਕੀ ਲੇਈ?
3. ਗੁਲ੍ਹੂ ਭੀਰੇ ਨੇ ਇਲਮਦੀਨੀ ਗੀ ਕੇਹੁੰ, ਬੋਲਨੀ ਮਾਰੀ ਹੈ?
4. ਇਸ ਕਹਾਨੀ ਚ ਕਿਨ੍ਹੇ ਪਾਤਰ ਨ ਤੇ ਉਨ੍ਹੇ ਨਾਂ ਦਸਮੇ?

ਭਾਸ਼ਾ-ਅਧਿਧਰਨ

1. ਖਲਲ ਲਿਖੇ ਦੇ ਬਾਵਰੇਂ ਦਾ ਅਰਥ ਦਸਮੇ ਤੇ ਵਾਕਧ ਬਨਾਓ।

ਘਰਾਟ, ਬਰੰਕਡ, ਚੋਈ, ਛਕਾਨਾ, ਤਰਾਰਾ।

2. ਖਾਲੀ ਥਾਹੁੰਕੇ ਚ ਮੰਜਾ ਸ਼ਬਦ ਭਰੋ।

1. ਮਾਂਗਨਾਪੰਨ ਗੇ ਲਗਾ ਜੇ.....ਵਨਦ ਸਾਈ ਗੇਆ।

2. ਤਾਧਾਕੁਤੇ ਲਹਾ ਚ ਫਸੀ ਜਾਇਨ।

3. ਇਲਮਦੀਨੀ ਗੀ ਵੀਲਾਈ ਗੇਆ।

4. ਪੁਲਸ ਆਈ ਤੇ ਉਸਨੇ ਇਲਮਦੀਨ ਤੇ ਮਹਮਦੀ ਦੌਨੇ ਗੀਲਾਈ ਲੇਈ।

5. ਉਸ ਬਿਥ ਤੈਹੁੰਕੀਤਾ ਇਕਹਾ।

ਭਾਸ਼ਾ-ਅਵਾਸ਼ੋ

1. ਅਪਨੇ ਅਧਿਆਪਕ ਕਣਾ ਘਰਾਟੇ ਦੇ ਬਾਰੇ ਚ ਪੁੱਛੋ।

2. ਅਮਾਵਾਸ ਪੀਹੁੰਕੇ-ਵੇਹਾਨੇ ਦੇ ਹੂਏ ਸਾਥਨੇ ਬਾਰੇ ਵੀ ਜਾਨਕਾਰੀ ਲਾਭ ਕਰੋ।

नरेन्द्र सजूरिया [सन् 1932-1970—]

श्री नरेन्द्र सजूरिया डोगरी दे प्रमुख कहानीकार होए न। इन्हीं पैदा कहानी कहानी “दिनबार” ऐ। हन्दियां प्रमुख रचनां—इक उपन्यास ‘बानी’, एक बाल नाटक संग्रह, ‘कोले दियां लीकरा’, ‘रोचक कहानियां’, ते ‘नीला अम्बर काले बदल’। इक बाल नाटक संग्रह, “बस आग जगाने जाले था” न। हन्दियें त्रौं पुस्तकें गीरियास्ती बकेडमी पासेवा पुरस्कार वी प्हाए देन ते “नीला अम्बर काले बदल” पर इनेंगी [मरनोपरान्त] केन्द्री साहित्य बकेडमी ने सम्मानित कीता। मूल रचनाएँ दे नावा इनें डोगरी ते हिन्दी दिएं किंव पुस्तकें दा सम्पादन वी कीते था ऐ।

की फुल्ल बनी गे छारे ?

सब कोई उसी फिल्कू करी कुआलदे, पर श्रो अपना ना म्हेशा फकीर चन्द गे दसदा ते इऐ लिखदा। बडा चुप-चवीता ते शरणाकल सभास वा जागत हा।

में पैह, ले पुज्ज दिन उन्दी जमाति च गेशा हा। जागत अपने-अपने याह, रे परा खडोइयै ना दस्ते दे हे।

- वर्म चन्द।
- रमाल चन्द।
- मुन्दी राम।
- शोक राज।
- गलाब चन्द।
- फकीर चन्द, श्रेणी पंचम।
- शावाश ! वेर्ह जाओ।'
- सारे जागत चुप्प-चाप वेर्ह गे।
- फकीर चन्दा भूं गल्ल सुन हां।

फकीर चन्द आइये टैन-शन जन खड़ोई गेबा ।

—फकीर चन्दा तूं बड़े मैले टल्ले लाए दे न ।

—“जी, अज्ज बड़लै गै घोते दे लाए हे ।”

—अज्ज बहुलै । कैदे ने घोते हे ?

—सज्जी नै, जी ।

कपड़े पक्क गै मैले नेई हे । सज्जी ने गै घोते करी ओ नीम सलेटी जन पेई गेदे हे । न्हेरी चूका खड़ोने करी मैले सेही होआ दे हे । —ते कन्ने तूं पुआणा गै स्कूल उठी आया । जोड़ा लाइये आवा कर ।

—जी, जोड़ा बड़डे होइये लाड ।

में किश पढ़ाने थमां पुज्ज जागने ने थोड़ा चिर गल्ल कथ्य जरूर करनां । उस्सी गल्लै दे लिरे नै फी पढ़ाने आलीं तंद गम्भिये सबक शुरू करनी उड़नां ।

—अज्ज बड़लै तुसें केके खादा ?

—“लूना ने खन्नी ढोहा” ।

—“उंगल बेआ भत्त वस”

—“अदृदा ढोडा ते छाह”

—“कक्ख बी नेह”

—“कणिएं दा भत्त”

—में त्रकाले जाइये खानी ऐ, अम्मा आखदी ही त्रकाले

—छड़ा साग, साड़े आटा समझी गेदा हा

फकीर चन्द खड़ोता-बज्जी दा भत्त, लून ते पानी ।

—शाबाश ! भाई तुसें पानी दा नां गै नेह लैता । पानी बी ते सार्द बड़ी जरूरी खराक ऐ । की है नीं ।

—हाँ जी ।

अज्ज पढ़ाने आले सबकै लेई हून ओ त्यारहे ।

—इक मनुकस्वी गी नरोए रीह् ने आस्तै रोज दुढ, फल, मक्खन,
पनीर, अण्डे, मच्छी खानी लोड़चदी ऐ । ए इक पूरी सराक ऐ ।

खन्नी-खन्नी ठोड़ा जां छड़ा साग खाइये आए दे पीले-भुस्से जागत
इहान जन सुनै दे हे । किश सोचै दे वी होड़ न गै । के पता मेरा कम्म ते
पढ़ाना ऐ । उन्दा पढ़ाना, सुनना ते फी रटा लाइये घोटी लैना बधीक किश
वी नेहं ।

दूए ध्याड़ि सबक सनाने दी वारी ही ।

—नरोए रीह् ने आस्तै असेई के खादा लोड़चदा । व्हाऊ च चुआ-
ठिया जन हत्थ चब्बू बह्यै भुल्लन लगी पे । विच-विच इन्ने जोरें मलकारे
जन मारेदे हे अश्कें मी गै सवाल पुच्छै दे होन-बुजझो किन्नियां औझलियां
न । किश अद्ध भमाटे टंगोचे दे हे । जेडे मेरे पुछदे गे लुक छुप जाना आला
स्थाव होई जन्दे ।

—“फकीर”

—“असेई नरोए रीह् ने आस्तै रोज दुढ, फल, अण्डे, मच्छी ते
पनीर” फकीर फटा फट उगली जादा हा । पूरे दा पूरा सवाल उन्ने
घोटे दा हा ।

—मास्टर जी ! इन्ना किश रोज-ध्याड़ी खाने ने आदमी फिटी नि
खड़ोए । इक जागतै ने थुक नींगलदे होई गलाया ।

—कैहा बतझड़े ऐ । आदमी थोहड़े साहव लोक इन्नियां चीजां
बसतां खंदे न” फकीर ने उसी दरण्ड सुट्टी ।

ए सारी गै जमात पढ़ने च सोहगी ही । पर फकीर सारें थमा
चड़दा हा । ओ पट्टी के लिखदा कसीदा कढ़दा हा । जागत अजें सवालै दी
रकम लिखी समान्दे ते ओ सवाल कढ़दी उड़दा । कतावा दे अर्थ ते नजमें
दे भाव ओ जेललै सनान्दा ते भी सेई हुन्दा ओ नेहं में बोला ना । टोकमा
लखाई लिखदे, कदें ओहदी विसर्ग ते हलत् दी वी गल्ती नि हुन्दी ।

उन्ने कदें रेल नेईं ही दिक्खी दी पर रेल कुन्ने बनोई ते किया बनाई,
ते साडे देसा दियां रेलां कतां-कतां गेडे लान्दियां न, उसी सेही हा। उन्ने
कोई निका बहु थीहर नेई हा, दिक्खे दा पर जम्मू दा कलकत्ते तग़केहडे
केहडोहर पौन्दे न ओ सबभी उसी सेही हे। रज्जिये ठोड़ा लाने दा चा भाए
कदें पूरा नि होआ पर मकम्मल गजा उसी सेही ही। ओदे बब्बे गी चुकं
दे दस रपे भाए नेई योन्दे हे पर खचरे थमा खचरा सूदा दा सवाल ओ
गोङ्गलिएं पर गिनी-मिथी लैन्दा।

इक कविता पढ़ांदे में तुकबन्दी वारे गल्ल-कथ्य कीती। दुए दिन फकीरू
खासी तुक जोड़े कविता लिखी लेई आया। एदे परंत वी उन्ने कविता
लिखी जां नेई भी पता नेई पर सकूलै दी मीटझा च जेल्ले फलोनिएं दा
मकाबला हुन्दा तां एह, तुकबन्दी उसी म्हेशां जतान्दी। इक दिन मीटझा
च उन्ने इक फलोनी पाई।

“ए ओ मनुक्ख, सदेरदा खोते।

दुएं गी तारदा, आपूं खन्दा गोते ॥”

कुसे जागतै थमां वी एफलोनी नेई बभोई। फकीरू गी दिल्ली
थीहर तगर ध्होई रेहा पर उन्ने गलाया—“मिगी आपूं इस फलोनी दा
जबाब नेई औन्दा।”

दुए दिन मैं जमाता “च उसी फलोनी दे जबाब लेई पुच्छेगा मी
मेद ही जे फलोनी उन्ने आपूं गण्डी दी ऐ। बड़ा संगदे-संगदे उन्ने गलाया-
“तुस मास्टर जी”।

“मैं” मैं गड़का ठोकेआ—“मी फलोनी गे भुल्ली गेई, परतिए फलोनी
पाई”

“ए ओ मनुक्ख, सदेरदा खोते।

दुएंगी तारदा आपूं खन्दा, गोते ॥”

—“तू कियां जाची लैता अस गोते खन्ने ओं।”

—तुस इक दिन आपूं गला दे हे जे तुन्दे “च गे अफसर, लीडर
प्रधान मन्त्री ते कसान बनने न ते, जेल्ले में तुसेर्ई पुच्छेगा जे तुसेंगी स्थाडे

थमां मती पढ़ाई औन्दी ऐ तुस के बनगेओ तां तुसें गलाया हा—ग्रस मास्टर आं। असें मास्टर गै रोह्‌ना ऐ।” फी में इक दिन जागतैं गी पुच्छेआ—“तुसें बड्डे होईयै केह् वनना मिथेदा ऐ।”

—“पटवारी”

—में पुलसा दा सपाई

—“सपाई कोला थानेदार बड़ा हुन्दा ऐ, में थानेदार”

—जंगलाती दा गाड

—में सरपंच

—में डागदार [डाक्टर]

—में तसीलदार इक जागतै ने भकदे-भकदे गलाया।

—में मिस्वर

—में लीडर

—में प्रधान मन्त्री [हसदे-हसदे इक जागतै ने आखेआ] कुसै जागतै गास्टर बनने लेई नि गलाया।

फकीर दी बारी आई—में कविबनना ऐ।]”

—मास्टर जी ! कवि बड्डा हुन्दा ऐ जां पटवारी। पटवारी बनने आले जागतै ने पुछेआ। में सोचै दा हा कुसै जागतै मास्टर बनने लेई की नेहं गलाया।

दूए दिन तार हा। में “नमीं चेतना” दा पराना अंक, धृष्टि लेटे दा पढ़ा दा हा। सामनै दरब्बड़े च खलदरे दा गदाम ऐ। खलदरे दी मुझक अग्ने पिच्छे सारे फैली ही ही।

—ओ मकड़ा के पीपे गी परती परती करै नां। “खलदरे दी दुआई दे ठेकेदारै दीं दुप्राज आई। ठेकेदारी कन्ने-कन्ने ग्र। हट्टी पर बैठे दे गदामा पासै दिलदा रोह्‌दा, करलान्दा रोह्‌दा ते मजूरें गी गाली मुआलीं ठोकदा रोह्‌दा, तरकालै गदामें व पीपे गिनदा, हसाव लान्दा ते फी खुश होन्दा।

— जोए तुई आखां नां, के फरोलो-फरोली पाई दी ए, तूं पीपा चुकना ऐजां सरीदना ए ?

— “ए आदमी ए बीण्डा । सारा दिन कड़े-कड़े में खिंजियै गदाम्हा पासे नजर दित्ती । फकीरु पीपा चुककैदा हा ।

— “नमस्ते मास्टर जी” मेरे कोला लंगदे होई उन्ने गलाया ।

— नगर चलेग्रां ?

— हां जी तुन्दा किश भार आनना ए मास्टर जी ?

— नेहं

— जोए पीपा चुक्की टुरी पेग्रां, परची तेरे प्यो ने कटानी ए ? ठेकेदारै ने कुप्पड़ जन मारेग्रा ।

“ठेकेदार जी परची वी कटूनी ए ।

— कटूनी नि होर पीपा सुरद-बुरद होई जा तां सकौटी जबत करान्नां के ।

— मास्टर जी ! ए सौरे के पढ़े दे न । अज्जै कल्ला दियां पढाइयां ।

— होए ! ठेकेदार फी करलाया, चार आने घ्होने नि ।

— की ठेकेदर जी साड़े चार आने रेट ए ।

— रेट ! कोई एदे पर कण्टोल ए ? नेहं पुगदे तां पीपा खोल गदाम च । घरा रेट लेई आया ए ।”

— “खरी ठेकेदार जी, कट्टो परची ।”

— पर दिक्खें कुतै पीपा तरटदा, पीपे जिन्ना तू ए नेहं । सो (सोलहें—16) रपें दा पीपा ई ।

दस आज्जे रेटै पर ठेका चुकके दा ए । छे आने ए बैठे दा गालिय कहुने दे लेई लैन्दा ए । पुज्ज साड़े-चार आने रेट कड़हे दा हा । बेह दिन न । दोने आले मते होई गे तां दौं पैसे होर घटू होईगे । फकीरु पितृ पर डलक-डलक करदा पीपा चुकके दे गेग्रा उठी । छे मील डीझा-त्रे रस्ता । इक ठेह्हा लगी जा । इल्लां पौने तगर लावी दा पता गै नई लग्गे ।

काले, दिए बलदे फकीर परतोआ। में ठेकेदारै दी हट्टी बैठे वा
हा। फकीर गी साह, चढ़े दा हा। दौड़दा आया लभदा ऐ।

—देओ ठेकेदार जी पैसे।

—ठेकेदार की। चोर आख चोर, अस चोर जे होए। माऊ तेरी
ने छेंआने बहुत लून लेआ हा। उसी बमार पेदे वी अटु म्ही ने होन लगे
न। अस सिर सुआह, पाइये बलगै नेआं ते तू डण्डा लेइयै आई चढ़ेआ-
देओ ठेकेदार जी पैसे। मास्टर जी एह सोह रेकि पढ़दे न। बल चल गेहु
ओ। चुआन्नी पुज्जी, दुआन्नी रेह। ठेकेदार गी रोह, चढ़ी गेआ हा।

“ठेकेदार जी!” फकीर खानाका जन होई गेआ—में कल स्कूल फण्ड
देना हा।”

—ओए फण्ड साढ़े सिरै पर देना ई केढ़ी खानदानी दिविखयै पढ़ा
दे ओ। ओए सोह रेओ। चौं बरें वी खलदरा ढोना ते की बलगै दे केढ़े
निवलेई ओ ?”

फकीर मुण्डी हेठ सुट्टियै गेआ उठी।

दुए दिन में ग्रामने कोला फकीर दा फण्ड जमा करी उड़ेआ। एस
गल्ले गी जोए ते भड़े दिनैं परन्तु इक दिन ऐतवारें बड़ले ओ मेरे कोल
आया ते उभित करा दा हा। वड़ा निम्मोभान जन आइयै ओ बेई गेआ।

—फकीर तेरी माऊ दी के डौल ऐ? “मेरे मने” च शक गुजरेआ।

—“उऐ डौल ऐ मास्टर जी।”

—“छेमी दिएं कताबें दी तू चैन्ता नि करेआं, ओ मेरे जिम्मे रेहियां।
खः खः उसी खप्पूं जन लगा। मुहां पर हत्थ रखे दे ओ जाह, र
गेआ उठी। मैं सोचेआ बक्कन गेआ होग। पर फकीर परतोइयै नेई
आया।

द्वाए दिन ओ स्कूल वी नेई आया। त्रीए दिन वी नेई, चौथे दिन वी
नेई।

पंजमें दिन फकीर दा बब्ब मिगी लब्भा। मैं फकीर लैई पुछ्छेआ।
दुस्रें दी मुम्बली च भरडोइयै ओ जुआन्नी च गे दुहा लब्भे दा हा।

मास्टर जी-ओहू दी अकस्मीं अत्यरुणं च डुब्बी दियां हाँ—‘मास्टर जी’ बड़े जतनें दे जोर कूप [चीड़ें दा जाड़, जित्थूं खलदरा निकलदा ऐ] लेगा हा । चुककी-चाड़ी बीहू पे देइयै ते पैरें छुन्निएं हत्थ लाइयै आसरमी बनाया हा । अजें पैह ली छलाई बी नेई ही दित्ती दी । कूपै च अग्ग लग्गी गई । कूप गेआ अजें होर पता नेई के बखैद पौनी ऐं । के पता किन्ना दण्ड जर्माना पौन्दा ऐ । फकीरू दी माऊगी खट्ट फगड़ै दे अटु म्हीन्ने होई गे न । घमां हारा नमां तोड़े ऐ । नौ पाइयां मवकां होइयां हाँ । नगरा दा नाज ढोई-ढोई घर तोला पितल बी नेई रेही । इत्थें कोई मिनत मजूरी बी नेई । ‘संत्रभ्याग’ हुन्दी लचार जनानी नी कोहू दे कोल छोड़िए परदेसे मजूरिया जां । के पता, लाज हुन्दा तां बची गै जन्दी । पर लाज, हुन उस्से दे हत्थ ऐ ।

इकै इक जागत हा………।

मेरा जात बकोई गेआ ।

उऐ कदें, आटै दा सरवन्ध बनदा तां ढोहै वाही उड़दा ।

माऊ दी दिक्ख भाल बी उऐ करदा । अट्ठें दिनें सज्जी गड़काहैयै माऊ दे टल्ले धोंदा गलांदा कतावा च लिखेदा ऐ जे बमारै गी मैले टल्ले नेई लुआने । कूप जली गेआ तां मिगी दलासा देए-वापू पता नि पढ़िए में के बननां ऐ तां फी …… फी वापू तुस दिक्खेओ के मौजां बझदिअां न । सब मौजां मरी गेइयां मास्टर जी । अजर्जं पंज दिन होए, शा आए दा हा । ओदा नामां दिन-रातीं वधै दा हा । ओ किश माल बच्छा लैन आएदा हा । घर किश बी नेई हा, बस बमार जनानी, में ते फकीरू । शाहू ने फकीरू गी गे लाई लेग्रा……”

फकीरू दे वब्बै कोला अरड़ मरोई गई । कड़ी त्रुट्टी पेई खड़-खड़ खड़-मेरीं अकस्मीं च मित्ती गै मित्ती भरोची गई ।

प्रश्न-प्रश्नास

1. नरोई गिजा च केह-डियां-केह-डियां चीजां शामल कीतियां जाई सकदियां न ?
2. इस कहानी च लेखक ने कुस समस्या पर बचार कीते दा ऐ ?

3. इस कहानी दे पत्तरें चाँतुसेंगी सबनें थमां केहड़ा पात्त चंगा लगदा ऐ ते की लगदा ऐ ?
4. इस कहानी वा कोई होर सिरलेख दस्तो ।
5. खाली बाहूर भरो :—

 1. इक कविता पढ़ांदे.....बारे गल्ल कथ कीती ।
 2. फकीर.....थमां.....चढ़ा हा ।
 3. बाऊ दी.....बी.....करदा ।
 4. फकीर.....बाऊ दी केहड़ील ऐ ।
 5. घोए फँह.....सिरं परा देना ई ।

भाषा-घट्यापक

[क] इनें लिखें दे अर्थ दस्तो ते वाक्य बनाओ :—

सज्जी, सलेटी, न्हेरी चूक, पुआणा, सम्मी जाना, खटाक, खन्नी, बतज्ज़ह, बचरा, तुकबंदी, फसीनी, गड़ाका, सलदर, फरोलना, खुरद-बुरद, जब्त करना, आसरमा, सचार, घरड़, मजूरी ।

वाक्य-बद्धालो

1. अपने घट्यापक कोला नरोई गिजा दे बारे च जानकारी हासल करो ।
2. शरीर आस्ते प्रोटीन की जहरी ऐ ते श्रोह, केहड़िये—2:चीजें च पाई जन्दी ऐ ? घट्यापक थी मददी कर्नी घोखो ।

जितेन्द्र शर्मा [सन् 1931—]

श्री शर्मा होर रियास्ती कल्चरल अकेंडमी दे डिप्टी संकटरी न। हास्य ध्यंग
पर लिखदे होई इन्दी कलम बड़ी भारत कन्ने चलदी ए। इने डोगरी दी पैहली
फिल्म गल्लां होइयां बीतिया च नायक दा रोल कीते दा ए। इन्हे जते सारे एकांकी ते
होसे-चंग दियां भल कियां बॉक्स-बक्स प्रकाशने च छपदियां आई दियां न ते आकाश-
वाणी जम्मू थमां प्रसारंतः होंदिया न।

अंतिम इच्छेआ

(संगीत दी लैहर)

बुड़ा—मरी गेआ, हाए मरी गेआ। हुन तेहै बचदा। (विन्दके उच्ची
आवाज) ए शाहनी.....

बुड़ी—(ओन्दे होई) जी ओ जी।

बुड़ा—हुन कुत्थें जाना शाहनी चले हुन। अस चले, (बैण करने आले
मुरें च) “हुन चलभा तेरा शाह, बड़े शाह, हुन्दे कोल। हाय !”
जो ओ जी नेहै बोल शाहनी “जी ओ जी” नेहै बोल !” हाय ..

बुड़ी—ए अज्ज तुल कनेइयां चन्दरियां गल्लां करै दे ओ ?

बुड़ा—सच्च आखानां शाहनी, रातीं लाला होरे कोई छे फराटियां लाइयां
होंडन। पता नेहै कैह, सोचिये परतोई जन्दे रहे।

बुड़ी—इक ते जली जाने तुन्दे सुखने नेहै साह, लैन दिन्दे।

बुड़ा—सारी रात तड़फदा रेयां शाहनी पल भर नींदर नेहै आई। जह
मुता गे नेहै सुखने कियां औने (तड़फदा पे) हाय मेरिए माए मरी
गेआ ! परतियै भूल लगा ई उट्ठन। सह डाक्टरे गी। तौल कर।

बुद्धी—हे मेरे आपरमेसरा हुन केह करां। जागत ते दोऐ वाहर निकली गे देन।

बुद्धा—ओ मेरी जिन्द लभी ऐ निकलन। तू आपू टैलीफून करियै सद्ब डाकटरै गी। नम्वर ते तू भाखा गै। हाय...हाय...

बुद्धी—ओ ते ठीक ऐ पर औ जनानी-मुहानी कियां गल्ल करूङ।

बुद्धा—अपनी धीयै कन्नै गल्ल करदे तुगी केह खन्दा ए? कोई वी फन चुक्कग उसी आक्वेआं सवित्री गी सद्वी देओ ते फी उसी सारी गल्ल समझाइयै आखेआं तीने भेज अपने देरे गी नैंइ तां जतीम होई जागी। विधवा ते पैहले गै होई गेदी ए। हाय हाय अम्मां जी हाय.....

बुद्धी—खरा खरा (जन्दे होई) वडा गै काहला सभा ए थोहाड़ा। केह मजाल ए जे कदें हासला करी जान (चली जन्दी ऐ)।

बुद्धा—(वैन आन सुरें च) हाय “हीसला कियां करना शाहनी, हीमता किया करना।” हाय.....। सूल कियां जरनां शाहनी ए सूल कियां जरना।” हाय.....। मीरी कोला डरना शाहनी मीरी कोला डरना। “हाय....। (वल्ले नैं भित्त खुल्लने दी “ची” जन करदी अवाज। वडा डरीना संगीत)

बुद्धा—ए ए भित्त कुन्न खोलआ। (डरी दी आवाज) कुन ए? (डरीन संगीत कन्नै-कन्नै कुसं दे टुरने दी छेड़)

बुद्धा—ए कुन टुरा दा ए? कुन ए तू? बोलदा की नैंइ? ओ लाला जी तुस? आओ आओ लंघी आओ। रक्खो तशरीफ ते कन्नै परी पौना। हुक्म करो। कियां खेचल कीती ए? मिक्की लैन आए ओ! खरा-खरा चलने आं। चलने आं पर उयां जाना कुत्थे ए? सुरगै इच ना? मुण्डी कैसी ल्हा दे ओ? तां एदा मतलब ए तुन्दा नरकं च वासा ए। ठीक बी ते ए। वडी मलावट कीती ही तुसं। उयां घट्ट में बी नैंइ कीती। कोई डर नैंइ। नरक तां नरक गै सेइ। कीती दी भुगतनी। खरा इक कम्म करो। तुस घड़ी सारी गी फराटी लाएओ। इन्नै चिरे गी में शाहनी कन्नै दो। गल्लां

करी लैना। उम्मी जर्मान जायदान दे वारै समझाई लैना। चली
गो बरा पंरी पीना।

(इरीना संगीत समाप्त)

हाय-हाय मरी गेआ। (उच्चां अवाज) शाह्‌नी-ए शाह्‌नी। कैसी
मुख जनानी ऐ, लगी पेर्ह होनी ऐ अपनी धीऊ कन्ने चपड़कथा
करन। हाय मेरी गेआ (करलाइयै) शाह्‌नी…………।

बुड़ी—(औन्दे होई) बिन्द हौसला करो। आवा दा ऐ डाक्टर।

बुड़ा—पर तू एडा चिर कंसी लाया।

बुड़ी—(पंक मुट्ठियै) केह आखां। होनी दे पेर पुढ़े।

बुड़ा—हुन ए बूत्था कंसी सुज्जी गेआ तेरा।

बुड़ी—जिसने मसीबत औन्दी ऐ तां ओ…………

बुड़ा—(गंकियै) खवरदार जे कोई भैड़ी खवर सनाई में अर्गे गै घड़ियें-
पने दा पराहना आं। की लगी एं मेरा पटाका ठोआलन। हाय-
हाय। उयां होआ कह ते?

बुड़ी—कदें आखदे ओ भैड़ी खवर ने मुनाएआं ते कदें पुछदेओ होआ
केह ते? तुन्दी बी किझ समझ नेड औन्दी।

बुड़ा—ओ भोलिये अकला काला कम्म लैते कुसै छूल ढंगा तरीके कन्ने
मुना जे होआ केह ऐ?

बुड़ी—साढ़ी सवित्री ऐ नां?

बुड़ा—आं ऐ।

बुड़ी—ओदे चार जागत ते दों कुडिया न नां?

बुड़ा—हैन।

बुड़ो—(होठ टूकिकयै) कुडियां मरते जोगिया दमै ठीक ठाक न।

बुड्डी—ते जागत ?

बुड्डी—जागतें दी केह, सनां ? चौ जागतें चा त्रौं दा सिर नेई कट्टा ।

बुड्डा—एदा मतलब चौथे दा कट्टी गेआ ऐ । कैसी पलेचदार गल्ल
कीती ऐ ।

बुड्डी—तुमें आखेआ हा जे छैल ढंगा-तरीके कन्ने गस्स सुनाएआं ।

बुड्डा—बड़ी शैल सुनाई ओ । हाय मरी गेआ । कोकड़े दा कट्टा ऐ सिर ?

बुड्डी—पप्पू दा ।

बुड्डा—पर कियां ?

बुड्डी—वजार जा करदा हा । रस्ते च कोई आदमी मिलेआ ते उसी
नाईयं दी हट्टी पर लेई गेआ । उस आदमी ने हजामत करवाई ते
की ए आखियं जे इन्ना चिर जागतं दी हजामत करो में आया,
आपूँ बाहर निकली गेआ । पप्पू हजामत करवाईयं औन लगा तां
नाईयं रोकी लेआ ते आखेआ……“पैहलें अपने पिता जी गी
आई लैन दे ।

बुड्डा—पिता जी ।

बुड्डी—पप्पू ने आखेआ जे ओदे पिता दा ते चरोकना काल होई गेदा ऐ ।
ए सुनिये नाई ने पुछेआ “तां ओ आदमी कुन हा ?” पप्पू ने जबाव
दिता—“केह, पता कुन हा । मिककी वजारा च मिलेआ ते आखन
लगा—“काका मुख्त हजामत करानी ऊ ? ते में मन्नी गेआ ।”
इन्नी गल्ल सुनिये नाई रोहा कन्ने लाल-पीला होई गेआ ते उन्न
भिड़कियं आखेआ—निकल इत्थों ।” पप्पू डरे-त्रहि दा बाहर गी
नट्टा तां उसी तरह ट लगी ते हट्टी दे थड़े परा सिरे भार सिड़का
उपर आनी पेआ ।

बुड्डा—मुख्तखोरी दी आदते होर केह, नतीजा निकलना हा । हाय-मरी
गेआ । सुन शाहनी ध्यानै कन्ने सुन लाला होर आए हे इत्थे ।

बुड्डी की लगी पे राड़-वराड़ियां गल्लां करन ।

बुड्डा—रीला नेई पा । खबरदार जे हुन मिगी टोकेआ, चुपचाप सुनदी
जा । हाय-हाय ए जेहँडा मकान ऐ नां, ए वहु जागतै गी देअं ।

बुड्डी—परमात्मा नेई करै अजें ए गल्लां सोचने दो लोड़ नेई । पर, बहु
हुन शैल कमात्खा करदा ऐ । मकान निकड़े गी गै देना ऐ ।

बुड्डा—अच्छा ते जेहँडी जमीन ऐ नां, ओ बहु धी जानकी दे नां करेआं ।

बुड्डी—(होठ अ़ुकियै) जानकी गी कैदा घाटा ऐ । (रोन आककी
अवाज) बचैरी सवित्री बड़ी दुखी ऐ । इक ते सिरै दा साई नेई
रेहा ते उप्परा छे बच्चे न । जिमीं उस्सै दे नां करनी ऐ ।

बुड्डा—ते जेहँडा वाग ऐ ओ मेरे भतरिये कमल गी देई औडेआं । ओदा
धी किश हक्क बनदा ऐ ।

बुड्डी—नां जी तां, वाग ते में (डुसकियै) अपने भ्राऊ दे जतीम बच्चे गी
देना ऐ ।

बुड्डा—शाहनी ।

बुड्डी—जी ।

बुड्डा—इक गल्ल दस्स हां । मरा में करनां जां तूं । (कुसै दे औने दी
अवाज)

बुड्डी—फी लगी पे अं, न्सगनियां गल्लां करन । लैओ चुप करो । डाक्टर
साहू आई गे न ।

डाक्टर—केह, गल्ल ऐ शाह, जी ।

बुड्डा—हाय मरी गेआ । डाक्टर साहू भ मेरे प्राण लगे न निकलन, बचाई
लैओ । जियां जानदे ओ बचाई लैओ ।

डाक्टर—वाह, दस्सो नाड़ी दिक्खा ।

बुड्डा—हाय-हाय-हाय मेरिए माए ।

डाक्टर—शाह, जी तुस सेआने-ब्याने ओ । तुन्दे कोला केह, छपैल करनी

ऐ। जिन्हे वी इलाज हाई मकदे हैं करी बैठां। कोई दवाई-दाख
नेआ नेई जेहँडा में तुरंगी नेई दित्ता। घावरो नेई तां आखां।
हुन ऐन्त सम आई गैदा है

बुट्ठा—(तड़फियै) नेई-ग नेई शाखा। हाय मरी गेआ।

झहनी—(डुसकदी ऐ)।

डाक्टर—हुन तुमें परमात्मा दा नां लैना चाहीदा ऐ ते जे मनै च कोई
रड़क होऐ, कोई अन्तिम इच्छेआ होऐ……तां दस्सो। उसी पूरी
करने दा जतन करने आ।

बुट्ठा—(नैन-प्राण छोड़ी दिन्दा है। हाँली नेई वाजै च) केह आखेआ
अन्तिम इच्छेआ।

डाक्टर—हां-हां संकोच नेई करो। दस्सो केह ऐ तुन्दी अन्तिम इच्छेआ।

बुट्ठा—मिगी कुमै स्थाने डाक्टरै कोल लेई चलो। हाय………।

(संगीत दी लैहर)

प्रश्न-प्रध्याय

- नाटकै दा सिरलेख, अन्तिम इच्छेआ की रखेगा गेदा ऐ ?
- “अन्तिम इच्छेआ” एकांकी च केहड़ी समस्या गोहाड़ी गेदी अं ?
- एकांकी दे पातरे बारे अपने बचार प्रगट करो से दस्सो जे तुमेंगी केहड़ा
पातर मता चंगा नगा ऐ ते की ?
- ठीक वाक्ये उपर नशान लाओ [✓]
 - अपनी धीर्घ कनै गल्ल कथ करदे तुगी केह खन्दा ऐ ?
 - चलनेआं पर जाना कुत्थे ऐ ?
 - पपू नै आखेआ ओदि पिता दा ते काल नेई होआ।
 - हुन तुमें परमात्मा दा नां लैना चाहिदा ।

भाषा-प्रध्याय

- (क) खल्ल दित्ते दे मुहावरें ते खोआन दा अर्थ स्पष्ट करो ते वाक्यों च प्रयोग
करो।

କବିତା ପ୍ରକାଶକ ହାସ ନ ଲେଖୁ ପରି ହିନ୍ଦି ଜାନାଯାଇଥି କାହାର ଜାଗତକ ଲାଭ

| ମାତ୍ରକ

—: ମାନ ମଧ୍ୟବିନୀ ରଚଣାଙ୍କ ଫିଲି ଠିକ୍ (୩)

ରକ୍ଷଣ—ପ୍ରକାଶକ

ଭାଷା/ପ —ମାତ୍ରକ

ମାତ୍ରକିଳି —ମଧ୍ୟବିନୀ

ମଧ୍ୟବିନୀ —ମାତ୍ରକିଳି

କରନ —ମାତ୍ରକ

ମାତ୍ରକିଳି —ମାତ୍ରକ

ମାତ୍ରକ ମଧ୍ୟବିନୀ—ମାତ୍ରକିଳି

ମାତ୍ରକ-ମଧ୍ୟବିନୀ

ମଧ୍ୟବିନୀ ଜୀବ ଉତ୍ସାହ, ଅର୍ଥକା-ହିତମ, ଶିକ୍ଷା ହାତ ପାହା କମାଇବ ନିଷ୍ଠା . ।

। ଏକ ମଧ୍ୟବିନୀ ମାତ୍ରକିଳି ହାତ ପାହା

। ଛିଲି ନ ମଧ୍ୟବିନୀ ମଧ୍ୟବିନୀ ମଧ୍ୟବିନୀ ମଧ୍ୟବିନୀ ମଧ୍ୟବିନୀ ମଧ୍ୟବିନୀ

ओम गोस्वामी [सन् १९४७]

श्री ओम गोस्वामी होर पैहे ले हिन्दी च लिखदे हे । डोगरी च इन्हे वै कहानी संपैह, “हाशिए दें नोट्स”, “नैह, ते पोटे”, “ते न्हेरे दा समुन्दर” ते इक बाल एकांकी संपैह, प्रकाशित होए दे थे । डोगरी च इने “अम्बर” ना कल्न इक पत्रिका दे वी किश अंक सम्पादित कीते । अज्ञकज एह रियास्ती कल्वरल अकैडमी च डोगरी प्रकाशने दे प्रडीटर न ।

घर-धर

पात्र

रानो : अट्ठ वरे
 कालो : अट्ठ वरे
 बबलू : पञ्ज वरे
 रमेश : सत्त वरे
 नानू : वरेस पैठ वरे

[रानो ते बबलू गुल्ली-डंडा खेडा करदे न]

बबलू—अज्ज में तेरी पिट्ठी भखाई देनी ऐ ।

रानो—आं, मल्ला गल्ले कन्ने ।

बबलू—[लापा लाइयै] ओ गेई आ ।

रानो—कुत्ये गेई ऐ ? ए हां सामने पेदी । मेरी वारी औन दे । दिक्खेआं इयां जाग गुल्ली जियां चिड़ी उड़ुरदी ऐ । गुल्ली चुकियै पेटे पर डंडा फुटी उड़दी ऐ । दिक्खेआ ।

बबलू—अच्छा, तां के होआ । लेई लै वारी ।

रानो—[गुल्ली गी सट्ट मारिये उप्पर चुकदी ऐ ते टोल्ले कड्ढन लगदी

ऐ] इक, दो, त्री, चार ते लै उहुरी आ चिड़ी [खिचवये लापा
मारदी ऐ, पर बबलू पुड़छी सैंदा ऐ।]

बबलू—[जोरें करने] कैच ! कैच !!

रानो—असें म्हाराज कैच रक्खे दा गै नेई ।

बबलू—जिसलै तूं कैच करी लैन्नी हुन्नी एं तां रक्खे दा होंदा ऐ, नेई ते
रक्खे दा गै नेई ।

रानो—अस नेई रोंद पान्दे होंदे । जेकर कैच रक्खना होऐ तां खेड शुरू
करने कोला पैह ले आखना पाँदा ऐ ।

बबलू—चंगा बहुये बेब्बे ! जो तूं गलाएं ओ ठीक ।

रानो—तां मेरा इक जागा बनी गेआ ।

बबलू—किया । जगान पञ्जे टोलें दा रक्खे दा ऐ ।

रानो—चार टोल्ले में गिने हे ते पंजमां लापा नेई हा के लाया ?

बबलू—नेई भई, तां पंजमा टोल्ला थोहड़ा होआ ।

रानो—होआ कियां नेई ?

बबलू—रोंद पागी तां में नई खेड़ना ।

रानो—खेडगा नेई तां जागा कृत्यें ? मेरी बारी भगताइये जायां मल्लू नेई
ते कुट्ट खाइये खेडना पौग ।

बबलू—साला जी दा घर ते ऐ नां ।

रानो—केह आखेआ ? [कफ कुञ्जिये]

बबलू—अच्छा-अच्छा मारेयां नेई ।

[कालो औंदी ऐ]

रानो—कालो तूं जागा लाना ई ?

कालो—नेई भ्राविये, तूं ऐं खेड जागतें आलियां खेड़ां ।

रानो—ए जागतें आली खेड ऐ ।

कालो—ते होर कुड़ियें दी खेड ऐ ?

रानो—तुगी वडी पता जेहँडा खेडँडे उस्सै दी खेड । बाजी आखदे न
जेहँडा वरती लै उस्सै दी बस्त होंदी ऐ ।

कालो—कियां ?

रानो—जियां कोई छतरी होऐ । छतरी अपने आपै च जनाना मर्दाना
थोड़ी होंदी ऐ । ओह, वरतने आली चीज ऐ । उसी भाएं बहु
वरती लै निकका वरती लै, मर्द वरती लै, जनानी वरती लै ।

बबलू—ए गलते सच्ची आखी । शुकर ऐ तेरे च वी इन्ना दमाक ऐ ।

कालो—चलो ठीक सेई पर जेकर कोई आदमी अपनी चीज कुसै दुए कोल
वन्दे पाई रखते तां केहओ रखने आले दी गै होई जाग ? जेकर
तेरा कुर्ता में पाई लै तां ओहमेरां होई जाग ?

रानो—तेरा कियां होग ?

कालो—मैं जे वरती लेगां ।

रानो—मेरी भाई ने दिक्खी लेआ तां भट्ट खुलाई नेई लैग । कन्तै तू ऐमे
जानी धफड़ खागी ।

कालो—बहु आई तेरी भाई ।

रानो—गाली मुआलीं नि करेयां ।

बबलू—हां, भई बड़े गी नेई विच्च छूको ।

कालो—[स्वांग लांदे होई] अजें आखदी ऐ कालो अस भैनां आ ! आ
कालो खैड़चै [स्वांग लान्दी ऐ]

बबलू—[दौनें दी लड़ाई दा फंदा हुआंदे होई] बतालवी भैनां !

रानो—तेरे कोला केहू लेई लेआ ऐ ?

बबलू—[चेता करिए] रपे ! रक्खड़ी बन्नने दे दो रपे नेई है ले ?

रानो—मठई नेई ही खाददी क तूं ?

बबलू—केहूड़ी मुख्त खादी ही । पैसे दित्ते हे दो रपे । बजारा दा दों रपे
दी किन्नी बड़ी मिलदी ऐ ।

रानो—तां रक्खड़ी बी बजारा दा बन्हाई लैनी ही । कन्नै भूठेआ तूं उन्हें
रपे दियां गुहुयां ते मांजा डोर नेई हा लेई गाया ?

कालो—बड़ा झूठ बोलना ऐ तूं ।

बबलू—में म्हेशां सच्च बोलनां ते झूठ मारना । झूठे गी शामके कन्नै
मारनां ।

रानो—तां गै रोज कल्प पगड़ोंदे न स्कूल ।

बबलू—ओ ! ओ ते में इयां गै कलासा च हासा पाने आस्तै पगड़ना हुन्नां ।
इक जागत ऐ ओ शुक्करवारें मीटिंग च गाने गान्दा ऐ । दूश्रा
कवता सनांदा ऐ । त्रीया चुटकले बोलदा ऐ । इक होर जानवरें
दियां बोलियां बोलदा ऐ । सब किश नां किश करदे न ।

रानो—छड़ा तूं गै भुड्डू बने दा रौहनां ।

बबलू—ऊं ! में म्हाराज कदें कुककड़, कदें ज्हाज बननां कदें मोर ते कदें...

रानो—वस……वस होर जागत ते शुक्करवारें करदे न व तूं रोज ज्हाज
जां कुककड़ बने दा हुन्नां ।

बबलू—तुन्दी अकल मुट्ठी ऐ…………तुसेंगी किश समझा नेई औंदा ।
बोहजे विच्चा चिंगम कडिछयै चापन लगदा ऐ ।

रानो—मिगी बी दे ।

बबलू—नेई भैने तूं साढ़े कन्नै भाईबाली पाइयै मनुकत नेई बना अस ते
ज्हाज गै खरे ।

रानो—चंगा हुन्दा मेरा बीर । दे की में तुगी बी देंग ।

बबलू—तां पैह ले ग्रास-बबलू जी-म्हाराज जी । होर जी, में छन्दे करनी पां, वास्ते पानी आं, तुन्दे अगे फरेआद करनी आं, यिगी मेरे मन्दे लफज परताई देओ । कन्ने चिंगम दा दान देबो म्हाराज…… तुन्दी बड़ी किरणा होग ।

कालो—[हसदे होई] आखी दे रानो ।

रानो—ऐमें ग्राखी देप्रां । मक्कड़ लेआ । जे चिंगम नेहं देना तां मेरी बारी ते जागा दे ।

बबलू—तेरा ओ स्हाव ऐ जियां वान्दर बन्दे गी आखदा डरांदा हा…… लै मिगी ढोल खोई दे…… लै मिगी भखीर आनी दे…… नेई करना तां कड़ भेरी छोलें माएं दी दाल ।

रानो—भखीले कन्ने भखील रेहा, मल्लू जी बारी देओ । [उसदे बोह जे च पेदे चिंगम अल्ल हाम्बदी ऐ ।]

कालो—में भदद करां रानो । लुट्टो लैओ इसदा सारा चिंगम ।

बबलू—लुट्टी लैओ भखील ते पेदा ऐ…… कालिए कसूटिए…… जंगला दिए दूटिए…… भगड़े दिए दूटिए……

कालो—केह आखेआ कपफना ?

बबलू—कालका माता ।

कालो—तूं केह एं भैरो ? ओ पता माता सी शक्ति कन्ने गै भरेआ हा । दर्मे कुडियां बबलू दे यनार द्वौर्धिया न ।

बबलू—तां नेई लब्भा अज्ज चिंगम ।

रानो—रौह न दे भडिए, अस कोई चिंगम दे भुक्से आं । जिसलै साहे कीस पैसे होडन तां अस बी इसी दस्सी-दस्सिए लागे । [रमेश औंदा ऐ]

रमेश—कालो ! घरा दा कम्म मकाई आई एं के ?

कालो—कोकड़ा कम्म ? आगा ई इक होर बुड़ा ।

रमेश—दिक्ष मे अपना सबक मकाइये स्कूला दा कम्म करिए खेड
आयां । तूं ते वस्ता ब्रटेआ ते निकली आई ।

कालो—होर के करदी ।

रमेश—पढ़दी लिखदी००० सबक घोटवी ।

कालो—असेंगी बिना घोटे चेता होई जन्दा ऐ ।

रमेश—तां भाई दी मदद करदी । प्राटा छानी दिन्दी । न्हारी फेरी उड़दी
.....दाल ताली दिन्दीकम्म करदे आदमी घस्सी
नैई जन्दा ।

बबलू—छोड़ यार कनेहिंवाँ बुड़दें आलियां गल्लां करा करना ऐ ।

रानो—ग्रामी अस घर-घर लेडने आं ।

कालो—रमेश तूं बुड़ा नानू बनेयां ।

रमेश—सरा रानो तूं चाचा ते बबलू चाचू बनग ।

बबलू—मैं नैई बनदा चाचू ।

रानो—की ?

बबलू—चाचू ढींगा मूँह करिए गल्लां करदा ऐ । कुर्तै उसने स्वांग लांदे
दिक्षी लेआ तां जान-खैर नैई ।

रमेश—अच्छा की तातो बनी जा ।

रानो—उथां असें कोई सच्चे-मुच्चे थोड़ा बनी जाना ऐ ।

कालो—मैं पिकी बननी आं । ठीक ऐ ।

सब—ठीक ऐ, शुरू करो ।

रमेश—बुड़ों आगर लांगदा ऐ । खूः खूः कुत्यै मरी गे न सारे ? खूः खूः ।

तातो—अस इथे आं नानू । इद्धर आई जाओ ।

नानू—[कम्बदी वाज] इद्धर आई जाओ । [व्यंग] इन्दे जियां जोऽ
जुड़े दे न ।

चाची—नानू सारे जने कम्म लगे दे न ।

नानू—कम्म केह खनेई च लगे दे न ? उट्ठये इद्धर नेई औन हुन्वा ?
पिकी कुत्थें ऐ ?

तातो—होनी बाहर कुतै ।

नानू—होनी कुतै । तुसें रोली उड़ने ब्रयाणे ।

चाची—नानू जी गुहियां पटोले खेड़े करदी होग ।

नानू—दिक्खो जी साढा जमाना हा अस घरा दा बाहर गै नेहं हे दिन्दे ।
मावां इस्से सालें तगर अपने ब्रयाणे गी बाहरा दी हवा नेई हियां
लगन दिदियां । हून अम्बड़ियां गै बैरी होई गेदियां न ।

चाची—नानू ब्रयाणे घर खड़ोदे गै नेहं । कोई केह करे ?

नानू—तुसें सोफे परा उट्ठना नेई होआ । उन्दे कन्ने बोलने चालने दा
टैम बी नेई । इस्से उमरी च ब्रयाणे गी सिक्ख मत देनी होंदी ऐ ।

चाची—गुहियां पटोले बी ते इस्से उमरी च खेड़दे न । कहूं तुन्दी उमरी
उनें एकड़े कम्म करने न ।

तातो—इंगोरी दिन्लां नानू । बाहर फिरी आओ ।

नानू—तुस लोक अपने सामने बच्चे बुड्ढे गी ते दिक्खी नेहं सखान्दे ।
साढा जमाना हा तां………[दौड़दी पिकी उठी छाँदी ऐ ते नानू
कन्ने पलचोई जन्दी ऐ]

नाजू—दिक्खें रेंडका खल्ल डगांदी ऐ । निकके होंदे हे अस तां बड्डे
कोला दस हत्थ दूर राहंद हे । उन्दा आदरमान करदे हे………हून
उर बाहर ते ऐ गै नेई । लै कुड़िये । मिगी मेरी ऐनक, सोटी ते
रमाल फगड़ा ।

पिकी—नानू सोटी ऐनक ते हैण पर रमाल घोइयै नपीड़दे, भाई कोला
फटी गेआ हा ।

तातो—[भट चाची गी बचाने आस्ते] बड़ियां घटिया चीजां नानूं अीन
लगी पेइयां न मारकट च ।

नानू—साड़े जमाने च इक रमाल ली पूरी उमर हुंडवा हा । पैहे दे दर्जन
रमाल औने । भेले च जाना इक अपने गले कले बन्नी लैना ते
बाकी दे बेची उड़ने । क्या सस्ते जमाने हे । जोकी दुनिया गी अग्न
लगी गेई..... कंदघे दे पिछ्छुआं इक परछामां पीदा ए । चारै
घर-घर खेड़दे भ्राई जन्दे न]
(परछामे दी बुआज : कम्बदी सुरं च) ए कुन ऐ मौती मुआ
भंडस्वांगिया ?

कालो—नट्ठो असली नानू आई गेआ ऐ-झौड़ो ।

सध्मै—नट्ठो नट्ठो नट्ठो ।

असली नानू—[सामने आइयै] ठेहरो कप्फनो, ठेहरो मरने जोहड़ियो,
तुन्दा लक्क भन्नां ।
[असली नानू सोटी गूरियै उन्दे मगर द्वौड़वा ए । सध्मै
गोल दायरा जन बनाइयै हसदे-हसदे द्वौड़दे रीहन्दे न ।]

[पर्दा डिगंदा ए]

प्रश्न अभ्यास

1. घर-घर खेडना तुसेंगी कनेहा लगदा ए ? एदे बारै अपने बचार प्रगट करो ।
2. रानो ते कालो दी लड़ाई की हुन्दी ए ?
3. घर-घर खेड़दे बेलं रमेश ते बबलू केह-केह बन्दे न ?
4. असली नानू कुन हा ते ओदे शा सारे की चाही ग ?
5. ठीक वाक्ये पर [✓] नशानी लावो :—

[1] इयां जाग गुल्ली जियां चिड़ी उहरती ए ।

[2] जेकर मैच रखना होए तां खेड शुरू करने दे बाद आसना पीदा ए ।

[3] जगान पञ्जें टोल्लें दा रखें दा ए ।

[4] चुकर ऐ तेरे च वी इन्ना दमाक नेहै ऐ ।

[5] तुन्ही अकल पतली ऐ किश समझा नेहैं बीदा ।

भासा-बध्यायन

[क] बल्ल दिते दे शब्दे दे अर्थ दस्सो ते बाकये च प्रयोग करो :—

पर-वैर, गुल्ली-डंडा, रोंद, घफ़ड़, बाजी, स्वांग, गाली-मुवालीं, खनेहै, बाह, हंडना, गूरना ।

[ख] खाली याहरे च संज्ञा शब्द भरो :—

[1] बज्ज में तेरी.....भखाहै देनी ऐ ।

[2] बस नेहै.....पांदे होंदे ।

[3] बाबो बस.....सेडने बां ।

[4] रमेश तू.....बनेबां ।

[5]डींगा मूह करियै गल्लां करदा ऐ ।

ज्ञान-वैष्णवी

1. अपने बध्यापक कोला जागते ते कुड़ियें दियें बेड़डें दे बारे च ज्ञान हासल करो ।

2. बेड़डों सेहतु लेहै की जस्ती होंदियां न ते इन्दे कैहूँ कायदे न ? इस बारे बध्यापक कशा जानकरी भैहण करो ।

कठिन शब्दें वे अर्थ

कंठिया दा बस्सना

सफा—५ डंगर = माल-बच्छा, ओह = सबा मील दा फासला, ढक्किया = ढक्की, बछरेटे = निकेनिके कट्ठू-बच्छू, घस्सना = पीहना; ग्लाना = आखना; कच्च = आँखला, बुरा; बस्सना = रौहना; राखी करना = दिक्खभाल करनी।

हुगार ते डोगरी

सफा—७ तेगां-भाले = हथ्यार; दमामें = नगाड़े; गेल्ली = नौकरेआनी, सूरबीर = ब्हादर, जोध; रणधीर = सूरमें; शरीर = काया, देह; रंक = फकीर, गरीब-गुरवे; थनें दा सीर = दुदू; खजाना = खजाना, दबोटी; बडाई = इज्जत-मान; नाम-नशान = ना-नशान; खान = कान; मिटना = खत्म होना।

दालती दा धंदा

सफा—९ कंगताल करी देना = गरीब करी देना; सुड़ी जाना = सड़ी जाना, भुजना = सड़ना-कुड़ना, कच्चे थाहर जाना = बुरी जगह जाना; चुड़ी जाना = पड़ी जाना।

सुरग देस

सफा—११ सुरग = स्वर्ग, बकुण्ठ; खारा = बहु टोकरा, त्रैलोकी = त्रैलोकें दा समूह, बलकार = बीर-ब्हादुर; ज्ञानी = ज्ञान आले; गुणी = गुणें आले, तीर्थ = धार्मिक जगहां; जोत = ज्ञान रूपी दीया; मुक्ति = मुक्ति-मोक्ष, छल्ल = लैहरां।

परदेस

सफा—13 परदेस=पराया देस; कैन्त=घरे आला, खसम; श्रीखी-आरी=मसीबत; ठेस=ठोकर; त्यागना=तज्जना, जां छोड़ना; देस द्रोही=देस दी भलाई हे बक्कु चलने आला; चाकर-चौर=चोरियां करने आला, चूग=दाना; सम्बना=मुक्कना; पैंछी=पक्षवृक्ष-पत्तेल; रण-खारे=जोधे; सत्यर=धा-पत्तर दा बछुन; धुञ्जा=जमीना पर; कलेश=दुक्ष; मीना=मछली, प्राण=जान; तंगी-तुरकी=गरीबी, प्ररज=बिनती।

आजू ऐ थोहड़ी ते कम्म बत्हेरे

सफा—15 अतरूं=परमूं; घनेरे=घने; डेरा कूच होना=सुरं सधारी जाना; चबक्की=चौम्मे पास्सै; तलोफना=तुप्पना; धक्कल=बुद्धि।

पहाड़े ते नदिएं दा देस

सफा—17 रींग=कतार, पंक्ति; आले=बुआजां, सद्वां, बज्झोऐ=सेही होऐ जां समझा आयै; नाग=सप्य; सदियां=कई सौ साल; नथोए दे=बज्झे दे; सीना=चाती; रकड़=पथरीली; रींस=रीस जां रौनक; धारां=पहाड़े दियां ढलानां; लाड=प्यार; भासी=पन्छाती; अनथक्क=नेई थकने आले; हाम्बी लैना=उबड़े होइयै फकड़ना।

सम्मासब

सफा—19 बासना=खशबो, सगन्धी; जन्न=पत्थर, ढीम; लौरा=अग्नी दा भवका; गुहाड़=छलैपा; भाल=लम्मी सुरै च गाये जाने आला डोगरी लोक गीत; दिव्ब=अद्भुत, सुरगी; पस्तरें दा बास=परियें दा बास; रास=राशि; धड़=जखम; बत्त=रस्ता।

मेरे देसे दा शलैपा मेरी अवखीं कन्नै दिल्लव

सफा—22 तानी=तकर; रींस=जंगले दा छलैपा; बसोना=बसां करनी; सुहाना=सुहावना, रींसला; कंगार=किंगरे; छुम्ब=सुम्ब, पानी दा

निकलना; राही = राह-राहन्हु; हिट्ठ = हेठ; मुरामुरै च; ताई =
इस पास्से; चन्न = चन्नमा; मसूरतां = [इ] शारे; अक्षर = प्रक्षर;
प्राण = जान; जल्ली = बहू; मुंडा दी = शुरू दी जां परानी।

प्रीत

सफा — 25 डबरा = डूगे पनियां च; डार = पंगत; भकोले = डोलके; हाली = हल
बाहने आला; जोग = बैले दी जोड़ी; सीं = स्याढ़; सीर = पानी;
तांग = चाह; नमोशी = शर्मिन्दगी; छलिया = धोखेबाज।

बमी अजादिये

सफा — 29 कनियां = पानी दियां फुंगां; सब्जा = हरयाली; साड़ियां = उच्चे मकान,
सने = मिट्टी नै भरोवे दे; आरती = पूजा दी थाली; मैहफलां = बैठकां,
गोष्ठियां।

हत फुल्लां री आई

सफा — 31 पूला = पीला; चादर = दबट्टा; फुल्लांरी = फुले दी; तड़के = बड़लैं-
बड़लैं; ढोलरुआ = ढोलकी पर; सिद्धू = संदोने; अडिजंग = बदले दी
गर्जन; अम्बड़ी = मां; दिलहू = दिल; बूट्ठू = बूटे।

भरम

सफा — 33 वीरता = ब्हादरी; भलखोए = शर्मिन्दा होए; अमन = शान्ति, ऐमनी;
खेत = शरारत; तुक्खनी, छेड़खानी; अलबेलडे = मस्ताने, बैरी =
दुइमन; दोखी = दुख करने आले, बैगैरता = बेजती दा, बङ्गारेआ =
ललकारेआ; दागी = दागी, दोस्पूर्ण; फरेब = धोखा।

मेरा मंदा कियां बुजझो

सफा — 35 छलैपा = सुन्दरता, खूबसूरती; मंदा = बजोग, दोओसी; पुरै दी = पूर्व
दिशा दी; लोरियां = बच्चे गी सोआलने आले गीत; किगरे = प्हानै
दीशां टीसियां; नित्यरे दे = साफ सुथरे पानी पाने; सर = सरोबर-

धरोइ=शੰਨ ਕਰਿਧੀ; ਬਾਸਨਾ=ਖ਼ਤਬੂ, ਟਿੜ੍ਹ=ਉਚੀ ਪਹਾੜੀ; ਛੌਰੇ=ਪਰਥਾਮੇ; ਮਰੀਦਾ=ਵਾਹਿੰ ਗੀ ਪਾਨੇ ਆਲਾ ਚਾਂਦੀ ਦਾ ਗੈਹਨਾ, ਬੋਕੇ - ਬਹੁ ਭੈਣ; ਗਿਲ੍ਹੂ - ਨਿਕੇ ਜਾਗਤ; ਹਾਂਵਨਾ = ਤਵਡੇ ਹੋਇਏ ਕੁਸੇ ਚੀਜੀ ਗੀ ਫਗ਼ਨਾ; ਛੱਡਾ - ਬੁਕਕ; ਹੈਨਕੰ = ਆਹ, ਭਰਨਾ, ਛਿਲਡੂ = ਬਕਕਰੀ ਦਾ ਨਿਕਕਾ ਬਚਚਾ; ਇਨਤਯਾਰੀ = ਨਿਹਾਲਾਪ; ਆਂਸੀ = ਧਰਤੀ ਪਰ ਖਿਚਚੀ ਦੀ ਕਾਹੜ; ਪਰੋਲੀ = ਵਰਾਂਡਾ।

ਬਦਲੀ

ਸ੍ਰਕਾ—37 ਨੀਮੇ ਹੋਨਾ = ਝੁਕਨਾ; ਅਪਨਾ-ਆਪ ਲਟਾਨਾ = ਅਪਨਾ ਸ਼ਬ ਕਿਸ਼ ਵੇਈ - ਓਡਨਾ; ਮੀਤੀ ਡੋਲਨਾ = ਬਰਖਾ ਬਰਨਾ; ਗੋਦ ਬਧਾਨਾ = ਮੰਗਨਾ; ਕਦਰ ਗੁਅਨੀ = ਵੇਜਤੀ ਕਰਾਨੀ।

ਲਾਮਾ ਫੇਰੇ

ਸ੍ਰਕਾ—49 ਦਿਲਗੀਰ = ਦੋਆਸ; ਭਾਗਲੀ ਭਾਗੇ ਆਲੀ; ਚੰਗੇ = ਫੁਲੇ ਆਲੀ ਛਾਬੜੀ; ਸਾਹਨਾ = ਪ੍ਰਸ਼ਾਸਾ, ਤਾਰੀਫ; ਦੇਹ = ਸ਼ਰੀਰ; ਸੁਰਤੀ = ਚੇਤਾ; ਭੱਤਕਨਾ = ਸ਼ਰਮ ਕਰਨੀ; ਪਾਂਝੀ = ਪਾਂਝੀ; ਗੁਲਾਬੀ; ਬਨਧਨ ਮਜ਼ਬੂਰੀ; ਭਲੋਕੇ = ਭੋਲੇ; ਲਾਜ = ਸ਼ਰਮ; ਫਾਈ = ਬਨਧਨ, ਘੂੜ-ਮਹੂੜੀ = ਫਿਕਕੀ-ਫਿਕਕੀ; ਜਚਨਾ ਸ਼ੰਨ ਲਗਨਾ; ਸਵਰ = ਸਵਰ, ਫਰੰ = ਕਰੰਬ; ਲਘ੍ਵਾਂ ਲਾਨਾ = ਅਗਲਾ ਲਾਨਾ; ਬਲਵਾਨ = ਜੋਰੇ ਆਲਾ; ਤਕਦੀਰ = ਕਿਸਮਤ, ਨਸੀਬ, ਭਾਗ।

ਗਰਸਾਲ ਕੋਠੀ

ਸ੍ਰਕਾ—43 ਮਣਕਰੀ ਟਿਚਕਰ, ਮਜਾਕ; ਗਰੜ - ਮਰਡੇ = ਚਿਟ੍ਟੇ ਕਾਲੇ ਵਾਲ; ਖਣ੍ਣ-ਮਿਟ੍ਟੇ = ਰਲੇ ਮਿਨੇ; ਹਲਾਹਲ = ਜੈਹੜ; ਸੁਲਫਾ = ਤਮਾਕੂ ਦੀ ਕੀਡੀ ਕਿਸਮ; ਬਚਚੀਬਨਹ-ਤਮਾਕੂ ਬਡਾ ਗੇ ਤੇਜ ਤਮਾਕੂ ਜੇਵੇ ਕਨੇ ਆਦਮੀ ਨਨੇ ਚ ਚੂਰ ਹੋਇਧੇ ਸੁਧ-ਬੁਧ ਖੋਈ ਓਡਦਾ ਏ; ਦਮੇਲ = ਵੌਂ ਚੀਜ਼ਾਂ ਦਾ ਮੇਲ; ਅਦਮਪਤੇ = ਅਨਜਾਨੇ; ਸਟਲਾ - ਬਾਂਹ, ਤੁਚਚੀ ਕਰਿਧੀ ਕਿਸ਼ ਆਕਖਨਾ; ਕੇਸਰੀ ਵਿਜਧਾ = ਕੇਸਰ, ਬਦਾਮ ਤੇ ਚਾਰ ਮਗਜੇਂ ਆਲੀ ਘੋਟੀ ਦੀ ਭੰਗ; ਆਬ = ਪਾਨੀ; ਮਜਲਸ ਲਗਨਾ = ਲੋਕੇ ਦਾ ਕਿਟਠੇ ਹੋਇਧੈ ਬੌਹਨਾ; ਅਡੱਬੀ ਲੈਨਾ = ਵਾਸੇ ਕਨੇ ਖਿਚਚੀ ਲੈਨਾ; ਨੀਲਾ ਸਰਵਲ = ਗੂੜੇ ਨੀਲੇ ਰੰਗੇ ਦਾ; ਸੂਰਮਾ = ਬਾਦਰ।

समाचार-पत्र

सफा—58 फेरेगाद करना = परज करना, बिनती करना; बित्ती-ताना = मायूस जां निम्भोभान होइयै बौहना, फिरना, सबब्बन = चानचक जां ब्हाने पिच्छे; मोलबर = प्रमुख, सब्बने च बहु; छप्पड = ओ डूंगा थाहर जित्ये बरखा दा पानीखके दा होइयै, गुजर = गुजारा।

मंगते दा घराट

सफा—65 घराट = पानी कन्ने चलने आली मशीन जित्ये आटा बगैरा पीहदें न; बरैकड़ = इक प्रकार दा कीड़ पतरें आला बूहटा, चोई = ओ थाहर जित्यें पानी रुके दा होऐ। छकाना = छेड़ना; तरारा = गुस्सा, मता रोहे।

की फुल्ल बनी गे डारे

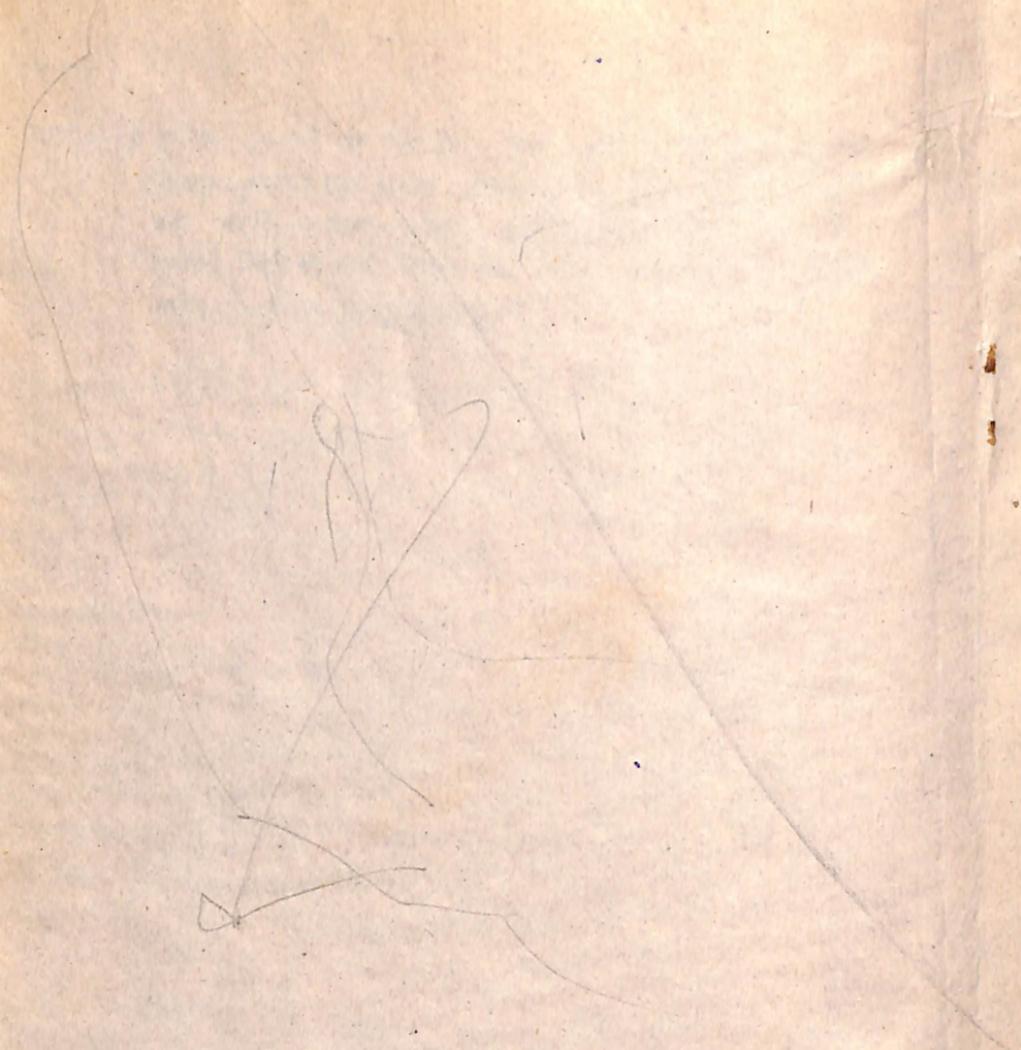
सफा—68 सज्जी = इक किस्मा दी सोआह.; सलेटी = चूहा रंग; न्हेरी चूक = ओह नुककर जित्ये न्हेरा होइयै, पुआणा = नगे पैरें; सम्भी जाना = मुक्की जाना; खराक = गिजा; बतङ्गड़ = बेवकूफ; खचरा = प्लेसे आला; मुश्कल, तुकबंदी = कवता गंडनी, फलौनी = बभारत; गड़ाका = जोरे दी हस्सना; खलदर = खलदरा, तारपीन, गन्दा बरोजा, फरीलना = अग्गे पिच्छे करियै तुप्पना; खुरद-बुरद = इधर-उधर अग्गे पिच्छे होना; गोआचना; आसरमां = स्हारा; लचार = किसे चीजे थमां धुड़ना जां मायूस होना; अरड़ = जोरें दा रोना; मजूरी = मजदूरी।

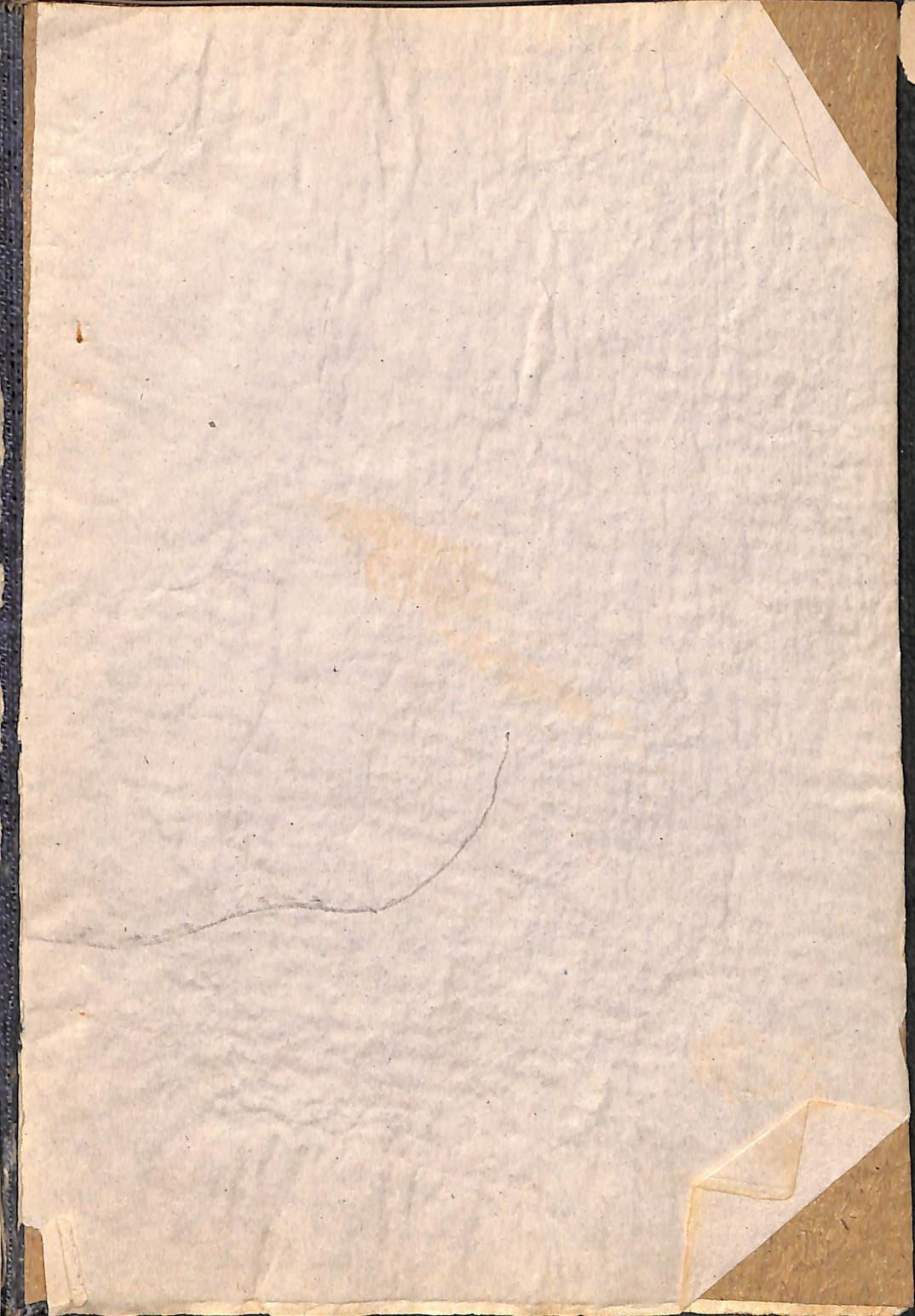
अन्तिम इच्छेया

सफा—77 सूल उट्ठना = ढिहै च जोरें दी पीड़ उट्ठनी; पटाका ठोआलना = अहाका कड़हना, मारना; राड़ बराड़ियां गल्लां करना = बेधवियां गल्लां करना; होनी दे पैर पुट्ठे = होनहार बचित्तर ऐ।

घर-घर

सफा— 84 घर-घर= अ्याणे दी इक सेड; गुल्ली डंडा= जागतें दी इक सेड;
रोंद पुना= भगड़ा खड़ा करना; घफड़ = चण्ड, चप्पेड; बाजी = सेडे दी
इक वारी; स्वांग = नकल; गाली-मुहाली = चंगी-माड़ी-माखना;
खनई = भिट्ठी दी खान; त्राह = डर, त्रहाका; हंडना = चलना, बढ़ना;
नपीड़ना = नचोड़ना, गूरना = धूरना।





© ALL RIGHTS RESERVED



Price :- 4/50

1989.

Rs. 00/-

Published by :

The Secretary

The Jammu & Kashmir State Board of School Education

Printed at "LSS LSS Offset Press"

Jammu.